काली मिट्टी

अंतर्भारतीय पुस्तकमाला

काली मिट्टी

पालगुम्मि पद्मराजु

अनुवाद

आरिगपूडि रमेश चौधरी

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

ISBN 81-237-2265-6

पहला संस्करण : 1985 (शक 1907)
पहली आवृत्ति : 1998 (शक 1919)

Original title : Nulla Regadi (*Telugu*)
Translation : Kali Mitti (*Hindi*)
रू. 26.00
निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया,
ए-5 ग्रीन पार्क, नयी दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित

भूमिका

उन्नीसवीं शताब्दी के मध्यम वर्ग के अंग्रेज परिवारों में उपन्यास वाचन दिनचर्या का आवश्यक अंग था। घर की बड़ी लड़की या दूसरा लड़का उपन्यास पढ़ने लगता तो घर के सभी सदस्य चारों तरफ बैठकर ध्यान से सुनते। उस समय आज की तरह फिल्म-रेडियो आदि नहीं थे। नाटक तो खेले जाते थे, पर वे मध्यम वर्ग के लोगों की पहुंच से बाहर होते थे। जिन लोगों की पहुंच में ये होते थे, उनके लिए भी रोज नाटक देखने जाना संभव नहीं था। इसलिए पुस्तक वाचन से उनका ज्ञानवर्द्धन भी होता था और मनोरंजन भी।

सर वाल्टर स्काट के उपन्यास ऐतिहासिक होते थे तो चार्ल्स डिकेंस की रचनाओं में सामाजिक जीवन प्रतिबिंबित हुआ करता था। शुरू-शुरू में उपन्यास की रचना ऐतिहासिक और सामाजिक दो ही प्रकार की हुआ करती थी। धीरे-धीरे सामाजिक उपन्यास से रोमानी उपन्यास का प्रादुर्भाव हुआ। इसके भी दो भेद हुए– अनुराग या प्रेम आधारित और वैज्ञानिक रोमांस आधारित। घटनाक्रम से कहानी को आगे बढ़ाते थे गाल्सवर्दी। जोसफ कानराड गांठ पर गांठ बांधते चले जाते थे और फिर एक-एक करके उनको सुलझा देते थे। प्रेम की लालसा में दौड़ लगाकर पलट जाने की घटनाओं को दयनीय ढंग से दिखाते थे थामस हार्डी। भविष्य में बसे हुए अद्‌भुत जगत में सफर कराने वाले लेखक थे एच. जी. वेल्स।

अंग्रेजी के उपन्यास साहित्य में डी. एच. लारेंस की एक क्रांतिकारी भूमिका है। उस समय तक यह साहित्यिक विधा एक परंपरागत कल्पना से बंधी हुई होती थी। लारेंस का कथन था कि बाह्य जगत से अपने रागात्मक संबंध को स्पष्ट करना ही कलाकार का उद्देश्य है और इसी में कला की सार्थकता है। समसामयिक गतिविधियों का किसी व्यक्ति के द्वारा अपने दृष्टिकोण से चित्रण किया जाना ही जब कला का रूप धारण करने लगा तो उपन्यास की रचना-प्रक्रिया में बहुत बड़ा परिवर्तन आ गया। काल्पनिक साहित्य में कल्पना चाहे कितनी भी प्रचुर मात्रा में हो, जब तक वह वास्तविकता से जुड़ी हुई न हो तब तक वह रचना रमणीय नहीं हो सकती।

यूरोप और इंगलैंड में जिस उपन्यास साहित्य ने अपनी विजय-पताका फहरायी थी, उसने अमरीका में एक विशिष्ट स्थान प्राप्त कर लिया है। अमरीका में उपन्यास-सम्राट एक-दो नहीं, बीस-पच्चीस से अधिक की संख्या तक गिने जा सकते हैं। जेम्स कूपर, नेथानियल हाथॉरन, हेनरी जेम्स, मार्क ट्वेन, स्टीफेन क्रेन, जाक लंडन, विलगा कैथर, शेरवुड याडर्सन, सिक्लेर लूई, अर्नेस्ट हेमिंग्वे, थामस वुल्फ, विलियम फाकनर – ऐसे कई नाम गिने जा सकते हैं। इनमें प्रत्येक अपने-अपने मार्ग में उच्च शिखर पर पहुंचे थे।

छठी कक्षा तक पढ़ाई पूरी करके बीस साल का एक नवयुवक नाविक लेखक बनने का

पक्का इरादा कर लेता है। वर्तनी और वाक्य रचना से आरंभ करके वह दस साल में पहुंचा हुआ लेखक बन जाता है – साधारण लेखक नहीं, बल्कि साहित्य जगत की प्रशंसा-प्राप्त प्रख्यात लेखक बन जाता है। अपने उपन्यास को प्रकाशक के पास भेजते हुए वह तीन नाम सुझाते हैं। पहला नाम है – सक्सेस, दूसरा है – स्टार डस्ट, और तीसरा है – मार्टेन ईडेन। प्रकाशक अंतिम नाम को चुन लेते हैं। वही है आज लंडन का विश्व-विख्यात उपन्यास।

इसी प्रकार हेमिंग्वे अपना उपन्यास "ए फेअरवेल टु आर्म्स" पूरा कर लेते हैं। हेमिंग्वे की पत्नी सन् 1922 में उस उपन्यास की पांडुलिपि को अपने हैंड बैग में रखकर पेरिस में जा रही थी तो एक चोर को भ्रम होता है कि उसमें सोना-चांदी हैं और वह उसे चुरा लेता है। उस साहित्यकार ने इतनी मेहनत करके जो उपन्यास लिखा है, उसे किसी घर वाली ने अंगीठी जलाने के काम में नष्ट कर दिया होगा या वह किसी कूड़ेदान के रद्दी कागजों में शामिल हो गया होगा। छह वर्ष के बाद हेमिंग्वे वही उपन्यास दुबारा लिखते हैं। उस उपन्यास के प्रकाशन से उनको विश्व साहित्य में अभूतपूर्व ख्याति प्राप्त होती है।

वर्तमान शताब्दी के चौथे दशक में आंध्र विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित उपन्यास प्रतियोगिता में अंतिम विचार के समय तक तीन उपन्यास पहुंच गये — विश्वनाथ सत्यनारायण का "वेयिपडगलु" (सहस्रपण), अडवि बापिराजु का "नारायण राव" और गुडिपाटि वेंकटचलम् का "मैदान"। पहले दो पुरस्कृत हुए। इन दोनों के समकक्ष रखा जा सकता है – उन्नव लक्ष्मीनारायण का "मालपल्लि" (हरिजन बस्ती)। पाठकों को पढ़ने की सामग्री चाहिए और लेखिका का नाम देखकर उनकी जीभ ललचा जाती है। इसीलिए पत्र-पत्रिकाओं में अनेक उपन्यास धारावाहिक रूप में छप तो रहे हैं, पर सच पूछा जाये तो तेलुगु कहानी की तरह तेलुगु उपन्यास परिपक्व दशा पर पहुंच नहीं पाया। कुछ उपन्यास पढ़ते समय ऐसा लगता है कि लेखक ने यह उपन्यास शायद कोई फिल्म देखकर लिखा होगा या किसी फिल्म के लिए लिखा होगा।

वैसे तो तेलुगु उपन्यास को जन्म लिए आज लगभग एक शताब्दी हो रही है, गोल्डस्मिथ द्वारा रचित "विकार आफ वेकफील्ड" की याद दिलाने वाला कंदुकूरि वीरेशलिंगम् का "राजशेखर चरित्रम्" (1878) तेलुगु का प्रथम उपन्यास बताया जाता है। ब्रह्म समाज के प्रभाव से आंध्र के तटवर्ती (सरकारी) जिलों में स्त्री समाज के उद्धार और सुधार की भावना में वृद्धि हुई। राजशेखर तो जमींदारी मनोवृत्ति का व्यक्ति था, पर वीरेशलिंगम् ने अपनी रचना को सामाजिक चेतना को जाग्रत करने का साधन बना लिया था। उसके बाद आया तेलुगु का दूसरा उपन्यास "रामचंद्र विजयम्" (1894)। एक गरीब ब्राह्मण का लड़का अंग्रेजी शिक्षा पाकर नौकरी में तरक्की लेता है। यही इस उपन्यास का इतिवृत्त है। इसके बाद फिर पच्चीस वर्ष तक हमें कोई खास उपन्यास नहीं दिखायी देता। सन् 1919 में चिलकमूर्ति लक्ष्मी नरसिंहम् के "राजरत्नम्", श्रीमाद सुब्रह्मण्य शास्त्री की "आत्मबलि", वेंकट पार्वतीश युग्म के "मातृमंदिरम्" के प्रकाशन के साथ तेलुगु उपन्यास साहित्य में नयी चेतना की जागृति मानी जा सकती है। लेकिन अब तक ये पात्र समाज सुधार के समर्थन या खंडन को लेकर जीवित

रहे। गांधी जी ने सत्याग्रह का समर शंख बजाकर जनता को नयी दिशा प्रदान की तो वेलूरिशिवराम शास्त्री का "औबय्या" और उन्नव लक्ष्मीनारायण का "मालपल्लि" प्रकाश में आये। "मालपल्लि" भावी पीढ़ी के लिए पथ-प्रदर्शक सिद्ध हुआ। पचास वर्ष पहले की रचना होते हुए भी उसके पात्र तेलुगु की मिट्टी पर पलने वाले सामाजिक जीवन को सजीव स्पंदन प्रदान करते हैं। यद्यपि उस समय की कुछ समस्याओं का समाधान तो हो चुका है, फिर भी उनकी छायाएं दूसरे रूप में सामाजिक और राजनीतिक वातावरण में अपना विकट रूप प्रकट कर ही रही हैं। उसके बाद पैंतीस के आस-पास के तीन उपन्यासों में विश्वनाथ सत्यनारायण का "वेयिपडगलु" (सहस्रपण) इतिहास के गर्त में पड़े सड़े विगत वैभव को उभारकर वर्तमान को उच्छ्वसित करता है तो अडवि बापिराजु का "नारायण राव" जमींदारी प्रणाली के एक धीरोदात्त पात्र की सृष्टि करता है। बिलकुल उसी समय गुडिपाटि वेंकटचलम् ने तेलुगु उपन्यास को नया आलोक प्रदान करते हुए दिमाग पर लगी जंग को छुड़ाकर समाज को खुली चांदनी का सुख लेने के लिए आमंत्रित किया। उन्होंने बिजली की तरह चमकने वाले अपने पात्रों के माध्यम से तेलुगुभाषी समाज को यह समझाया कि नारी को चेरी बनाने से पुरुष का ही पतन होता है। आर्थिक व्यवस्था और द्वितीय विश्व युद्ध ने एक के बाद एक तेलुगु समाज पर जो दबाव डाला था, वही कुटुंबराव की "चदुवु" (शिक्षा), गोपीचंद की "असमर्थुनि जीवित यात्रा" (असमर्थ की जीवित यात्रा) और जी. वी. कृष्णाराव की "कीलु बोम्भलु" (पुतलियां) में परिलक्षित होता है। बुच्चिबाबू के "चिवरकुमिगिलेदि" (आखिर जो बचा) के प्रकाशन के साथ मनोवैज्ञानिक युग का आरंभ हो जाता है।

श्री पालगुम्मि पद्मराजु अपनी कहानी "गालिवान" (तूफान) के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय यश के भागीदार बन गये। कवि, कहानीकार, उपन्यासकार, आलोचक, रेडियो वार्ताकार, फिल्म लेखक और साहित्यिक व्याख्याता के रूप में पद्मराजु के समकक्ष आ सकने वाले मेधावी बहुत कम हैं।

कोई बात कहनी हो या लिखनी हो तो सीधी-सादी शैली में दुराव-छिपाव या भटकाव के बिना वे कह देते हैं। उनका कहना है कि हमें अपनी स्थिति का पता लगाने के लिए अपने को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आक लेना चाहिए। उनके विचार में समकालीन साहित्य से प्रभावित होने पर भी रचनाओं में अपना कुछ निजीपन, चाहे उसे तेलुगुपन कहें या वैयक्तिक छाप कहें, जरूर होना चाहिए। उनकी कई किताबें प्रकाशित हैं। इन सबमें "राम राज्यानिकि रहदारि" (राम राज्य की ओर महामार्ग) तेलुगु प्रांत के मध्यम वर्ग के पारिवारिक जीवन का सच्चा प्रतिबिंब प्रस्तुत करता है। इस उपन्यास में पच्चीस-तीस साल की आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक गतिविधियों के प्रभाव का करुणाजनक और कमनीय चित्रण मिलता है।

उपन्यास की रचना में "नल्ल रेगडि" (काली मिट्टी) एक नया प्रयास है। प्रसंग पर प्रसंग बुनते जाते हैं तो धीरे-धीरे पात्रों का परिचय खुलता जाता है। कहने के ढंग में भी कुछ नयापन है। कहते हैं, "फटी हुई काली मिट्टी प्यास से अपना मुंह खोलती है। गर्मी मिट्टी को प्यास का पाठ पढ़ाती है – प्यास भी ऐसी जो स्वास्थ्य के लिए अच्छी है। उस प्यास से मिट्टी को असीम

शक्ति मिलती है – पानी से और हवा से जीवन सार को संग्रह करने की शक्ति – तब मिट्टी से सोने की फसल उगती है।"

राजू, जो नया ट्रैक्टर खरीद लेता है, कहता है, "तीस हल तीन दिन में जितना खेत जोत लेते हैं उतना यह एक ही दिन में कर देता है।" राजू से दो लड़कियां प्यार करती हैं। एक है मल्ली जो सोचती है कि "ये घर और खेत छोड़कर मैं कहां जाऊंगी ? अगर मैं कहीं चली जाऊं तो मेरी काली गाय को चारा कौन देगा ? नींबू के पेड़ में पानी कौन देगा ? इन सबको मेरी और मुझे इन सबकी जरूरत है।" दूसरी है लक्ष्मी जो अपने पिताजी से बेधड़क कह देती है, "किसी वक्त उस लुच्चे को अपना दामाद बनाने के लिए तुम्हारा जी तड़पता था। वह उस वक्त लुच्चा नहीं था, अब हो गया है। आप मर्दों के लिए दिल में मुहब्बत हो या न हो, बाहर दिखावा ज्यादा चाहिए। मेरे लिए किसी को किसी के पैरों पड़ने की कोई जरूरत नहीं है। सिर, आंखें फाड़कर आप लोग अपनी मर्जी से मौज उड़ा लें।" राजू के साथ लक्ष्मी का रिश्ता लगभग तय हो जाता है और वर पक्ष दान-दहेज के बिना शादी करने के लिए तैयार भी हो जाता है। लेकिन मल्ली मन ही मन राजू से प्यार करती है और केवल प्रेम पत्रों में अपने अनुराग की रागिनी का आलाप करती रहती है जो उसके प्रेमी के पास पहुंच नहीं पाते।

कोल्हू पर बैठकर तेल पेरने वाली मंगी की झांकी पाने के लिए पटवारी धर्मराजू अपने बेटे लिंगराजू को कमरे के अंदर बंद करके ताला लगा देता है तो उसका सुपुत्र कहता है, "मरने से पहले मां के नाम बीमा करवाकर पच्चीस हजार हड़प लिया है और अब पचास मांगता हूं तो नाक-भौं चढ़ाते हो।" मंगी तो पिता-पुत्र दोनों को अपनी आंखों के इशारे पर नचाती है। बिच्छू जैसी प्रकृति है धर्मराजू की। उसको मालूम है कि उसकी सियारी चाल से राजू और लक्ष्मी की शादी नहीं रुकने वाली है। लेकिन वह अपनी सारी ताकत लगाकर दोनों में मन-मुटाव पैदा कर झगड़े का मजा चखना चाहता है। आखिर मल्ली काली मां में मिल जाती है।

ग्रामीण वातावरण में पले सुब्बय्या, रामय्या, वेंकन्ना, गंगुलू, रंगडू, रामी, सूराली आदि पात्र बड़ी-बड़ी बातें नहीं करते, पर अपने मन की बात सहज भाव से जाहिर करते हैं। इनमें से कोई भी बहस करने वाले नहीं हैं और न उपदेश देने वाले हैं। उनके पास अपने जोश-खरोश का समर्थन करने के लिए उपयुक्त शब्द-संपत्ति भी नहीं है। अगर कोई उनका अपमान करता है तो बदले में उनका अपमान करना ही वे उचित समझते हैं। परंपरा से चली आने वाली पशु बलि में उनको कोई बुराई नजर नहीं आती। मन के सीधे-सादे होने के कारण वे सोचते और समझते हैं कि पीढ़ियों से चली आने वाली प्रथाओं को न तोड़कर उनके अनुसार चलने में कोई दोष नहीं है। काली मिट्टी की परिभाषा और ट्रैक्टर के प्रवेश के साथ यह उपन्यास आरंभ होता है, व्यक्तियों की जिम्मेदारियों, आपसी रिश्तों, स्पर्द्धा, हठधर्मिता आदि के साथ आगे बढ़ता है और अंत में मंदिर में प्रेम के पंछियों के परिणय तथा मल्ली के आत्मसमर्पण के साथ समाप्त होता है।

"जब मैं अपने को उपन्यासकार मानता हूं तो इसमें मुझे वैज्ञानिक, दार्शनिक और कवि

कहलाने से भी अधिक आत्मसंतोष मिलता है, क्योंकि बाकी सब लोग अपने-अपने क्षेत्रों में पारंगत हैं जबकि मेरे उपन्यास लेखन में उन सबकी प्रतिभा का कुछ न कुछ अंश विद्यमान होता है। जीवन का आलोकसार ही उपन्यास है।" यह था लारेंस का कथन।

पद्मराजु ने अपने उपन्यास "नल्ल रेगडी" (काली मिट्टी) में इसी प्रकार का जीवनसार भर दिया।

— एम. आर. चंदूर

बारिश होने पर तो पैरों के नीचे की काली मिट्टी चिपचिपाने लगती है। धोने पर भी नहीं धुलती। कितना ही धोते जाओ, मटीला पानी गिरता ही रहता है।

बारिश होने पर लड़के और लड़कियां – सभी बच्चे काली मिट्टी में एक हो जाते हैं। बच्चों में और मिट्टी में कुछ समानता है, बारिश हो और मन ठंडा हो तो बच्चे नरम होते हैं और मिट्टी भी।

बारिश थमती है तो ठंडी-ठंडी धूप निकल आती है। नरम मिट्टी कुछ सूखती है। बच्चे मिट्टी से गोलियां बनाते हैं। अंगुलियों से छोटे-छोटे लड्डू बनाते हैं। फिर नाखूनों से उन्हें चमकाते हैं। फिर ठंडी धूप में उन्हें सुखाते हैं। फिर उनसे खेलते-कूदते हैं। बच्चों की तरह भील भी, मिट्टी की बड़ी-बड़ी गोलियां बनाते हैं। भील उन्हें चमकाते हैं, सुखाते हैं। ये गोलियां उनकी गुलेलों में काम आती हैं। लोहे के गोलों की तरह इन गोलियों को गुलेलों में लगाकर कौवों को मारते हैं।

धूप बढ़ती है, मिट्टी में बिवाइयां-सी फटने लगती हैं। नरम मिट्टी पर मनुष्य और पशु अपने पदचिह्न छोड़ते हैं – वही चिन्ह टूट-से जाते हैं। मिट्टी सूओं-सीखचों की तरह हो जाती है। यह आने-जाने वालों के पैरों में चुभती है। इससे बचने के लिए जो लोग खरीद सकते हैं, वे जूते खरीदकर पहन लेते हैं। पर करोड़ों ऐसे लोग हैं जो चप्पल भी नहीं खरीद सकते। गांव वाले नंगे पैर, दर्द सहते, यूं ही इस पर चलते रहते हैं। उनके पैर दर्द के आदी हो जाते हैं। सहते-सहते उनके पैर भी पथरा जाते हैं, पशुओं के खुरों की तरह उन्हें दर्द नहीं मालूम होता। उनकी कोमलता चली जाती है। गांव वाले और पशु उस फटी काली मिट्टी पर चलते चले जाते हैं। मिट्टी की वे सुइयां या सींखचे उनको नहीं सताते।

काली मिट्टी प्यास से मुंह खोलकर आकाश की ओर देखती है। मिट्टी, पौधों को अपनी प्यास से झुलसा देती है। तब पौधे नहीं उगते और उगे हुए पौधे सड़ जाते हैं, मर जाते हैं, किंतु मिट्टी नहीं मरती। कभी नहीं मरती। उसने कभी शायद अमृत पिया था, इसलिए उसे मौत नहीं आती। मिट्टी आकाश की ओर मुंह करके घोर तपस्या कर रही है। उसकी तपस्या की गरमी में सारा संसार भभकता है। प्राणी विवश होकर हाय-हाय करने लगते हैं। तब जाकर मिट्टी की तपस्या फलती है। मूसलाधार वर्षा होती है। तब काली मिट्टी पेट भर पानी पीती है। यही नहीं, हवा और बादलों का सार भी वह चूस लेती है। कंठ तक पानी पीती है काली मिट्टी। इस तरह एक ओर फसल को प्राण देती है, दूसरी ओर मनुष्य और पशुओं को प्राण देती है।

बच्चों और मिट्टी में साम्य है। स्रष्टा के हाथ में बच्चे भी मिट्टी के गोले जैसे हैं। धूप मिट्टी को पिपासा सिखाती है, स्वस्थ पिपासा। वह पिपासा ही मिट्टी को अनंत शक्ति देती है – हवा और पानी से जीवनरस को चूसने की शक्ति और तब मिट्टी सोना पैदा करती है। बच्चों में भी, मिट्टी की पिपासा की तरह अनंत तृष्णा है। उस तृष्णा को ठंडी-ठंडी वर्षा चाहिए। बारिश हो तो बच्चे भी मिट्टी की तरह सोना पैदा करते हैं। अच्छी बारिश हो तो बच्चे और बूढ़े — गांव के सभी लोग सोना पैदा करते हैं।

बच्चों को और मिट्टी को वर्षा चाहिए।
शीतल वर्षा यदि न आयी तो,
बच्चों की और मिट्टी की प्यास न बुझी तो
गांव का क्या होगा ?
संसार का क्या होगा ?

ऊंचे-नीचे, ऊंचे-नीचे, दायीं ओर ऊपर, फिर झट नीचे। बिना उल्टे, ट्रैक्टर को चलना आता है, ऊबड़-खाबड़ जमीन पर चलना। और उसके हाथ जानते हैं ट्रैक्टर चलाना। पहले तो ट्रैक्टर का पहिया हाथ को जबरन खींच लेता था, फिर हाथ ने पहिये को काबू में रखना सीख लिया।

राजू को बचपन से ही मशीनों में बड़ी दिलचस्पी रही है। वह घड़ियों और ग्रामोफोनों का पुरजा-पुरजा अलग कर देता था। पहले उसे उन्हें फिर से जोड़ना न आता था। आध-एक घंटे में पुर्जों को निकाल तो देता, पर कहीं छह दिनों में उन्हें लगा पाता। शुरू-शुरू में कल-पुर्जे उसकी बात न मानते थे। अब चाहे नयी कार ही हो, बस छूने भर की देर है कि वह उसका कहा सुनती है, ट्रैक्टर भी।

"अरे भाई," गंगप्पा दूर से ही चिल्लाया। वह फटी हुई भूमि पर चल रहा था। चाल क्या थी, दौड़ थी ! उस चाल में जोश अधिक था और रफ्तार कम।

टप ! टप ! टप ! डंटप ! ट्रैक्टर की आवाज आ रही थी। और राजू उस पर राजा की तरह बैठा था। तीस जोड़ी बैल और तीस जोड़ी हल अपना काम छोड़, उसकी ओर देखने लगे।

उसने इंजिन को बंद कर दिया। तुरंत नीरवता छा गयी, वही नीरवता जो खेतों में होती है। राजू सीट पर से उतरा। जो जमीन तीस हल तीन दिन में जोत पाते थे, उसे वह एक दिन में जोत देगा। वह बीज बोयेगा, कटाई करेगा। ट्रेलर लगा दिया तो फसल भी घर ले जायेगा। नयी मशीन का कमाल है यह।

"बाप रे बाप !" गंगप्पा ने अपनी बड़ी-बड़ी आंखों को और बड़ा करते हुए कहा। उन आंखों में आश्चर्य था, दिलचस्पी थी, लेकिन गंगप्पा का दिल बड़ा था। गंगप्पा को देखते ही राजू को गांव का तालाब याद आता था – कमल के पत्तों और फूलों वाला तालाब। तालाब का परला किनारा ही नहीं दिखता। इस तरह छा गये हैं कमल के पत्ते कि पानी का शीशा टुकड़े-टुकड़े हो गया है। फिर भी आकाश तालाब के पानी में साफ-साफ दिखता है। अखंड

आकाश की तरह गंगप्पा का दिल भी उसकी आंखों में प्रतिबिंबित हो रहा था।

"तुम्हारा वह आ गया है !" मल्ली ने इमली के मुलायम पत्ते तोड़ते हुए कहा।

"छिः, मेरा वो क्या ! मेरा क्या है, तुम्हारा जीजा है," लक्ष्मी ने कहा।

"आज नहीं तो कल तो तेरा ही होगा वह।" एक ओर टहनी से पत्ते तोड़ते हुए रामी ने कहा। लक्ष्मी सकुचा गयी। आंख और गाल खिल उठे, जैसे पूछ रहे हों, कब ? और कितने दिन ? आंखें चमकीं।

"लच्चम्मा ! राजू जीजा आ गया है। कोई यंतर हांकता लाया है। जाने क्या है उसका नाम ? जिस जमीन को हमारे तीस हल तीन दिन में जोतते हैं. . ." हांफते-हांफते गंगप्पा ने कहा। वह इससे अधिक कुछ न कह पाया। जितनी जल्दी उससे हो सका था, वह जोती हुई जमीन को पार करता भागा-भागा आया था। उसकी दौड़ भी, औरों की मामूली चाल की तरह थी। दो बार छाती भर हवा भरके, हांफते-हांफते वह कुछ कहने को ही था कि ऊपर से इमली के पत्तों का ढेर उस पर आ गिरा।

"इसे जरा चबा लो, छोटे चौधरी साहब ! दम फूला हुआ है, ठीक हो जायेगा।"

"इमली की बहार देख, छोरी का सिंगार देख," कहते हुए गंगप्पा ने सिर उठाकर ऊपर देखा। रामी इमली के झुरमुट में बैठी थी। घुटनों के ऊपर उसने अपना लहंगा मोड़ रखा था। उसके छोटे, चिकने पैर और चिकनी जांघें चमक रही थीं। गंगप्पा एक तरफ झुका तो गिरते-गिरते बचा। रामी के घुटनों के ऊपर की मांस-पेशियां देखकर गंगप्पा की आंखें चकरा गयीं। गंगप्पा ने सिर और ऊंचा करके देखा। उसके काले चेहरे पर शरारत से भरी, चमकती आंखें और सफेद चमकते दांत उससे कुछ सवाल करते-से लगते थे। उसके चमकीले गालों को देखकर गंगप्पा मानो ढह-सा जाता था। वह अपने डंडे के सहारे खड़ा हो गया, ताकि लड़खड़ाकर कहीं आगे न गिर जाये।

"अरे पैर फिसला तो नीचे गिरोगी, जरा संभल कर" – गंगप्पा ने कहा। नजरें और ऊपर कीं। रामी को उस तरह देखते ही उसके होश बेकाबू हो रहे थे। जीभ और ओंठ सूख गये, मुंह से बात भी नहीं निकल रही थी।

"रुई के बोरे की तरह आप जो नीचे खड़े हैं, मैं भला नीचे कैसे गिरूंगी ?" रामी ने कहा।

मल्ली बिल्ली की तरह फटाफट पेड़ से उतरी। गंगप्पा का दिल जैसे कंठ में आ गया।

"अरे, धीरे से उतरो। यह बताओ, तुम पेड़ पर चढ़ी ही क्यों थीं ?" गंगप्पा ने पूछा।

मल्ली कोई जवाब दिये बिना अपने लहंगे के गट्ठर से इमली के पत्ते, नीचे घास पर डालने लगी।

"अरे भाई, इस सबको बटोरकर एक टोकरी में डाल दो। मैं अभी आयी।" वह चिड़िया की तरह उड़ गयी। उसका आंचल, सफेद कबूतर के परों की तरह उड़ रहा था। वह खेतों की मुंडेरों पर भाग रही थी। वह ऊबड़-खाबड़ मुंडेरों पर भी सरपट भागती थी। भागती क्या थी, उड़ती थी। उसे यूं भागते देख, उसका मन अघा जाता था, आंखें तृप्त हो जाती थीं।

लक्ष्मी इमली के पेड़ के पीछे से नीची नजर किये, दूर ट्रैक्टर पर बैठे राजू की ओर देख

रही थी।

गंगप्पा हड़बड़ा गया। वह मल्ली की ओर देख रहा था कि रामी टहनी से फिसलकर धड़ाम से नीचे कूदी। उसे एक तरफ गिरता देख, रामी ने उसे पकड़ लिया। रामी का हाथ क्या लगा कि वह उस पर और झुक गया। रामी ठठाकर हंस दी।

"अरे, छोटे चौधरी साहब, क्या आपने मुझे भूत समझा था जो इस तरह एक तरफ ढह गये !" रामी ने कहा।

गंगप्पा का पैर फिसला और रामी ने ऊपर से जो इमली के पत्ते फेंके थे, उन पर वह चित्त जा गिरा।

"अरे उठिये भी, इमली के पत्तों की चटनी थोड़े ही बनानी है।" रामी ने कहा। वह धीमे से उठकर, ऊपर पड़े इमली के पत्ते झाड़ने लगा। रामी पत्तों को टोकरी और थैलों में भरने लगी। उसने लक्ष्मी को दिखाकर गंगप्पा की ओर शरारत से आंख मारी।

"लक्ष्मी, इतनी शरमा क्यों रही हो ? जाकर ठीक से देख लो कि छोटा जमींदार शहर से सीधे यहां आया है कि नहीं ?" रामी ने कहा।

"जा भी," लक्ष्मी ने अपना मुंह एक तरफ मोड़ लिया। मानो जाने के लिए पीछे हटी। वह इमली के पेड़ के दूसरी ओर जा खड़ी हुई। गुस्से में लाल गालों पर, शरम की लाली दौड़ गयी थी। न चाहते हुए भी, नजर नीची किये वह ट्रैक्टर और राजू की ओर देखती जाती थी।

मल्ली ने ट्रैक्टर पर हल्दी लगायी, सिंदूर लगाया। रेडियेटर पर गेंदे के फूलों और मेहंदी के पत्तों की माला डाली। नारियल चढ़ाया। उसकी आरती उतारी।

"जय हो," गंगप्पा ने कहा।

राजू, राजा की तरह, ट्रैक्टर पर जा बैठा। कोई कल दबाई और ट्रैक्टर स्टार्ट हो गया।

ट्रैक्टर चला और थालों की-सी फलकों से काली मिट्टी कुरेदने लगा। मिट्टी ट्रैक्टर से हार गयी थी, वह चित्त गिर रही थी।

"वाह-वाह !" रामी ने कहा। तब तक ट्रैक्टर खेत के एक छोर को छूकर वापिस आ रहा था।

रामय्या चौधरी, सुब्बय्या चौधरी, रंगा, पुन्नय्या, पद्दालु, बैल, मजदूर — सब दांतों तले उंगली दबाये ट्रैक्टर की ओर देख रहे थे।

"अरे, बड़े किसान ट्रैक्टर खरीद लाये हैं, तुम्हारे पेट अब कटे समझो।" गांव के मुंशी धर्मराजू ने कहा। वह उस समय हद-बंदी कर रहा था। नापने का फीता लेकर वह मुंडेर पर चल रहा था और उससे कुछ दूर फीते का दूसरा सिरा पकड़े उसका लड़का लिंगराजू चला आ रहा था। किंतु वह यकायक रुक गया, ट्रैक्टर देखकर नहीं, मंगम्मा को देखकर।

तेलिन मंगम्मा यूं चमक रही थी जैसे तेल लगाकर उस पर हल्दी पोत ली हो। गोल आंखें, छोटी नाक, छोटा मुख। मंगम्मा हमेशा भौंहें ऊपर चढ़ाकर, कभी पलकें नीचे करके देखती थी। मंगम्मा हंसती न थी। कभी भी न हंसती थी। चाहे स्वयं बात कर रही हो या किसी की बात सुन रही हो, उसका सिर धीमे-धीमे हिलता-सा रहता, जैसे वह कोई ऐसा काम

कर रही हो जिसे वह करना न चाहती हो।

मंगम्मा झुककर, जोती गयी जमीन से, कटे हुए धान की जड़ें बटोर रही थी। लिंगराजू और धर्मराजू, दोनों ही उसे देखकर पगला-से जाते थे। मंगम्मा ने साड़ी के आंचल को मोड़-मरोड़ कर सिर पर रखा और धान की जड़ों से भरा टोकरा उस पर रख लिया। रीढ़ की हड्डी के नीचे जहां साड़ी बंधी थी पीठ के नग्न भाग को देख लिंगराजू ने जीभ लटका दी।

मंगम्मा उस तरफ मुड़ी जहां ट्रैक्टर खेत जोत रहा था। माथे पर, जहां टीका होना चाहिए था, वहां टीके का निशान भर था। मगर कोई इस बात का ख्याल न करता था कि वह विधवा है। मंगम्मा पच्चीस बरस तक बढ़ती गयी, फिर उसका बढ़ना बंद हो गया। वह जम-सी गयी। कन्याओं का शरीर बढ़ता रहता है, पर उसका जिस्म न बढ़ता था, न घटता ही था।

धर्मराजू यह दृश्य देखने में मस्त था कि उसे ग्रामाधिकारी रामय्या, सुब्बय्या चौधरी और उसके लड़के पुत्रय्या का अट्टहास सुनायी दिया। धर्मराजू क्योंकि मंगम्मा को देख रहा था, इसलिए उसे लगा कि वे लोग उस पर ही हंस रहे हैं। अपनी शान बनाये रखने के लिए, वह मुंडेर पर लगे सर्वे पत्थर की ओर देखने लगा।

"लिंगराजू, उस मुंडेर के सिरे पर गाड़ दो निशान और फीता वहां ले जाओ," वह चिल्लाया।

मंगम्मा पर से अपनी नजर हटाये बिना लिंगराजू ने मुंडेर के पास फीते का छोर रखा।

धर्मराजू ने यों मुंह बनाया जैसे सारा आसमान उस पर टूट पड़ा हो और जोर से चिल्लाया, "अरे पद्दालु, इधर आओ।"

"इस पत्थर को किसने हटाया है ? यह तीन फुट रामय्या के खेत में आ गया है, क्या बात है ?" उसने धमकाया।

"आप ही ने हटाया होगा।" पद्दालु ने अपनी ढाल-सी छाती दिखाते हुए कहा। सिवाय अपने जमींदारों के, उसे किसी की परवाह न थी।

"क्यों, सुब्बय्या के बूते पर तुम्हारी आंखों में चर्बी उतर आयी है ?" धर्मराजू ने कहा।

राजू कुछ-कुछ गुस्से में ट्रैक्टर से कूदा। कूदते वक्त उसके पैरों में कुछ खरोंच-सी भी आ गयीं। राजू के पैर में खून देखते ही मल्ली की आंखें चकरा गयीं। बिना आगे-पीछे देखे उसने अपनी साड़ी फाड़ी और उससे उसके पैर पर पट्टी बांध दी। मल्ली की घबराहट देखकर राजू का गुस्सा ठंडा पड़ गया। उसने उसकी ओर मुस्कराते हुए देखा। फिर उसने धर्मराजू की ओर मुड़कर कहा, "क्यों भाई नारद महर्षि, वह पत्थर कहीं भी हो, इसमें तेरा क्या आता-जाता है ? चार फुट हमारे खेत में हो या मामा के खेत में ? जब हम दोनों को कोई एतराज नहीं है तो तुम बीच में क्यों टांग अड़ाते हो ? सवेरे से किसी न किसी के बीच कोई न कोई झगड़ा पैदा करना ही तुम्हारा काम है।"

"ओह," धर्मराजू ने कहा, "तुम्हारे दोनों परिवार इस तरह घुले-मिले हुए हैं तभी तो यह गांव स्वर्ग है।"

इस विषय पर धर्मराजू ने एक बड़ा भाषण ही तैयार कर रखा था। परंतु इस बीच उसके

हाथ से फीता खिसककर नीचे गिर गया। और वह खुद-ब-खुद मुंडेर पर चलने भी लगा। उसके हाथ से वह क्यों सरक गया था, यह जानने के लिए धर्मराजू ने पीछे मुड़कर देखा। ऐसा लगता था जैसे लिंगराजू यह भी भूल गया हो कि उसके हाथ में फीता था, मानो नशे में चल रहा था। उसके सामने कुछ दूरी पर मंगम्मा, धान की जड़ें एक टोकरे में रखकर जा रही थी। लिंगराजू की दोनों आंखें मंगम्मा की रीढ़ पर गड़ी थीं।

"अरे, लिंगा!" धर्मराजू उसके पीछे लपका। बड़े किसान और छोटे नौकर-चाकरों की हंसी की भी उसने परवाह न की। वह भी अपने को भूला हुआ था। सिर पर रखी टोकरी को, मंगम्मा ने बायें हाथ से थाम रखा था, इसलिए बायीं तरफ का वक्ष कुछ ऊपर उभर आया था।

"अरे, क्या देख रहे हो? आधा दिन हो गया और एक हिस्सा काम भी खत्म नहीं हुआ!" ग्रामाधिकारी रामय्या ने कहा। मजदूर फिर हल चलाने लगे।

रामय्या ने राजू की ओर मुड़कर कहा, "अरे भाई राजू, शहर से हमारे लिए भी एक ट्रैक्टर ले आते।"

"हमारे लिए और आपके लिए क्या बात है? सारे गांव की जमीन जोतने के लिए यह एक ट्रैक्टर काफी है। आपका रंगा जो है, दिन भर फालतू मटरगश्ती करने की बजाय उसे एक दिन ट्रैक्टर पर सवार होकर जमीन जोतने के लिए कह दो। मैं उसे ट्रैक्टर चलाना सिखा दूंगा।"

"अरे, यह ट्रैक्टर भी क्या चीज है, मैं तो हवाई जहाज चला सकता हूं। तुम्हारे सिखाने की कोई जरूरत नहीं है।" कहता हुआ रंगा ट्रैक्टर की ओर बढ़ा।

"अरे, तेरा भला होगा, आज ही उसे कहीं तोड़ न देना।" रामय्या चौधरी के लड़के वेंकन्ना ने कहा

"भैया कह रहे हैं, इसलिए छोड़ देता हूं।" रंगा यह कहते हुए पीछे हटा। उसे अपनी शेखी साबित करने की जरूरत ही न पड़ी। सच कहा जाये तो रंगा ट्रैक्टर के बारे में कुछ नहीं जानता था।

रामय्या चौधरी के घर में रंगा का एक विशेष स्थान था। वह चाहे कुछ करे या न करे – कोई सीधा काम वह कभी करता ही न था, उसे कोई कुछ न कहता। कोई कुछ कह नहीं सकता था, अगर कभी कोई कुछ कहता भी तो रामय्या की पत्नी सूरालू सिसकने लगती थी। सूरा की छोटी बहन, नागम्मा, ने मरते समय दस दिन के बच्चे रंगा को उसके हाथों में रखा था। पत्नी को मरे अभी एक सप्ताह भी न हुआ था कि रंगा के पिता, तिरपतय्या, ने फिर से शादी कर ली। इसलिए रंगा, रामय्या के घर में उनके लड़के से भी बढ़कर प्यार से पाला गया। उनका अपना लड़का वेंकन्ना, हालांकि पच्चीस बरस का हो गया था और उसकी शादी भी हो चुकी थी, पर अपने पिता के सामने चुरुट नहीं पी सकता था। चूंकि उसकी मां गुजर गयी थी, इसलिए रंगा को कुछ विशेष अधिकार मिले हुए थे। वह इधर-उधर की चीजें रहन रखकर, हनुमंत बनिये की दुकान से बीड़ियां खरीद लाता और रामय्या के सामने ही पीता। अभी उसके सोलह भी पूरे नहीं हुए थे कि तालाब के किनारे खड़े हो, जवान लड़कियों को सीटियां बजाकर चिढ़ाने

लगा था। रामय्या से उसके इन कारनामों की कोई शिकायत न करता, पर फिर भी रामय्या सब कुछ जानता था। रामय्या को भी रंगा से एक अजीब-सा लगाव था। रंगा बातें सुनाता तो लगता जैसे वक्त को पंख लग गए हों। रंगा भले ही शरारती हो, पर सब जानते थे कि वह नीयत का खराब न था। रंगा छुटपन में ही जान गया था कि उसकी मां न थी और पिता था भी तो वह न के बराबर था। वह यह भी जानता था कि उसके असली मां-बाप, सूरालू और रामय्या ही थे। रंगा उनके लिए अपने प्राण तक देने को तैयार था।

थोड़ी दूरी पर रामी, खेत की मुंडेर पर घास काट रही थी। राजू ट्रैक्टर पर सवार हुआ और उसी तरफ चल दिया।

"आज के लिए काफी है। हलों ने जोतना शुरू कर दिया है न ?" सुब्बय्या ने कहा। राजू ने ट्रैक्टर स्टार्ट ही न किया।

सुब्बय्या और रामय्या को इस ट्रैक्टर की खेती पर जरा संदेह था। वह शायद उसे चाहते भी न थे। बाप-दादाओं के जमाने के सोने के हल जो हैं, भला इन ट्रैक्टरों की जरूरत ही क्या है ? अगर वे बिगड़ गये तो ? अगर एक बैल बीमार पड़ जाये तो दूसरा कौन देता है ? हल की लकड़ी टूटती है तो जोड़ने के लिए बढ़ई है। इस ट्रैक्टर के बारे में हम कुछ भी नहीं जानते हैं। इसके भरोसे अगर हमने हल छोड़-छाड़ दिये, तो खेती ही रुक जायेगी। असली मामला ही बिगड़ जायेगा। एक और बात भी थी। कितना ही अड़ियल कोई बैल हो, वह आदमी के नीचे ही है। पर यह मशीन तो मनुष्य को कुछ समझती ही नहीं। न उसमें दिल है और न जज्बात ही। ट्रैक्टर को देखकर कोई यह अभिमान से कह भी न सकता कि वह मेरा है। भले ही काम बड़ी होशियारी से करे, पर ट्रैक्टर आदमी का गुलाम नहीं है। आदमी ही मशीन का गुलाम हो सकता है। दोनों बड़े किसानों को भय था कि पीढ़ी दर पीढ़ी हलों से की जाने वाली खेती, इन ट्रैक्टरों की बदौलत उतनी अच्छी तरह न हो सकेगी। रामय्या ने जब कहा कि ट्रैक्टर की कोई जरूरत नहीं है तो उसका लड़का वेंकन्ना उसका विरोध न कर पाया और जब राजू ने ट्रैक्टर खरीदने की जिद पकड़ी, तो सुब्बय्या उसे न नहीं कर पाया।

और जब ट्रैक्टर खेत में आकर खड़ा हुआ तो राजू की खुशी और संतोष देख, वेंकन्ना को मन ही मन कुछ ईर्ष्या हुई।

ट्रैक्टर भले ही उसे पसंद न हो, पर सुब्बय्या को लगा कि उसका रुतबा, कम से कम इस तरह ही, रामय्या से अधिक हो गया था।

ट्रैक्टर के पास खड़े राजू की आंखें, लक्ष्मी को खोज रही थीं। उसने उसे देख लिया। लक्ष्मी के मुंह पर यकायक लाली-सी आ गयी। वह लजायी-सी इमली के पेड़ के पीछे छिपी खड़ी थी। लेकिन राजू ने उसे देख लिया। लक्ष्मी भी उतावली थी कि वह उसकी आंखों में पड़े। पर डर रही थी कि कहीं दिख गयी तो उसकी शरम की लाली और गहरा जायेगी। इसलिए बेपरवाह-सी, वह ताल की ओर चल पड़ी। जाते-जाते उसने बड़े जोश से खजूर की एक टहनी तोड़ ली। वह उसे तलवार की तरह घुमाती, सरकंडों के झुंड में से रास्ता बनाती चली जा रही थी। लक्ष्मी की शरम कुछ ऐसी थी कि मानो उसी के कारण आकाश भी सुर्ख

हो गया हो। राजू की आंखें भी खिल उठीं। इमली का पेड़ और उसके पीछे लजाती लक्ष्मी – यह सब आंखें मूंदकर भी वह देख सकता था। पास से गुजरते हल के बैलों को उसने उकसाया। लक्ष्मी सरकंडों के बीच की हरी घास पर बैठ गयी। उसने अपने पैर ताल में लटका दिये। पीछे सरकंडों का झुरमुट था। इस विशाल संसार में, वहीं एकांत में अकेला बैठा जा सकता था। सरकंडों में कलियां आ गयी थीं। कुछ दिनों में उनमें से सफेद-सफेद फूल निकलेंगे। उसने एक सरकंडा तोड़ा, उससे पानी के छोर पर उसने कुछ लिखा। पानी की सतह पर बने आकाश के चित्र को उसने हिला दिया, छोटी-छोटी लहरें उस छोटे ताल में उठने लगीं। उन तरंगों में, आकाश और बादल हिलोरें-से लेते लगते थे। तरंगें भंवराती-सी दूर चली जा रही थीं। उसी तरह जिस तरह बादल आकाश को घेर लेते हैं। धीमे-धीमे, चुपचाप पानी की तरंगें उठती और रेंगती हुई दूर चली जा रही थीं। एक छोटी-सी मछली लक्ष्मी के पैर की अंगुली पर गुदगुदी करके चली गयी। उसके स्पर्श से लक्ष्मी सिहर उठी। सरकंडा पानी में छोड़कर, वह घास पर लेट गयी। लेकिन पानी में पैर घुमाती रही। वह नहीं जानती थी कि उसकी साड़ी भीगकर, उसके पैरों में लिपट गयी है। लक्ष्मी चाहती थी कि वह मछली फिर आये और उसे फिर गुदगुदी कर जाये। यही सोचती हुई वह आकाश को निहार रही थी।

अनजाने ही, मानो कहीं आकाश से ही उसे किसी के आने की ध्वनि सुनायी दी। लक्ष्मी घबराकर बैठ गयी। उसका दिल जैसे सारे शरीर पर ही धड़धड़ा रहा था। सरकंडों के पीछे, एक गज दूरी पर राजू खड़ा था। अगर उसने देख लिया तो ? अगर नहीं देखा तो दिल की यह धड़कन किस काम की ? वह जानती थी कि राजू वहां आयेगा। अगर वह सोचे कि वह सरकंडों के पीछे छुप गयी थी तो ? आखिर, वह वहां बैठी रहे, और वह देखे तक न, तब ? ताल भी तो उन्हीं का है। ताल से उनके खेत की सरहद लगती है। उनके खेत की सरहद पर भी ताल आता है। वह रोज वहां आकर बैठ जाती थी, इसलिए नहीं कि कोई आये और उसको देखे, या न देखे। तो फिर वहां क्यों आती थी ? राजू के लिए ही न ? नहीं तो। महज इसलिए कि वह आना चाहती थी। राजू ने, उसे देखकर उससे बातचीत की तो ? बस, शरम के मारे मर जायेगी। आठ साल पहले ताड़ के फलों के बारे में, उससे थोड़ा-सा झगड़ा हो गया था। उसने उसके बाद उससे कभी बातचीत नहीं की थी। एक बार वह माता के मंदिर में पांव रख रही थी कि वह भी अंदर से आ रहा था, उस पर वह गिरते-गिरते बची। वही मुस्कराता हुआ एक ओर हट गया। वह इतनी लजा गयी थी कि वह अपना कदम आगे भी न रख सकी।

"मां से क्या मांगने की सोच रही हो ?" उसने शरारत भरा प्रश्न किया।

लक्ष्मी का जी चाह रहा था कि वह पूछे कि तुम क्या मांगकर आ रहे हो ? मगर कैसे पूछती ? वह झट अंदर भाग गयी।

मंदिर के पुजारी ने सब कुछ चुपचाप देख लिया था। वह सब जानता था, यह उसने अपनी मुस्कराहट से स्पष्ट भी कर दिया था। पुजारी ने फूलों का थाल उसके हाथ से ले लिया। उसने लक्ष्मी के मन के अरमानों के बारे में, मां से निवेदन किया। वह उसके आशीर्वाद की कामना कर रहा था, लक्ष्मी यह भी जानती थी। सरकंडों के झुरमुट से परे, राजू बड़े जोश के

साथ कह रहा था, "इस बार होने दो, फिर इन मुंडेरों को हटाकर, दोनों खेतों को मिला देंगे।"

"इन्हें मिला दिया गया, तो कैसे मालूम होगा कि रामय्या चौधरी के कौन-से खेत हैं और हमारे कौन-से हैं ?" गंगप्पा ने कहा।

"अरे, दस्तावेजों में लिखा तो है कि किसकी कितनी जमीन है। सब मिलकर हल जोत देंगे, खुद खेती करेंगे, फसल पैदा करेंगे और जिसकी जितनी जमीन है, उसके अनुसार पैदावार का बटंवारा कर लेंगे। उन देशों में छोटे खेत नहीं होते। अगर हजार एकड़ न हो, तो ट्रैक्टरों की खेती फायदे की नहीं बैठती।"

"अगर यही बात हो, तो सारे गांव के खेत मिलाये जा सकते हैं।" गंगप्पा ने अपनी आंखें बड़ी करते हुए कहा। तभी सरकंडों में हलचल-सी हुई और उनके बीच में से बिजली की तरह लक्ष्मी निकली। भय, चिंता, लाज — इन सब ने लक्ष्मी की चाल को हरिण की दौड़-सा बना दिया था। गंगप्पा घबराकर एक तरफ झुक-सा गया। राजू उस 'बिजली' को पहचान गया। शायद राजू की नजरों ने लक्ष्मी के पैरों में यकायक जंजीर-सी बांध दी थी। या शायद रामी की घास की टोकरी रास्ते में आ गयी थी। लक्ष्मी थम गयी। ढह-सी गयी। राजू की मुस्कराहट ने, रामी के कहकहे ने, ज्वार होते उसकी शरम ने, लक्ष्मी को सांस तक न लेने दिया। उसे जैसे काठ मार गया। उसने चाहा कि वह घास में या काली मिट्टी में समा जाये, कहीं गायब हो जाये।

"छोटे जमींदार, खड़े-खड़े देख क्या रहे हो ? हाथ का सहारा देकर उठाओ न !" शरारती रामी ने कहा।

"छिः, जा, कहीं शरम-हया हो तब न !" लक्ष्मी ने कहा। वह पीछे मुड़कर देख भी न सकती थी, कहीं ऐसा न हो कि राजू आ रहा हो। इसी फिक्र में उसने उठना चाहा। तब उसे मालूम हुआ कि उसके पैर में मोच आ गयी थी। वह दर्द के कारण चिल्ला भी न सकी। राजू, जो पीछे खड़ा था, भागा-भागा आया। दूसरी ओर से मानो, कबूतर की तरह मल्ली उड़ती आयी। दोनों ने उसके दोनों हाथ पकड़कर उठाया। राजू के छूने भर की देर थी कि लक्ष्मी को रोमांच-सा हुआ।

"कोई जरूरत नहीं, छोड़ो, मैं चल सकती हूं," लक्ष्मी ने कहा।

"कोई बात नहीं, चलो भी," राजू ने कहा।

"तुम छोड़ो, मैं ले जाऊंगी," मल्ली ने कहा।

"अरे भाई, वह कैसे छोड़े, पैर में मोच आयी ही उसी के लिए है," रामी ने कहा।

"जा भी, अब मुंह बंद कर !" मल्ली ने उसे झिड़का।

राजू ने छोड़ा नहीं। वह छोड़ दे तो अच्छा हो, न छोड़े तो और भी अच्छा हो। लक्ष्मी, मल्ली के कंधे पर झुक गयी। राजू उसे नल तक चलाकर ले गया। अगर कोई आस-पास न होता तो राजू उसे उठाकर ले जाता और गाड़ी में बिठा देता। अगर कोई न होता तो लक्ष्मी भी उसकी छाती से लग जाती। कहने का मतलब यह कि सपने में यदि उसके पैर में मोच आती, तो वह दोनों हाथों में उठाकर उसे गाड़ी में बिठाता और गाड़ी में बैठने के बाद भी यह सपना

चलता रहता।

"छत्तीस रुपये," धर्मराजू ने कहा।

"सत्ताईस ही तो बनते हैं," किसान ने कहा, "चौदह जमीन के कर के, और तेरह सिंचाई के।"

"और क्या, हिसाब तो खूब सीख गये हो – तीसरी फसल के पानी का कर, नौ रुपये, क्या तुम्हारा बाप देगा?"

"मुंशी जी, ऐसी बात नहीं है। सरकार ने अखबारों में छपवाया तो था कि अगर कोई तीसरी फसल पैदा करेगा, तो उसे अलग से पानी का कर नहीं देना पड़ेगा। फिर नहर में पानी था ही कहां? तीसरी फसल हमने तालाब के पानी से ही तो पैदा की थी।"

"अरे, तुम सब की अक्ल बहुत बढ़ गयी है। जब तक अंग्रेज रहे, तुम्हें जबान खोलने तक की हिम्मत नहीं हुई। देश आजाद क्या हुआ कि बरबाद हो गया। कहते हो कि तालाब के पानी से सिंचाई की थी, पर तालाब में क्या नहर का पानी नहीं आया था?"

"जाने आपके क्या कानून-कायदे हैं? मैं अभी मुन्सिब (ग्रामाधिकारी) से पूछकर आया हूं। वह भी कह रहे हैं कि अलग से कर देने की कोई जरूरत नहीं है।"

"अच्छा, अगर पूछ आया है उनसे, तो जितना तू चाहे उतना ही दे जा। कल जो मालगुजारी में अलग कोई नुकसान होगा तो कहूंगा कि वह ही उसे भरे। दे पैसा, मुझे जरा उधर जरूरी काम है।"

अंधेरा होते ही, धर्मराजू का 'उधर का काम' और जरूरी हो जाता था। अगर 'उधर के काम' में किसी प्रकार का विघ्न होता तो वह बड़ा खीझता। किसान से पैसा लेकर, वह उठने को ही था कि लिंगराजू आ गया।

"मुझे पचास रुपये चाहिए," उसने कहा।

"एक पैसा भी नहीं दूंगा, रुपये क्या पेड़ों पर लगते हैं? चलो अपने कमरे में।"

"मुझे पचास ..."

मुंशी तो 'उधर के काम' की जल्दी में था। उसका गुस्सा बढ़ता गया। वह अपने लड़के को पकड़कर, उसके कमरे में ले गया और दरवाजा बंद करके चटखनी लगा दी। यह तो लिंगराजू के लिए रोज की ही बात थी। क्योंकि आदत हो गयी थी, इसलिए उसने ज्यादा रार नहीं किया। पर पिता के चटखनी लगाने से पहले, उसने एक बात जरूर कही। "मरने से पहले मां के नाम बीमा करके पच्चीस हजार रुपया हड़प लिया है और अब पचास रुपये मांगता हूं तो नाक-भौं चढ़ाते हो!"

"अरे बावले, इधर-उधर की बकवास की तो चमड़ी उधेड़ दूंगा। खून-पसीना एक कर कमाता हूं। खा-पीकर चुपचाप घर में क्यों नहीं पड़े रहते? क्यों इधर फालतू की बकवास करते हो?"

धर्मराजू ने कभी लिंगराजू पर हाथ नहीं उठाया था। लिंगराजू ने भी कभी पिता की मुखालफत न की थी।

लिंगराजू जानता था कि धर्मराजू का 'उधर का काम' मंगम्मा के घर जाना ही था। धर्मराजू भी यह जानता था कि लिंगराजू भी वहीं जाना चाहता था। तो भी, अभी तक मंगी के बारे में बाप-बेटे में साफ-साफ बात कभी नहीं हुई थी। धर्मराजू यह भी जानता था कि उसका लड़का पचास रुपये मंगम्मा के लिए ही मांग रहा था। वह यह न चाहता था कि लिंगराजू मंगी को मुंह मांगा देकर उसका गुलाम हो जाये। धर्मराजू का पक्का ख्याल था कि लिंगराजू का मंगी को चाहना बेहूदापन था और बेवकूफी थी। अगर मंगम्मा के पास न जाकर वह किसी और के पास जाता तो धर्मराजू को कोई खास एतराज न था। वह जवान था। मंगम्मा चोर और चालाक थी। वह जान-बूझकर उसे भड़का रही थी। क्यों ? इसलिए कि उससे और पैसे ऐंठ सके। धर्मराजू ने सोचा कि तुरंत उसकी शादी कर देनी चाहिए। उसने इस बारे में कोशिश भी बड़ी की, पर उस चुगलखोर लच्चन्न शास्त्री की वजह से एक अच्छा संबंध यूं ही हाथ से निकल गया। उसने लड़की के घरवालों से कह दिया कि उसने पत्नी के नाम बड़ी रकम का बीमा करवाया था और पैसे के लिए उसे मार दिया था। कम से कम उनको तो अक्ल होनी चाहिए थी। जब देखा कि पत्नी की हालत वैसे भी नहीं सुधरने वाली है, तो डाक्टर को घूस दे-दाकर बीमा करवा लिया। इसमें खराबी ही क्या है ? पर जब यही बात उसके लड़के ने कही, तो वह गरमा गया और दरवाजा बंद करके चला गया।

मंगी कोल्हू पर बैठी हुई थी। धर्मराजू को आता देख, मटकती हुई अंदर चली गयी।

मंगी का-छोटा सा खपरैल का मकान था। उसके दरवाजे गली में नहीं खुलते थे। गली में से खिड़कियां ही दिखाई देती थीं और खिड़कियां भी हमेशा बंद ही रहती थीं। घर का बड़ा दरवाजा आंगन के करीब था। चारदीवारी की बगल में, एक बड़ी-सी झोंपड़ी थी। उसी में कोल्हू था। गली में से झोंपड़ी में आने के लिए रास्ता था। पर इसका मतलब यह नहीं कि उसमें दरवाजे या किवाड़ थे। चारदीवारी में बड़ा-सा रास्ता था, बड़ा इसलिए कि उसमें से बड़े-बड़े टोकरे बाहर लाने-ले जाने होते थे। इन टोकरों में तिलों को धोया जाता था। मंगी जब घर में जाना चाहती तो चारदीवारी के खाली रास्ते में से झोंपड़ी में आती और झोंपड़ी में से होकर घर में चली जाती। उस घर के पिछवाड़े में दरवाजा तो था, पर पिछवाड़े में जाने के लिए गली में से कोई रास्ता न था।

धर्मराजू जब झोंपड़ी में आया, तो कोल्हू का बैल ऊंघ रहा था। वह अपना पिछला पैर कुछ घसीट-सा रहा था। धर्मराजू ने दरवाजे की ओर देखा, किवाड़ अधखुले थे। उसके ऊपर तोतों के खिलौने रखे हुए थे। वे तेल से इतने पुत-पुता गये थे कि अंधेरे में चमक रहे थे। तेल से भरी तिल के चूरे की टिकियां कोल्हू पर रखी हुई थीं। उनमें से एक छोटा-सा टुकड़ा लेकर धर्मराजू चबाने लगा। धीमे-धीमे किवाड़ के पास गया। उसे धीमे से खोला। कोई आवाज नहीं हुई। उसने सोने के कमरे का किवाड़ खोला।

"अरे," मंगी ने साड़ी पहनते हुए कहा।

"मैं ही तो हूं," कहते हुए उसने झट उसे गले लगा लिया।

"ठहरिये भी तो, सवेरे तक तीन डब्बे तेल पिरवाने हैं।"

"तेरा देवर जो है इस काम के लिए ?"

"तिल धोने भी तो होते हैं, वह तालाब तक गया है।"

"जाने भी दो, कोल्हू को थोड़ी देर आराम करने दो," धर्मराजू ने उसे बिना छोड़े ही कहा।

"छोड़िये भी तो," वह कहने को तो कह रही थी, पर अपने को छुड़ाने की कोई खास कोशिश नहीं कर रही थी।

"मंगम्मा बेटी !" झोंपड़ी में से किसी की आवाज सुनाई दी।

"पुजारी," मंगी फुसफुसायी।

"गधा, बेमौके आ टपका," धर्मराजू ने कहा।

"वह आदमी क्या देवता है। उसे डाटेंगे तो मुख में कीड़े पड़ेंगे।" मंगी ने इठलाते हुए अपने को छुड़ा लिया और उसके पास चली गयी।

"सुनते हैं, इस बार माता का उत्सव बड़े जोर-शोर से मनाया जायेगा," मंगी ने कहा।

"बड़े घर में शादी जो है। इसलिए दोनों ने हजार रुपया दिया है जलसे के लिए। बड़ी शादी है। दोनों ही हीरे-से हैं। लक्ष्मी और राजबाबू।" मंगी ने इस बीच पुजारी के बरतन में तेल डाल दिया। जब उसने गांठ में से पैसे देने चाहे, तो मंगी ने नहीं लिये।

"अरे, यह माता की दीपाराधना के लिए है न, मैं क्या आपसे पैसे लूंगी ?" मंगी ने कहा।

"मां की कृपा तुम पर पूरी तरह रहेगी," पुजारी ने कहा। वह उसको गली तक पहुंचाकर आयी ही थी कि दूसरी तरफ से बिल्ली की तरह छुपा-छुपा लिंगराजू चला आया।

"पिता जी..." लिंगराजू कुछ कहने को ही था कि मंगी ने उसके मुख पर हाथ रखकर, घर की ओर इशारा करते हुए बताया कि वह अंदर है। वह जाकर कोल्हू पर बैठ गयी और बैल को हांकने लगी। लिंगराजू को सूझ न रहा था कि वह रुका रहे या चला जाये।

जब काफी देर तक मंगी अंदर न आयी तो धर्मराजू ही बाहर चला आया। किवाड़ की आड़ में से लड़का दिखायी दिया तो उसके गुस्से की हद न रही।

"अरे बदमाश कहीं का !" वह जोर से चिल्लाया।

तुरंत लिंगराजू उछलकर मंगम्मा की बगल में कोल्हू पर बैठ गया। पिता के गुस्से से बचने के लिए, उसने मंगम्मा के पीछे छुप जाना चाहा।

"अरे, अगर तुम्हें मार भी दिया जाये तो पाप न होगा," धर्मराजू ने कहा।

"अरे यह क्या ? अभी बच्चा ही तो है," मंगम्मा ने कहा।

"उतर कोल्हू पर से !" धर्मराजू ने धमकाया।

"मैं नहीं उतरूंगा," लिंगराजू ने पिता की बात नहीं मानी। चूंकि मंगम्मा उसकी ओर से बोल रही थी, इसलिए उसमें थोड़ी हिम्मत आ गयी थी। धर्मराजू ने अपना सारा गुस्सा कोल्हू के बैल पर उतारा। बैल झट आगे कूदा। झटके के कारण, लिंगराजू नीचे आ गिरा। धर्मराजू का गुस्सा जाता रहा।

"क्यों बेटा, चोट तो नहीं लगी ?" धर्मराजू ने चिंता प्रकट की। मंगम्मा ने आकर उसका सिर सहलाया।

"अरे अरे,देखिये तो कितना सूज गया है। अंदर आओ। तिल का चूरा लगा दूंगी,सब ठीक हो जायेगा।" यह कहती मंगम्मा उसे अंदर ले गयी।

धर्मराजू का सारा जोश जाता रहा। जोश लेकर आया था और गम लेकर जा रहा था। उस गम में उसे कोल्हू के बैल पर,मंगम्मा पर,तिल की टिकियों पर गुस्सा आ रहा था। उसने एक टिकिया ली,उसे धड़ाम से जमीन पर दे मारा,और तेज-तेज चलता हुआ बाहर आ गया।

धर्मराजू ने लड़के के चेहरे पर दर्द न देखा था। मंगम्मा जब तिल के चूरे को गरम कर, एक कपड़े में डाल उसके माथे को सेक रही थी तो लिंगराजू चिल्ला तो नहीं रहा था,पर दर्द के कारण कराह जरूर रहा था। उसकी कराहट से धर्मराजू का दिल दुख रहा था। इसलिए वह वहां से दूर चला जाना चाहता था। दूर चले जाने पर भी उसका कराहना कानों में गूंजता ही रहा। गुस्सा भी ठंडा न हुआ। लड़के की कराहट को भुलाने के लिए वह मुंसिब रामय्या के घर चला गया।

सुब्बय्या चौधरी,रामय्या चौधरी,वेंकन्ना,पुन्नय्या – सब बड़े चबूतरे पर बैठे थे। रामय्या के घर बड़ा चबूतरा था। घर के सामने की जमीन पर गोबर का पानी इस तरह छिड़का जाता था कि वह पत्थर का फर्श-सा लगता था। घर के सामने धान की कोठरियां थीं और उनसे कुछ दूर चंपा-चमेली के पौधे। छोटी गली की चौपाल तक माल्टे और नारियल के पेड़ों की पंक्तियां खड़ी थीं। छोटी गली की चौपाल से बड़े घर तक,गेंदे के पौधों की कतारें थीं। बड़े घर के चबूतरे के पास ही कुआं था। कुएं की आधी जगत स्त्रियों के गुसलखाने में थी। बीच में छोटी-सी दीवार। परली तरफ बड़ी गली की चौपाल थी। इन दोनों के बीच के पांच एकड़ में, रामय्या का आंगन था। बड़ी गली की चौपाल में,मुंसिब का दफ्तर था। छोटी गली की चौपाल रंगा की थी। वह वहां अपने साथियों के साथ ताश खेलता था। और यह बात रामय्या चौधरी से छुपी नहीं थी। रंगा भी जानता था कि रामय्या चौधरी को ताश खेलना बिलकुल पसंद न था। पर रामय्या इस तरह पेश आता है जैसे वह यह जानता ही न हो कि उसके घर में ताश खेला जा रहा है। रंगा भी यह अभिनय करता है कि जैसे उसके चाचा को उसके ताश खेलने के बारे में कुछ भी पता नहीं है।

आहट सुनते ही रंगा ने ताश के सारे पत्ते आपस में मिला दिये। जब गौर से देखा तो वह रामय्या नहीं,मुंशी धर्मराजू दिखायी दिया।

"अरे क्या बढ़िया खेल चल रहा था,तुमने सब बिगाड़ दिया। मेरे हिस्से में चार जोकर आये थे,जो इससे पहले कभी भी न आये थे," रंगा ने कहा। क्योंकि बढ़िया खेल उसने बिगाड़ दिया था,इसलिए धर्मराजू की खीझ जरा कम हुई।

"इस समय कैसे मंगम्मा को अकेले छोड़ आये ? आफत न आ पड़ेगी ?" रंगा ने कहा। उसके मुख पर कोई ताला नहीं लगा सकता था।

"अरे,कर अपना मुंह बंद !" धर्मराजू ने कहा तो हंसकर ही था,पर उसके मन में बेहद गुस्सा भरा था।

चूंकि वह गुस्से में कदम बढ़ा रहा था,इसलिए धर्मराजू को वहां बिखेरे गये इमली के

पत्ते नहीं दिखायी दिये। अगर समय पर न देख लेता तो वह उन्हें कुचल देता।

"अरे, जरा आंखें खोलकर चलो," वेंकन्ना चिल्लाया। मुंशी ने उसकी ओर देखा।

"अरे, इमली के ही तो पत्ते हैं और फिर अंधेरे का वक्त है, रास्ते में बिखेर दोगे तो कोई भी उन पर चल सकता है।" कहते हुए उसने थोड़े-से पत्ते मुंह में रख लिये। अधसूखे पत्ते उसके दांतों के नीचे कुछ नरम-नरम-से लगे।

"बहुत बढ़िया पत्ते हैं, पत्ते हों तो ऐसे!"

"अरे वेंकन्ना, ब्राह्मण की नजर पड़ गयी है। टोकरा भर पत्ते उसके घर पहुंचा दो। नहीं तो हमें हजम न होंगे," रामय्या चौधरी ने कहा। धर्मराजू हंसा। उसकी हंसी गले में पैदा होती, और ओंठों तक आकर लौट जाती। हंसी कभी नाभि से न आती थी।

"दोनों बड़े चौधरी बैठे हैं, क्या शादी-वादी की बातचीत चल रही है?" धर्मराजू ने कहा।

"शादी तो करनी ही है, माता का उत्सव होते ही मुहूर्त ठीक करवाना है," सुब्बय्या ने कहा।

"सुनो तो," धर्मराजू, रामय्या चौधरी की बगल में जा बैठा, जैसे उसे कोई भेद बताने जा रहा हो। "पहले ही मालूम कर लो कि दहेज-वहेज कितना देना है, बाद में तू-तू मैं-मैं करने से क्या फायदा? लड़की की गृहस्थी में कहीं सेंध न लगे।" वह इस तरह फुसफुसाया ताकि आसपास के लोग सब सुन लें।

"क्या बकवास कर रहे हो? बंद करो यह बकवास!" रामय्या ने खीझकर कहा।

"यह तो अपशकुन है," वेंकन्ना ने कहा।

"जब तक यह इस तरह के अपशकुन की बात नहीं करता तब तक इसे चैन नहीं पड़ती," सुब्बय्या ने कहा। मुंशी इस बात पर खुश था कि उसने कम से कम एक बात तो कही जिससे सबका दिल दुखा। उसका गुस्सा कुछ कम हुआ।

"अगर दोनों चौधरी बुरा न मानें तो मैं एक बात कहूंगा। मेरी तो हमेशा यही कोशिश रही है कि आपके दोनों परिवार हमेशा खुश रहें और मिलजुलकर रहें। मुझे तो यही डर है कि कहीं छोटी-छोटी बातों को लेकर बतंगड़ न बनाया जाये। मैंने इसलिए यह बात कही थी सुब्बय्या भाई, जो कुछ तुम्हारे मन में है, वह साफ-साफ कह दो। रामय्या चौधरी को मैं मना लूंगा। आखिर उनकी तो एक ही लड़की है।"

"अगर कुछ बात होगी भी, तो वह सब मैं तय कर लूंगा। तुम्हें बीच में पड़ने की कोई जरूरत नहीं है," सुब्बय्या ने कहा। पर सुब्बय्या मन ही मन चाहता था कि दहेज की बात बातों-बातों में तय हो जाये। खुद यह पूछना उसकी शान के खिलाफ था, इसलिए इस बात का उठाया जाना, एक तरह उसे पसंद ही था।

सुब्बय्या के घर आते ही सुंदरम्मा ने किवाड़ की आड़ से पुन्नय्या से पूछा, "क्या दहेज की बात कुछ तय हुई?" पुन्नय्या ने कहा, "पिता जी ने पूछा नहीं, मामा ने बताया नहीं, फिर भी हम दोनों के बीच दहेज-वहेज की क्या बात है भला?"

"यह अक्ल तब कहां चली गयी थी, जब तुमने मेरे पिता जी से पच्चीस एकड़ जमीन

हड़प ली थी ।" सुंदरम्मा ने ताना कसा ।

राजू ने भी उनकी यह बातचीत सुनी । वह उसी समय खेत से आया था ।

"अगर दमड़ी भर भी दहेज लिया, तो मैं यह शादी करूंगा ही नहीं ।" उसने साफ-साफ कहा ।

"क्या तेरी अक्ल मारी गयी है ? बिना दहेज के भी कोई शादी होती है ?" सुब्बय्या ने कहा ।

"हूं ? दहेज न मिला तो क्या भूखे मरेंगे ? जिसके पास और कोई चारा नहीं है, वे ही दहेज लेते हैं," राजू ने कहा ।

"क्या इधर-उधर की फालतू बात कर रहे हो ?" शेषम्मा ने कहा ।

"कुछ है, तभी तो दहेज की बात है । अगर बिना दहेज के शादी कर ली, तो हमें कौन पूछेगा ?" सुब्बय्या ने कुछ गरमाते हुए कहा ।

"लड़के को हाट में बछड़े की तरह बेचना भी कोई शान की बात है ? जानते हो, सरकार ने कानून बनाया है; दहेज लेने और दहेज देने वाले दोनों को ही बराबर सजा दी जायेगी," राजू ने कहा ।

"कानून-वानून का क्या ठिकाना ? कितने ही बनाते फिरते हैं । इस बार जब वोटों के लिए सिंगल रेड्डी और सुब्ब राजू आयेंगे, तब पूछूंगा इन कानूनों के बारे में । बाप-दादाओं के जमाने से चले आ रहे हैं ये रीति-रिवाज और ये उनको बदलने के लिए उल्टे-सीधे कानून बनाते हैं ।" सुब्बय्या ने कहा ।

राजू हंसा । "क्यों नहीं खुश होते कि कम से कम लोकसभा ने एक तो अच्छा काम किया और एक तुम हो कि इस तरह की बात कर रहे हो ।"

"हां भाई, तुम जवान लोग बदल गये हो । नहीं तो कभी लड़कों ने हमारे घर में बड़ों के सामने खड़े होकर इस तरह की बात की थी ?" सुब्बय्या ने अपने को संभालते हुए कहा ।

"वाकई जमाना ही बदल गया है," राजू ने कहा ।

"हां, जमाना तो तभी बदल गया था, जब खेतों में ट्रैक्टर लाया गया था ।" सुब्बय्या यह कहकर चबूतरे पर चला गया । वह जानता था कि इस तरह की बहस का कोई अंत न था । किसी न किसी को, कहीं न कहीं रुकना ही था । वह जानता था कि राजू जिद्दी है; वह कहता ही जायेगा । अगर बात बढ़ती गयी तो राजू बिगड़ उठेगा, सुब्बय्या यह बात भली-भांति जानता था । इसलिए सुब्बय्या का वहां से हट जाना ही अच्छा था । फिर उसके मन में कहीं यह बात भी थी कि राजू का कहना बेवजह न था । उसका कहना गलत नहीं था । लड़के की नीयत, ईमानदारी और लगन देखकर सुब्बय्या को संतोष ही नहीं, उस पर गर्व भी था । जब ट्रैक्टर खरीदने का निश्चय किया गया था तब भी इस तरह की बातचीत चली थी । आखिर राजू की ही बात रही ।

उस समय मल्ली बैलों के लिए चारा मिला रही थी । उसने यह सारी बातचीत सुनी । अनजाने ही उसके ओंठों पर मुस्कराहट आ गयी । कुछ गुनगुनाने लगी । राजू भाई की बात

ठीक है। वह हमेशा ठीक ही बात करते हैं। राजू जैसा कोई और नहीं है इस दुनिया में।

"मल्ली, क्या देरी कर रही हो, सुनती नहीं हो, गौ रंभा रही है, बैल उतावले हो रहे हैं।" राजू ने बरामदे से बाहर आंगन में जाते हुए कहा।

मल्ली की मुस्कराहट बनी रही। चारा लेकर वह पशुओं के छप्पर में गयी और राजू स्नान करने के लिए कुएं के पास।

मल्ली ने चारे का बड़ा टोकरा बैलों के पास रखा। वे उसे जल्दी-जल्दी खाने लगे। दूसरा टोकरा उसने गाय के सामने रखा। गाय सूख गयी थी। राजू की शादी तक वह बियायेगी। भाई को यह गाय बहुत पसंद है। बछड़ा होना चाहिए, भाई उसे मनुष्यों की भाषा सिखायेगा। यह बैलों का जोड़ा भी इसी गाय का ही तो है। कितनी बातें सिखायी हैं भाई ने इनको। वे खुद-ब-खुद जाकर जुआ गरदन पर रख लेते हैं। जब वह बुलाता है तो पास आते हैं, जब जाने को कहता है, तो चले जाते हैं।

फिर एक बार चारा मिलाकर, मल्ली हाथ धोने के लिए कुंए के पास आयी। राजू एक चौकी पर बैठा हुआ था और गंगप्पा पानी खींच-खींचकर उसकी पीठ पर उड़ेल रहा था। राजू रोज खेत से वापिस आकर इसी तरह नहाया करता था।

"भैया, मेरे हाथों पर भी थोड़ा-सा पानी डाल दो," मल्ली ने कहा।

पानी डालते हुए गंगप्पा ने कहा, "इसके लिए भी कोई शादी का संबंध खोजो न? अपनी शादी के बाद इसकी भी करवा देना।"

"इससे कौन शादी करेगा? इसे तो अक्षर भी पढ़ने नहीं आते," राजू ने शरीर पोंछते हुए हंसकर कहा।

"वाह, फूफी ने क्या पढ़ा है?" गंगप्पा ने कहा।

"अरे, वह जमाना कुछ और था। जब तक मां दो बच्चों की मां न हो गयी थी, उसने पिता जी से बात भी न की थी और आज जमाना यह है कि शादी से पहले ही दुल्हा-दुल्हिन एक-दूसरे से चिट्ठी-पत्री करते हैं।"

"ओहो, तो देवर को हमारी बहन चिट्ठियां भी लिखने लगी है," सुंदरम्मा ने कहा। वह वहां कोई बर्तन धोने आयी थी।

मल्ली धीमे से चली गयी। गंगप्पा ने जो पानी कुएं से खींचा था, उसे राजू पर नहीं डाला।

मल्ली कुछ सोचती-सोचती अपने कमरे में चली गयी। सामान वाले कमरे और भोजन के कमरे के बीच का छोटा-सा कमरा था उसका। उस कमरे में से दक्षिण की ओर एक दरवाजा था, जो आंगन में खुलता था। वह आंगन बाकी जमीन से कुछ ऊंचाई पर था। चारों ओर ऊंची चारदीवारी थी। चारदीवारी के पश्चिम की ओर एक इमली का पेड़ था। दक्षिण की ओर चारदीवारी से हटकर रजनी का पौधा था। कितने ही और फूलों के पौधे और बेलें थी। घर के दक्षिण की ओर चार कमरे थे। पहला कमरा राजू का था, दूसरा पुन्नय्या का, तीसरा सामान रखने के लिए था और चौथा कमरा मल्ली का था। आंगन का दरवाजा हमेशा खुला रहता

था । आंगन में लगे फूलों के पौधे देखती, मल्ली हमेशा देहरी पर ही बैठी रहती । सप्ताह में एक बार, वह सारा आंगन इस तरह लीपती थी कि वह शीशे की तरह चमकने लगता ।

सर्दी खत्म होते ही, पुन्नय्या और सुंदरम्मा, दक्षिण की ओर के आंगन में अपनी खाटें डाल लेते थे । इसलिए राजू अपने कमरे की खिड़कियां न खोलता, क्योंकि भाई और भाभी आंगन में सोया करते थे । वह घर के सामने के आंगन में अपनी खाट डाल लेता । मगर मल्ली, दरवाजा खोलकर, अपने कमरे में ही सोती । शुरू-शुरू में जब वह इस घर में आयी थी, तो सुंदरम्मा यह देख कुछ सुकचाती थी, क्योंकि मल्ली दरवाजा खोले रखती और उनको पास ही आंगन में सोना पड़ता था । पुन्नय्या कहा करता कि मल्ली हालांकि सोलह वर्ष की है, पर बिलकुल बच्चे की तरह नादान है । सुंदरम्मा को भी धीरे-धीरे मालूम हो गया कि मल्ली बेचारी कुछ जानती-बूझती नहीं ।

मल्ली नादान भले ही हो, पर उसकी नादानी बच्चों की-सी न थी । उसका मन सयाना हो गया था और उसमें राजू पूरी तरह बस गया था । उसके हाथ घर के काम-काज में ही लगे रहते, पर मन हमेशा राजू की ओर ही लगा रहता । उसके मन में कहीं कोई गिला न था कि राजू और लक्ष्मी की शादी होने वाली थी । जब बाप-बेटे में, दहेज के बारे में बहस चल रही थी तो मल्ली उसे सुन मन ही मन खूब हंसी थी, क्योंकि वह जानती थी कि वह शादी होकर रहेगी । उसका मन उतावला था कि वह शादी जल्दी से जल्दी हो । इस खुशी में, उसके मन में कहीं एक ऐसी इच्छा घर कर गयी थी, जो पूरी नहीं हो सकती थी और जब वह इच्छा प्रबल होती तो उसकी चमकती आंखों और मुस्कराहट के पीछे कुछ अन्यमनस्कता-सी दिखायी देती । इसलिए जो कोई उसे देखता वह समझता कि वह बच्चों की तरह नादान है, क्योंकि उसकी आंखें बच्चों की-सी थीं, सब कुछ देखती हुई-सी और कुछ भी न देखती हुई ।

मल्ली ने अपनी भीगी हुई साड़ी बदल ली । रजनी के पौधे के पास गयी, फूलों का एक गुच्छा तोड़ा और उसे जी भरके सूंघा । पश्चिम की ओर जाकर, इमली के पेड़ पर से कच्ची इमली तोड़ी, उसे दांतों से काटा । दांत खटिया गये ।

धान की कोठरी में से गंगप्पा धान लेकर, तोल-तोलकर बोरों में डाल रहा था । पद्दालु बोरों के मुंह खोले खड़ा था और रामी, पास ही, ताड़ के पत्तों को जलाकर ताड़ के फल भून रही थी । बुड़तड्डु, पद्दालु का चार बरस का लड़का, एक लाठी ठुड्डी पर टिकाये, बड़े ध्यान से आग की ओर देख रहा था । पुन्नय्या, चबूतरे पर बैठा चुरट पी रहा था । सुब्बय्या के उस तरफ आते ही, उसने चुरट मुंह से निकालकर, पत्थर की बगल में रख दिया । सुब्बय्या ने भी यह देखा । राजू, नहाकर उस तरफ आया । उसने मुस्कराते हुए कहा, "क्यों भैया, क्यों दस पैसे की चुरट यों खराब करते हो ? क्या पिता जी नहीं जानते कि तुम चुरट पीते हो ?"

सुब्बय्या यह सुन खुश हुआ कि उसका लड़का पुराने जमाने का गौरव तो दिखा रहा था । उसे छोटे लड़के की लगन और नीयत पर भी गर्व था । सुब्बय्या का विश्वास था कि उसके विचार बदलते समय के अनुकूल थे और आने वाले समय के लिए उचित भी । इसलिए राजू का व्यवहार देखकर पहले तो उसका पुराने जमाने का मन कुछ दुखता, पर आखिर वह उसकी

बात ही मानता और कहा करता, 'जाने दो, जैसी तुम्हारी मरजी ।'

पर राजू, पिता के सामने भी अपना चुरट न फेंकता ।

मल्ली सीढ़ियों पर उस तरह कूदी जैसे कोई कबूतर हो । गंगप्पा को डर के कारण कंपकंपी-सी हुई । पर उसने जाहिर नहीं होने दिया । मल्ली का जोश उसे हरिण बना रहा था । वह कूद-फांद रही थी । उस जोश का शायद कोई कारण भी न था । वह अकारण भी हो सकता है, गंगप्पा का भय भी कुछ ऐसा ही था । गंगप्पा जानता था कि वह गिरेगी नहीं, न उसे कोई खतरा ही था । फिर भी, जब वह खेत की मुंडेरों पर से भागती या सीढ़ियों से कूदती, तो उसे इतना डर लगता कि वह ठीक से सांस भी न ले पाता । मल्ली ने उसके खुले हुए मुख में, एक कच्ची इमली रखी और गंगप्पा उसे जोर से चबाने लगा ।

"अरे, जब दांत खटिया जायेंगे, तो खाओगी कैसे ?" जैसे यह बात उस पर लागू ही न होती हो । मल्ली ने इसका तो कोई जवाब दिया नहीं, पर उससे कहा, "मुझे जरा अ आ वाली किताब ला दो ।"

"क्या !" उसे इतना आश्चर्य हुआ कि उसके हाथ का कलश नीचे खिसक गया ।

"उन्होंने पढ़ना-लिखना सीखने के लिए कहा है न ?" मल्ली ने कहा । यह कहकर, वह वहां चली गयी जहां ताड़ के फल भूने जा रहे थे ।

"कुछ और तोल दो न धान ? धान कूटने वालों के आने का समय हो गया है," पद्दालु ने कहा । गंगप्पा ने कुछ सोचते हुए, धान तोलना खतम कर दिया ।

गंगप्पा और मल्ली, सुब्बय्या की पत्नी के दूर के रिश्तेदार थे । उनका पिता, उसका रिश्ते का भाई था । जब उनकी मां गुजरी थी, तो मल्ली सिर्फ पांच महीने की थी और उनका पिता, उन दोनों को सुब्बय्या के घर छोड़, कहीं गायब हो गया था । तब से शेषम्मा ही दोनों को पाल-पोस रही थी । उसने उसे पद्दालु की पत्नी पुल्ली से दूध पिलवाया ।

रामी और मल्ली की उम्र में सिर्फ एक महीने का फर्क था । दोनों ने एक ही मां का दूध पिया था, शायद इसी कारण जब कभी वे मिलतीं तो इस तरह मिलती जैसे बरसों से बिछुड़ी हुई बहनें हों । दोनों गले लगतीं ।

"क्या मल्ली, उस चमारिन को यों गले लगती है ? अगर कोई देखेगा तो क्या सोचेगा ?" शुरू-शुरू में सुंदरी अपनी सास, शेषम्मा, से पूछा करती ।

"उसने उसकी मां का दूध जो पिया है । फिर भी भाभी, तुम किस जमाने की बात कर रही हो ? आजकल कौन चमार, और कौन किसान ? कौन देखता है यह सब ?" राजू कहा करता ।

राजू की नये जमाने की नयी बातें उस घर में मन से कोई नहीं मानता । पुराने रीति-रिवाज अच्छे हैं । जाने, इन नयी बातों से क्या खतरा आन पड़े ? फिर भी अनजाने ही दिन बदलते जा रहे हैं, लोगों के खयालात बदल रहे हैं और राजू आने वाले कल का प्रतिनिधि है । ऐसा कुछ विचार घर वालों के मन में भी था और गांव वालों के मन में भी । सारा गांव राजू को तो मानता था, पर उसके विचारों को नहीं ।

अगर किसी ने उसे पूरी तरह समझा और माना था, तो वह मल्ली थी । वह क्यों उसे

मानती थी, इसके पीछे कोई विशेष तर्क नहीं था। राजू भाई सिवाय सच के कुछ कहेंगे नहीं। सिवाय अच्छाई के और कुछ करेंगे नहीं। यद्यपि उसने यों ही, उसे पढ़ने के लिए कहा था, पर मल्ली के लिए उसका कहना वेद-वाक्य की तरह था।

मल्ली का गुरु था पुजारी। उन दोनों में निरस्वार्थ स्नेह का संबंध था। उसके सीधे-सादे मन में, और उसके बच्चों के-से व्यवहार में पुजारी को उसकी आराध्य माता के अंश दिखायी देते थे। पुजारी के लिए मंदिर की मां, मां भी थी और शिशु भी। मल्ली भी उसके लिए यही थी। मां का नाम भी मल्लम्मा था।

लेकिन यह बात नहीं कि मल्ली में लौकिक जिज्ञासा थी ही नहीं। वह जानती थी कि उसका पढ़ना-लिखना, घर में सब को मखौल-सा लगता है, खासकर सुंदरम्मा को। इसलिए रोज शाम, पढ़ने के बाद वह पुस्तकों को मंदिर में, माता की मूर्ति के पीछे छुपाकर चली आती। अगर यह सब जानकर सुंदरम्मा उसका उपहास भी करती तो वह भी हंस-हंसाकर उसे भुला देती। अगर उसे बताया ही न होता, तो कोई बात ही न थी।

पर एक बात मल्ली ने किसी को न जानने दी। यह बात उसने पुजारी को भी नहीं बतायी। दस दिन में ही वह अक्षर सीख गयी थी। वह कागज के पुर्जे लेकर, उन पर राजू के नाम छोटी-छोटी चिट्ठियां लिखती। पहली चिट्ठी इस प्रकार थी : "कल झींगे का सालन कैसा लगा था ? उसे मैंने बनाया था।"

वह नहीं जानती थी कि चिट्ठी के नीचे हस्ताक्षर भी होने चाहिए। न वह यह ही चाहती थी कि वह चिट्ठी राजू को मिले। अगर वह चिट्ठी राजू की नजर में पड़ जाती, तो शरम के मारे गड़-सी जाती। उसे किसी और बात की कोई शरम-वरम न थी। पर ये चिट्ठियां उसके लिए छिपे खजानों की तरह थीं। वह खजाना किसी की नजर में नहीं पड़ना चाहिए। किसी को यह भी नहीं पता लगना चाहिए कि उसके पास ये चिट्ठियां थीं। होने को तो उन खतों में कुछ भी नहीं था, परंतु उसके लिए वे बहुत बड़ी-बड़ी बातें थीं। यह भेद उसकी अधजगी लौकिक इच्छा को मालूम था। इसलिए वह उन्हें बड़ी हिफाजत से छुपाये हुए थी।

"चमार की दी हुई किर-किर करने वाली चप्पलें बड़ी अच्छी हैं, क्यों नहीं पहनते उन्हें ?"

"आम के पेड़ पर बड़ा बौर आया है।"

"कल लक्ष्मी बहन कांचीपुर की साड़ी पहनकर मंदिर आयी थी। कितनी अच्छी लगती थी वह ! बिलकुल लक्ष्मी देवी की तरह।"

"नये घर के दक्षिण की ओर मैंने एक गुलाब का पौधा लगाया है, घर पूरा होते ही, उस पर फूल लगने चाहिए।"

इस तरह की कितनी ही और चिट्ठियां थीं। पुजारी के यहां पढ़ने के बाद मल्ली नहर पार कर, कलमी आम के बाग में आती। राजू उस बाग के बीच में अपने लिए एक घर बनवा रहा था – नये ढंग का नया बंगला। इस बारे में भी, राजू और उसके घर वालों में थोड़ी-बहुत बहस हुई थी। कोई नहीं चाहता था कि शादी के बाद, वह अपना घर-बार अलग बसाये। पर राजू ने साफ-साफ कह दिया था कि वह बड़े घर में हरगिज नहीं रहेगा। उसने यह भी कहा कि घर

बदलने के कारण,उसका अपने घर से,परिवार से ही प्रेम उठ जायेगा,यह सोचना गलत था। अगर वह अलग रहेगा तो अपनी सुविधा के लिए ही। कुछ बातों में मिल-जुलकर रहना अच्छा है,और कुछ बातों में अलग रहना,एकांत अच्छा है। जब भाई की शादी हुई थी,तब भी उसने यही बात कही थी। पर भाई ने उसकी यह बात मानी नहीं थी।

"क्या तुम मेरी बदनामी करना चाहते हो? चाहते हो,लोग कहें कि घर में मैंने पैर क्या रखा कि परिवार में दरारें डाल दीं?" सुंदरम्मा ने कहा था।

सुब्बय्या जानता था कि चाहे कुछ भी हो,राजू अपनी जिद छोड़ने वाला नहीं। इसलिए वह उसकी बात मान गया था।

मगर रामय्या चौधरी को यह सब अच्छा नहीं लग रहा था।

"अरे जमाई बेटे,ये सब नयी बातें हमें पसंद नहीं हैं। तुम चाहे कुछ भी कहो,दस-बीस में रहना ही अच्छा है। क्या बड़े घर में तुम्हारे लिए जगह ही नहीं है?" उसने तभी यह कहा था जबकि नये घर की नींव ऊपर उठ रही थी।

"दिल मिलने चाहिए,चाहे एक घर में मिलकर रहो या अलग-अलग। वेंकन्ना भाई की मां से किसी बात पर नहीं पटती,उस हालत में अलग-अलग रहना ही अच्छा है न?" राजू ने कहा।

"मैं तुम्हारे पिता की तरह,लड़कों की बात मानने वाला नहीं हूं। हमारे घर में वेंकन्ना बढ़ कर बात करके तो देखे,चमड़ी उधेड़कर रख दूंगा।"

"जरा सोचिए तो,जलती आग पर घड़ा उड़ेल देने से,क्या आग बुझ जायेगी? घड़ा हटाया नहीं कि,वह फिर भभकने लगेगी। जब तुम घर में नहीं होते,तो क्या सास-बहू में तू-तू मैं-मैं नहीं होती? और वेंकन्ना क्या पत्नी की तरफदारी नहीं करता? शायद तुम यह नहीं जानते हो? मैं कह रहा हूं कि जमाना बदल गया है,पुराने जमाने के तौर-तरीके बरतते रहने में क्या फायदा है? अब यह मिले-जुले परिवार का सिलसिला नहीं चलेगा।"

"अरे,तुम लोग हद से ज्यादा अक्लमंद हो गये हो," कहकर रामय्या चौधरी चला गया। वह जानता था कि उसकी पत्नी और बहू में घड़ी भर भी नहीं पटती थी और दोनों केवल उसके डर से मुंह सीये रखती थीं। वह घर से निकला नहीं कि तूफान उठ खड़ा होता था। फिर भी, वह राजू की नये जमाने की नयी बातें बिलकुल पसंद नहीं करता था। उसकी नजर में पुरानी बातें ही ठीक थीं। अगर पुराने रीति-रिवाज चले गये तो दुनिया ही उल्टी चलने लगेगी। किंतु रामय्या यह भी जानता था कि राजू का मन साफ है और वह बड़ों का सम्मान करता था। उसकी लगन और शान देखकर,रामय्या को भी उस पर गर्व था। उसके लड़के की तरह वह मन की बात छिपाकर,बड़ों को प्रभावित करने के लिए फिजूल बातें नहीं करता था।

रोज जब अंधेरा छाने लगता,मल्ली राजू के नये बंगले के पास आती। उस दिन जो खास बात होती,ईंटों के ढेर पर बैठकर,उस पर एक चिट्ठी लिखती। वह गांठ से एक पुराना कागज निकालती,उस पर कुछ लिखती,फिर उसे गांठ में रख लेती।

चिट्ठियों का बंडल हमेशा उसी के पास रहता। वह उन्हें लिखती भी अंधेरे में ही थी,कि

कहीं उन पर रोशनी पड़े और उसका रहस्य न खुल जाये। दीये की रोशनी में भी, वह उन्हें निकालकर न पढ़ती। पर अपनी सारी चिट्ठियां उसे जबानी याद थीं।

उस दिन, नये घर में नये दरवाजे और नयी खिड़कियां रखी गयी थीं।

"अरे, इस घर में तो खिड़कियां ही खिड़कियां हैं। सारा घर बेदरो-दीवार दिखायी देता है," शेषम्मा ने राजू से कहा।

"हवा और रोशनी भी तो आयेगी," राजू ने कहा।

उसके मां-बाप बेखबर थे कि किस ढंग से नया घर बनाया जा रहा था।

"यहां मैं बोरिंग करवाऊंगा। इंजीनियर कह रहा था कि पच्चीस फुट नीचे अच्छा पानी आयेगा। इस तरफ साग-सब्जी लगाऊंगा और उस तरफ फूलों के पौधे।" राजू जब यह सब कह रहा था, तो उसके मां-बाप को लग रहा था जैसे वह उन्हें कोई अजीब दुनिया दिखा रहा हो।

गंगप्पा ने राजू से कहा, "भैया, मल्ली के लिए भी जरा कोई अच्छा संबंध ढूंढो, शादी करके उसे भी विदा कर देंगे।"

"विदा कहां करोगे ? मैं शादी ही नहीं करूंगी," मल्ली ने कहा।

गंगप्पा ने यह बात हालांकि यों ही नहीं कही थी, पर किसी ने भी उसकी बात पर विशेष ध्यान नहीं दिया था। लेकिन मल्ली के मन में उसकी बात घूम रही थी। दोपहर को जब वह खेतों की मुंडेरों पर घूमती, तो इस बात की जुगाली-सी करती।

जब वह नये घर के पास आयी तो राजू वगैरह और अन्य लोग अपना सामान लेकर घर जा रहे थे। घर के उत्तर के बाग में, नींबू के पेड़ के नीचे पत्थरों के ढेर पर वह बैठ गयी। ऐसी बात नहीं थी कि मल्ली जानती ही न हो कि लड़कियों की शादी होती है और वे अपनी ससुराल चली जाती हैं। पर वह फूफा को, फूफी को, रामी को, भाई को और खेतों को और घर को छोड़ कर कहां जायेगी ? कहां जा सकती है वह ? उसके जाने के बाद, कौन गाय को चारा देगा ? नींबू के पेड़ में पानी कौन देगा ? इन सबके लिए उसका उस घर में होना जरूरी है, और ये सब उसके वहां रहने के लिए जरूरी हैं। जब कभी शादी की बात मन में आती, तो वह सोचती कि वह तो किसी न किसी दिन होकर रहेगी, फिर क्यों उसके बारे में माथा-पच्ची की जाये ? ज्यों-ज्यों अंधेरा बढ़ता गया, उसके विचार भी करवट लेने लगे। उसने नींबू का पत्ता तोड़कर चबाया, पर उसको उसका कड़वापन भी न मालूम हुआ।

तुरंत उसने गांठ में से लिफाफा निकाला। आज वह कागज लाना भूल गयी थी। उसमें एक पुरानी चिट्ठी थी जिस पर लिखा था, "गाय की खीस तुमको बहुत अच्छी लगती है न ?" उसकी दूसरी ओर आज उसे लिखना था। उसने जाकेट में से पेंसिल निकाली। पर उसे न सूझा कि क्या लिखा जाये। बहुत सोचने पर एक अक्षर भी याद न आया। न जाने वह कितनी देर वहां उसी तरह बैठी रही। आखिर उसने अनजाने लिख ही दिया – "मैं शादी ही नहीं करूंगी।"

लिखने के बाद उसे याद आया कि उसने क्या लिखा था। फिर वह हंस दी। उसे ऐसा

लगा जैसे मन से कोई भारी बोझ हट गया हो ।

घर के अंदर बैटरी की रोशनी हुई । वहां राजू और लक्ष्मी थे ।

"देर हो गयी है, मैं चली जाऊंगी," लक्ष्मी ने कहा ।

"अंधेरे में अकेली कैसे जाओगी ? मैं छोड़ आऊंगा," राजू ने कहा ।

"बाप रे बाप, अगर किसी ने देख लिया तो !"

"देख लिया तो क्या हो गया ? आज नहीं तो कल मेरी पत्नी बनने ही जा रही हो न ?"

"अगर यही बात है, तो गांठ बांधकर, दिन-रात गांव भर में जुलूस निकालोगे क्या ?"

"मैं तो वैसे ही घूमूंगा, अगर मर्जी न हो तो अभी ही बता दो ।"

"ठहरिये भी, अगर किसी ने देख लिया तो ?"

"हां, देख लिया तो ? खैर ! मैं भी देख रहा हूं । परसों या कल तुम क्यों अंधेरे के वक्त, नहर पार करके, खेत में आयीं ?"

"सब्जी के लिए ।"

"आहा, आहा, इतने सारे नौकर-चाकर हैं घर में, और तुम्हारे पिताजी तुमसे साग-सब्जी मंगवा रहे हैं ? मैं जानता हूं, तू क्यों यहां आ जाती है ।"

"क्यों ?"

"यह देखने के लिए कि हमारा घर कैसा है, कितना बन गया है ।"

लक्ष्मी चुप रही ।

"शरमा क्यों रही है ? आ, दिखाता हूं घर । दिन में भी तुम देखने में शरमाओगी, इसीलिए मैं तुम्हें इस तरफ ले आया ।"

मल्ली का दिल धक-धक करने लगा । उस दृश्य को देखने के कारण नहीं । उसकी तो कोई परवाह ही नहीं करता था । न लक्ष्मी और न भाई को ही उसके कारण कोई झिझक थी । उसकी घबराहट का कारण था – उसकी चिट्ठियों की पोटली, जिसे वह इतनी हिफाजत से छुपाये हुई थी । उस अंधेरे में, लक्ष्मी और भाई न उसकी चिट्ठियों की पोटली देख सकते थे और न उसे ही । फिर भी न मालूम क्यों वह घबरा रही थी । जब उसने पोटली छुपाना चाही, तो उसके हाथ कांपने लगे । आंचल नीचे सरक गया । पोटली नीचे गिर गयी । एक हाथ में आंचल और दूसरे में चिट्ठियों की पोटली पकड़े उसे कहीं दूर चले जाना चाहिए था ।

उस अंधेरे में, जहां न आगे दिखायी देता था, न पीछे, वह जोर से भागी । अभी उसने एक कदम ही आगे रखा था कि उसके पैर में नींबू का कांटा चुभ गया । "उईऽऽई !" करके वह धड़ाम से नीचे गिरी । उसे तुरंत बैटरी की रोशनी दिखायी दी, जो उसे ही खोजती आ रही थी । उसने चिट्ठियों की पोटली जाकेट में छिपा ली । आंचल भी जल्दी-जल्दी खोंस लिया ।

"कौन है वहां ?" राजू ने पूछा ।

राजू की आवाज सुनते ही, उसकी सारी घबराहट जाती रही ।

"मैं ही हूं, जरा कांटा चुभ गया है," मल्ली ने कहा । उसकी आवाज सुनकर, लक्ष्मी जो तब तक उठती दीवार के पीछे छुपी हुई थी, सामने आयी । राजू ने कांटा निकाल दिया, मल्ली

ने दर्द से फिर आह भरी । उस दर्द के पीछे, खुशी भी थी, और उस खुशी के पीछे, कहीं कोई कांटा भी था । मल्ली धीमे से उठी ।

"क्या घर देख-दाख लिया है, लक्ष्मी बहन ? आओ अब चलें, मैं तुम्हें तुम्हारे घर छोड़ आऊंगी ।"

"आ," लक्ष्मी ने कहा ।

"तो क्या मैं न आऊं ?" राजू ने पूछा ।

"तुम काहे को आते हो ?" मल्ली ने कहा ।

चूंकि लक्ष्मी को मल्ली का साथ मिल गया था, इसलिए उसने मल्लम्मा माता का लाख शुक्र मनाया । अगर मल्ली न होती, तो उसके मना करने पर भी, राजू जिद करके उसके साथ आता ही । वह उसकी जिद जानती थी । सब उसे घर में चिढ़ाते । वह शरम के मारे कोई जवाब भी न दे पाती । फिर भाभी की जीभ तो कैंची थी ।

बिना राजू की अनुमति की प्रतीक्षा किये, वह मल्ली के साथ चल पड़ी ।

राजू ने ट्रैक्टर के पहियों पर लोहे की पटरियां लगा दीं ताकि सपाट की हुई जमीन पर वे फिसलने न लगें । एक बड़े डब्बे में, पद्दालु और नौकरों ने जौ के बीज डाले । राजू ट्रैक्टर पर सवार हुआ, एक कल के दबाते ही ट्रैक्टर 'डुर-डुर डुर-डुर' करने लगा । उससे पहले ही बत्तीस एकड़ का खेत ट्रैक्टर ने दो घंटे में सपाट कर दिया था । हाथी की सूंड की तरह की एक नली में, उसने जौ से भरा डिब्बा लटका दिया, और उस नली को पिछली ओर मोड़ दिया । ट्रैक्टर चलाते-चलाते उसने एक और कल को खींचा और उस नली में से जौ के बीज इस तरह गिरने लगे जैसे उन्हें बिखेरकर कोई बो रहा हो । दो मिनट में ट्रैक्टर मुंडेर के एक छोर तक पहुंच गया, मुड़ते वक्त उसने कल को दबाया, जौ के बीजों का गिरना बंद हो गया । मुड़ने के बाद, फिर उसने कल को खींचा और नली में से बीज गिरने लगे ।

एक घंटे में ही बत्तीस एकड़ के खेत में , जौ की बुवाई खतम हो गयी ।

"क्यों मामा, क्या तुम्हारा खेत भी जोत दूं ?" राजू ने कहा ।

"नहीं भाई, तब बेचारे कुलियों की क्या गति होगी ?" रामय्या ने पूछा ।

धर्मराजू कह रहा था, "क्या मैंने नहीं बताया था ? अब तुम मारे-मारे भीख मांगते फिरोगे । सुब्बय्या चौधरी ने तीन सौ एकड़ की खेती स्वयं करनी शुरू कर दी है । तब बेचारे छोटे-मोटे किसानों की, और मजदूरों की क्या हालत होगी ? रामय्या चौधरी पुराने जमाने के आदमी हैं, इसलिए वह मशीन से खेती करना ही नहीं चाहते । फिर भी, अगर शादी के बाद, दोनों परिवार एक हो गये, तो रामय्या भी कब तक दामाद की बात माने बगैर रहेगा ? अगर वेंकन्ना ने चाहा, तो कल ही वह एक और ट्रैक्टर खरीद लायेगा । तब तुम सबको बोरिया-बिस्तर उठाकर कहीं और पेट के बल सरककर जाना होगा । इसलिए तो रूस वाले कहते हैं, सब को बराबर खेत बांटे जाने चाहिए ।"

तालाब के किनारे, पीपल के पेड़ के नीचे धर्मराजू की सभा लगी हुई थी । सभा लगाने का मतलब था कि वह चुरट सुलगाकर वहां बैठ जाता और जो कोई उस तरफ से गुजरता, उसे

उसके नाम से इस तरह पुकारता, जैसे उसके हाल-चाल जानना चाहता हो।

पहले ही, छोटे-मोटे किसान और मजदूर डर-डरा रहे थे। अब उनका यह डर और भी बढ़ गया था। पेंटय्या ने कहा कि वह खुद सुब्बय्या के पास जाकर यह बात पूछ आया था, अब वह उसकी बात सुना रहा था :

"पता है, उन्होंने क्या कहा था? 'इस साल कुलियों के काम करने का सवाल ही नहीं उठता, तुम्हें जो कुछ मिलना है वह मिल जायेगा। जो पहले खेती कर रहे थे, उनको जितना देना होता था, उतना इस साल भी देंगे। हम क्या तुम्हारे मुख से तुम्हारा कौर छीनेंगे?' और छोटे जमींदार ने कहा, 'अरे पेंटय्या, अगर फसल अच्छी हुई, तो सारे गांव को लाभ होगा। जब मशीन से खेती करने लगेंगे, तो इतने सारे लोगों की जरूरत न होगी। इसलिए तुम लोगों को और कुछ काम-धंधा ढूंढना होगा। मैं तुम्हें एक मशीन खरीद दूंगा, तुम भी शहरी चप्पल बनाना शुरू कर देना।"

"अरे तुम्हारे आंसू पोंछने के लिए यह सब कहते हैं। तुम्हें काम से हटाने के बाद, अगर उन्होंने अपना वायदा पूरा न किया और तुम्हारी सहायता न की, तो तुम क्या करोगे? वह ट्रैक्टर क्या आया गांव में, आफत ही आ पड़ी।"

तालाब के पश्चिमी किनारे पर माता का मंदिर था और पूर्व की तरफ पीपल के पेड़ के नीचे चबूतरा। चबूतरे पर मुंशी सभा कर रहा था तो रंगा और लिंगराजू पानी के किनारे बैठकर, पानी में कंकड़ फेंक रहे थे। सवेरे और शाम, दोनों वहीं बैठा करते थे। बगल में ही घाट था। घाट के इस तरफ बड़ के पेड़ के नीचे, कपड़े धोने का घाट था। वहां स्त्रियां कपड़े धोया करती थीं और घाट से पानी ले जाया करती थीं। जब वे पानी से भरे घड़े कंधे पर रखतीं और जब कपड़े धोने के लिए वे हाथ उठाती थीं तो स्त्रियों के शरीर में कैसे लहरें उठती थीं, वे दोनों गौर से देखा करते थे। अगर स्त्रियां उनको भातीं, तो ठीकरे घाट की ओर फेंकते। घाट पर गरीब घरों की स्त्रियां ही आती थीं। संपन्न घरों की स्त्रियां घाट पर न आती थीं। गरीब स्त्रियां अपने घरों में रंगा की शिकायत भी न कर पाती थीं, न उनके घरवालों में ही इतना दम था कि रामय्या चौधरी से जाकर फरियाद करें और रंगा व लिंगराजू को सजा दिलवाएं।

रंगा ने रामी को आते देखा। वह सिर पर घास का गट्ठर रखे हुए खेत से चली आ रही थी। रंगा ने ठीकरा लेकर निशाना ताना। हवा में उसकी दिशा बदल गयी। वह जाकर पुजारी के सिर में लगा। वह किनारे की ओर जा रहा था। रामी ने उनका पत्थर फेंकना देख लिया था।

"अरे," उसके मुख से निकला और उस घबराहट में, उसका घास का गट्ठर नीचे गिर गया।

"लगा नहीं, जरा घने बाल हैं न!" पुजारी ने कहा। वह उस जगह आया जहां रंगा और लिंगराजू बैठे हुए थे। वहां से उठना रंगा की शान के खिलाफ था। लिंगराजू के लिए शान-वान की कोई बात न ही थी। वह झट से उठा और चबूतरे के पास, अपने पिता के पीछे जा बैठा।

"यह अच्छा नहीं है रंगा, अगर वह ठीकरा किसी ऐसी जगह लगता जहां नहीं लगना

चाहिए था, तो आंख जा सकती थी, सिर पर बड़ी चोट आ सकती थी," पुजारी ने दयनीय चेहरा बनाकर, बड़े धीमे-धीमे कहा ।

"पुजारी जी, यह तो रोज का सिलसिला है, घाट पर आना, स्त्रियों को देख आंख मारना, ठीकरे उछालना, इनका रोजमर्रा का काम है," रामी ने घास का गट्ठर उठाते हुए कहा ।

"अरे मुंह बंद कर, क्या बकवास कर रही है, बड़े घर के लड़के के बारे में कुछ तमीज से काम ले," धर्मराजू ने कहा ।

"बड़े घर के हैं, तो बड़ी तमीज होनी चाहिए," कहकर रामी वहां से चली गयी ।

"सुब्बय्या चौधरी के बल पर इसका घमंड जरा बढ़ गया है," लिंगराजू ने कहा । रामी को जाता देख, रंगा उसकी ओर घूर-घूरकर देखने लगा ।

जौ के पौधे काफी बड़े हो गये थे । तीस एकड़ का खेत, इतना हरा-भरा था कि कश्मीरी कालीन-सा लगता था । जहां तक नजर जाती, वहां तक उसकी एक ही ऊंचाई थी । वेंकन्ना ने ताल के पास बैठकर यह सब आश्चर्य के साथ देखा । फिर उसने अपने खेत की ओर देखा, उससे देखा न गया । पचास एकड़ का खेत था, बीच में चार एकड़ सूरप्पा शास्त्री के थे । अगर उसे भी मिला लिया गया और बीच की मुंडेरें भी उठा दी गयीं और मशीन से खेती की गयी और मैं इस जगह से बैठकर ...छिः ! यहां बैठने की क्या जरूरत है ? ताल के चारों ओर एक सड़क बनायेंगे और मैं और पत्नी टहलने निकलेंगे । कार से उतर कर, कार के सहारे खड़े होकर खेत को देखेंगे । तब तक लड़का भी पैदा हो जायेगा । लड़का कार के बोनट पर बैठेगा । अगर इस मीठे सपने में कहीं कोई मक्खी की तरह था, तो वह था उनका पिता । सुब्बय्या अपने लड़के की सुनता था और मेरे पिता मेरी बात नहीं सुनते हैं । परंतु उसे अपने पिता की जिद पर उतना असंतोष न था, जितना कि सुब्बय्या की नरमी पर । राजू और उनके खेत को देखकर उसे ईर्ष्या होती थी । वह इन बातों में इस तरह खोया रहा कि चुरट सुलगाना भी भूल गया । वह बुझ चुकी थी, उसने उसे मुंह से निकालकर जमीन पर दे मारा । वेंकन्ना की जलन जरा कम हुई । वह घर की ओर जाने के लिए उठा ।

रामी अंधेरा होने तक घास काटती रही, चूंकि उस तरफ आम के पेड़ की छांह में, गाय के होने वाले बछड़े के लिए गंगप्पा रस्सी बटवा रहा था ।

रामी जब तक घास का गट्ठर लेकर उठ नहीं जाती, तब तक उसका रस्सी बांटना खत्म न होता । जब तक वह उठ न जाये, रामी भी उठना नहीं चाहती थी । उतने मोटे आदमी को अपने पास आने के लिए इतना हिचकता-डरता देख रामी को मजा आता । गंगप्पा का बावलापन मानो उसके मुंह पर ही छा गया था । रामी उसे चाव से देखा करती । जब कभी रामी दिखायी देती, गंगप्पा कुछ करने की सोचता, पर उसे पता न था कि क्या किया जाये । प्यास के मारे गला सूख जाता था, हाथ कांपने लगते थे, गले पर पसीना फूट पड़ता था ।

और बटते-बटते, उस रस्सी में इतनी अकड़ आ गयी कि वह लाठी-सी लगने लगी । गंगप्पा उठा, रामी के पास जाने के लिए उसे मुंडेर पारकर तालाब के किनारे जाना था । जाया जाये कि नहीं ? उसने बायें हाथ से उस रस्सी को जोर से पकड़ लिया । दायें हाथ में लाठी थी

ही। उसमें कुछ हौसला आ गया था, वह तालाब के किनारे की ओर तेजी से चलने लगा। जाते-जाते वह एकाएक रुका, क्योंकि रंगा और लिंगराजू, रामी के दोनों ओर खड़े थे और वह घास काट रही थी।

"क्यों छोरी, एक गट्ठर घास कितने का है ?" रंगा ने पूछा। लड़कियों से बातचीत छेड़ने में, रंगा बड़ा माहिर था। वह इधर-उधर की बातें बड़ी नजाकत से पूछता और एक लिंगराजू था, जिसके मुंह से बात तक नहीं निकलती थी। इसलिए वह रंगा को खूब मानता था। पर रामी ने कोई जवाब न दिया, मानो उससे सवाल ही न किया गया हो। उसने घास काटना बंद कर दिया और गट्ठर बनाने लगी।

"क्या मैं बांध दूं ?" रंगा ने पूछा। उसने उसके जवाब का भी इंतजार नहीं किया और घास में हाथ रख उसका हाथ पकड़ लिया। रामी ने तुरंत रंगा के गाल पर अच्छी-खासी चपत जमा दी। रंगा गिरते-गिरते बचा। लिंगा दो कदम पीछे हट गया और गंगप्पा अपने गाल सहलाने लगा।

"अरे बदचलन कहीं की, तुझे इतना घमंड !" रंगा उसकी ओर लपका। रामी ने धीमे से अपना दंतिया उठाया। रंगा झट रुक गया।

"अभी तो चपत ही लगी है, फिर कभी ऐसी हरकतें कीं तो जान से भी हाथ धो बैठोगे," रामी ने कहा।

रंगा पीछे हटा। लिंगराजू को रामी के पास से होकर, रंगा के पास जाना था। रामी ने हाथ में दंतिया पकड़ रखा था, इसलिए उसे पार करके जाना खतरा मोल लेना था। वह भी तुरंत पीछे मुड़ा। हाथी-सा बड़ा गंगप्पा ही, एक हाथ में लाठी और दूसरे में लाठी-सी रस्सी लिये स्तब्ध खड़ा रहा। लिंगराजू को न सूझा कि किस तरफ भागा जाये, वह तालाब की ओर भागा। भय के कारण उसमें इतनी शक्ति आ गयी थी कि वह दस-पांच छलांगों में तालाब के उस पार चला गया। और वहां से सिर पर पैर रखकर मंगी के घर की ओर भागा।

"शा, शा, शा बा श..." गंगप्पा इस तरह हकला रहा था कि उसके मुंह से ठीक बात भी न निकल रही थी। पेड़-सा आदमी, एक तरफ झुक-सा गया था, जैसे कोई तूफान आया हो। हंसी के कारण उसका दम फूल गया था, जैसे-तैसे उसने सुब्बय्या के परिवार को बता ही दिया, "रामी ने रंगा को झापड़ मारा।"

"मां-बाप नहीं हैं, यह सोच रामय्या और सूरालु ने उसको लाड़-प्यार किया और उसी लाड़-प्यार ने उसे खराब कर दिया। उसे चपत लगनी ही चाहिए थी," सुब्बय्या ने कहा।

लड़के को देखते ही, धर्मराजू आग-बबूला हो गया। यह गधा हमेशा बेमौके आता था। तभी मंगी कोल्हू के काम से फारिग हुई थी। उसका देवर तिल धोने, तालाब चला गया था। मंगी का आंचल पकड़कर धर्मराजू उसे अंदर खींच रहा था। वह भी "यह भी क्या खिलवाड़ है !" कहकर अपनी खीझ को मुस्कराहट में दबाते हुए, अंदर चली गयी। उसी समय लिंगराजू वहां आ टपका। मंगी का आंचल छोड़ धर्मराजू उबलता हुआ लड़के की तरफ बढ़ा। लिंगराजू के गीले कपड़े और उसको कांपता देख, उसका गुस्सा जरा कम हुआ।

"पी पी पी टा है," लिंगराजू हकलाया। उसकी घबराहट अभी कम न हुई थी।

"किसने ?" धर्मराजू ने पूछा।

"रामी ने।"

"क्या तुझे मारा है ?"

"मुझे नहीं, रंगा को।"

जब बात पूरी तरह समझ में आयी, तो धर्मराजू जल्दी में वहां से चला गया और लड़के की देख-भाल का भार मंगी पर छोड़ता गया। एक चमार की लड़की ने एक बड़े किसान के लड़के को पीटा है, इससे बढ़कर और जरूरी बात उस गांव में क्या होती ? जब कभी ऐसी घटना होती थी, तो धर्मराजू अपना सुख संतोष, शौक, मजे, सब छोड़-छाड़ देता, अपनी सारी ताकत और तवज्जह उस पर लगा देता।

रामी ने जब इस घटना के बारे में अपने मां-बाप से कहा, तो पद्दालु गुस्से के कारण भभक उठा। रामी की मां ने सोचा कि जाने वह उस गुस्से में क्या कर बैठे। उसने अपनी लड़की को डांटा-डपटा।

"अरे, बड़े घर के लड़के पर तूने क्यों हाथ उठाया ?" पुल्ली ने कहा।

"हाथ न उठाती तो क्या करती ? क्या तुम चाहती हो कि वह उसको चुपचाप मनमानी करने देती ?" पद्दालु ने कहा।

"तुम पर भी क्या गुस्सा सवार हुआ है ? अगर उनके बड़ों से शिकायत कर देते, तो वे खुद उन्हें रास्ते पर ले आते," पल्ली ने कहा।

"वह भी करेंगे, मैं अभी जाकर उनसे कहता हूं। अगर फिर कभी ऐसा काम किया, तो लाठी से उसकी टांग तोड़कर रख दूंगा।" अपना डंडा लेकर पद्दालु निकल पड़ा।

छोटी गली के चौपाल में बैठकर, रंगा, वेंकन्ना, और धर्मराजू जो अनहोनी हो गयी थी, उस पर गरमा रहे थे।

"वेंकन्ना, वह भी ऐसी कौन-सी दूध की धुली हुई है ? अपना रंगा जरा रंगीला है। अगर उसने जरा छेड़छाड़ की भी थी, तो क्या उसे मारना चाहिए था ? क्या कभी इस तरह की घटना इस गांव में घटी है ? बड़े किसान के खबर पहुंचाने भर की देर होती थी, स्त्री कैसी भी हो भागी-भागी आती थी। आजकल जाने गांव भी क्या हो गया है ! खैर, अगर मरजी न भी थी तो, कह देती कि मुझसे छेड़-छाड़ न करो, चपत मारने की क्या जरूरत थी ?" धर्मराजू ने कहा।

"अभी हुआ ही क्या है, मैं भी उसकी खबर लेकर रहूंगा," रंगा ने गुस्से से कहा।

"बंद कर जुबान। अगर पिताजी को मालूम हो गया तो तेरी चमड़ी उधड़वा देंगे। इस तरह के काम उनको हरगिज पसंद नहीं हैं," वेंकन्ना ने कहा।

इस बीच पिता को मालूम भी हो गया था। "क्या बात है, रंगा ?" वह गुर्राता हुआ वहीं आ गया था। पद्दालु, उसके पीछे चला आ रहा था।

"क्या यह बात सच है ?" रामय्या ने पूछा।

"नहीं भाई, यह बात नहीं है। लड़कपन है, इस उम्र में जाने हमने भी क्या नहीं किया

था ?" धर्मराजू ने रंगा की तरफदारी की।

"तुम ठहरो जी। क्या-क्या हुआ था, बोलते क्यों नहीं ?"

"कुछ नहीं, वह घास काट रही थी, तो मैंने पूछा कि गट्ठर कितने में आयेगा, बस !" रंगा ने मुंह सिकोड़कर इस तरह कहा जैसे एक लाड़ला अपने पिता के सामने कहता है।

"तुम्हें घास की क्या जरूरत थी ? क्या खानी थी ?"

"हुजूर, आपको देखकर सारा गांव लिहाज कर रहा है। नहीं तो घाट पर, हाट के दिन, इनके ऐसे बुरे कारनामे होते हैं कि कुछ न पूछिए," पद्दालु ने कहा।

"जुबान को जरा लगाम दो। बड़ों के पास कहीं इस तरह बात की जाती है ?" धर्मराजू ने कहा।

"जो कुछ तुम्हें कहना था, तुमने कह दिया न ? अब जाओ।" रामय्या को भी एक नौकर का इस तरह बढ़-चढ़कर बात करना पसंद न था। फिर भी धर्मराजू की बात सुनकर पद्दालु अपने को काबू में न रख पाया।

"हुजूर, हम भले ही गरीब हों, हम भी अच्छे-बुरे की परवाह करते हैं। अगर फिर कभी ऐसा हुआ तो अच्छा न होगा !" वह जब आखिरी वाक्य कह रहा था तो उसके हाथ का डंडा हिला।

"अरे सुब्बय्या के घर का दाना खाकर इतना घमंड आ गया है ?" वेंकन्ना ने कहा। रामय्या ने उसकी तरफदारी तो नहीं की, पर वह भी बड़ा क्रुद्ध था।

"मैं बड़ा हूं, और इस बात में पूछताछ कर रहा हूं, तुम क्यों अपनी जुबान ढीली कर रहे हो ? बड़े-छोटे का लिहाज भी नहीं है," रामय्या ने कहा।

"है, तभी तो मैं आपसे फरियाद कर रहा हूं।" यह कहकर पद्दालु चला गया। चूंकि इस बात में विनम्रता बिलकुल नहीं थी, इसलिए रामय्या का क्रोध और बढ़ा और उसने वह गुस्सा, रंगा पर और इधर-उधर की दलीलें देने वाले धर्मराजू पर दिखाया।

"बेवकूफ कहीं का, तुम हमारी धाक ही मिट्टी में मिला रहे हो। उस चमार की डपट सुनने से तो अच्छा यही था कि तालाब में डूब मरते।"

"क्या बातें कह रहे हो ?" कहती सूरालु आयी।

"निरे बच्चे को हमारे हाथ रख उसकी मां चली गयी थी।"

"इसलिए क्या जब वह खुले सांड की तरह गांव में मटरगश्ती करे तो हम आंखें मूंद लें ? अगर हम सब अनदेखा कर भी दें, तो क्या गांव वाले चुप बैठे रहेंगे ? अगर इसकी यही हरकतें रहीं, तो एक दिन इसके हाथ-पैर तोड़-ताड़कर, इसे घर बिठा देंगे," रामय्या ने कहा।

"क्या भाई, यह क्या कह रहे हो ? वह कह तो रहा है कि मैंने कुछ नहीं किया है। उस गधे पद्दालु की बात मानकर तुम...।" धर्मराजू ने कुछ कहना चाहा।

"तुम पहले इस घर से निकलो। तुम्हीं ने यह सब शह दे रखी है," रामय्या ने कहा और धर्मराजू इस तरह मुस्कराता रहा, जैसे कुछ कहा ही न गया हो। निंदा, तिरस्कार, इन सबको मुस्कराहट के साथ सहने की आदत धर्मराजू ने बहुत ही अभ्यास के बाद बना ली थी। पति

का क्रोध देख, सूरालु सिसकने लगी।

"बहन, तुम अंदर चलो। क्या तुम नहीं जानतीं कि भाई का गुस्सा पटाखे की तरह होता है! चलो।" धर्मराजू ने सूरालु को घर के अंदर भेजा। फिर रामय्या का हाथ पकड़कर, उसे बड़ी गली की चौपाल की ओर ले गया। कुछ दूर जाने के बाद उससे कहने लगा, "क्या वह कोई बैरागी है? हर किसी में, जो नमक-मिर्च खाता है, कोई न कोई कमी होती ही है। क्या तुम इससे कोई अच्छे थे इस उम्र में? तुम इस चौपाल में, दाई सरसम्मा को क्यों बहलाया करते थे? क्या ये सब बच्चे नहीं जानते हैं?"

रामय्या का, सरसम्मा दाई से संबंध था। पोता, पैदा होते ही गुजर गया। जब सारा घर दुख में डूबा हुआ था, तब बड़ी गली की चौपाल में, सरसम्मा ने ही उसका मन बहलाया था और रंगा ने छुपे-छुपे यह सब देखा था, जिसका पता बाद में रामय्या को भी चल गया था। रंगा के पास उसका भेद था, रामय्या में भी उसके प्रति एक तरह की सहानुभूति थी। कितनी ही बार, रंगा द्वारा उसने दाई को खबर भिजवायी थी। जब ताया का उस पर इतना भरोसा था, तो उसे दाई के साथ संबंध बढ़ाने का साहस न हुआ। इसलिए रंगा भी जानता था कि भले ही वे उसे डांटें-डपटें, उसे बुरा-भला कर कहें, पर करेंगे कुछ नहीं। रंगा चाहे कुछ भी करे, रामय्या को कोई एतराज न था। अच्छा हो, यदि गांव में उसकी बदनामी न हो।

फाल्गुन कृष्णा पंचमी थी। यह गांव में एक प्रकार का पर्व था। उसी दिन गांव के दो बड़े चौधरी, आपस में वैवाहिक संबंध तय कर रहे थे। यही नहीं, उसी दिन फसल का मेला भी लगता था। जो कुछ धान पैदा होता उसकी पोटलियां बनाकर मल्लम्मा के मंदिर में आते और हर परिवार, मल्लम्मा की मूर्ति के सामने, एक ताड़ के पत्तों की टोकरी में, काली मिट्टी डालकर, उस पर मंत्र से पवित्र किया गया पानी फेंकता और उसमें नव धान्य बोता। अमावस्या के दिन मंदिर में मेला लगता। तब तक टोकरियों में अंकुर उग आते। फिर उन टोकरों को, एक-एक करके मंदिर के सामने रखते। एक महीने तक, ऐसा लगता, जैसे मंदिर ने हरा मुकुट पहन लिया हो।

लक्ष्मी और राजू, दोनों एक-एक टोकरा लेकर मंदिर के पास आये। दोनों तरफ दोनों परिवार वाले खड़े हो गये। मंदिर के तेल लगे चिकटे खंभे, मूर्ति के अगल-बगल में जलते दीपों की कांति में चमक रहे थे। लक्ष्मी और राजू ने, काली मिट्टी टोकरों में भरी तथा पुजारी ने नव धान्यों की पोटलियों को मूर्ति के चरणों के पास रखा। आंखें बंदकर, उसने मौन प्रार्थना की। कलश से जब वह जल डाल रहा था, तो राजू और लक्ष्मी ने उसे अंगुलियों से इस तरह छिड़का ताकि सारा टोकरा भीग जाये। फिर वह, माता के चरणों के पास से पोटलियां ले आया। उसने लक्ष्मी और राजू को एक-एक पोटली दी। दोनों ने पोटलियां खोलकर टोकरों में बीज बिखेरे। इतने सारे लोगों के सामने लक्ष्मी को राजू के पास खड़ा होना बड़ा भारी लग रहा था। कुछ लाज, कुछ भय, कुछ घबराहट, कुछ हिचकिचाहट, कुछ खुशी भी थी। अजीब-सा लग रहा था उसे! उसके हाथ कांपने लगे और नव धान्य नीचे गिर गये। इसमें लक्ष्मी को कुछ अपशकुन-सा लगा। पुजारी ने उन्हें उठाकर टोकरे में डाल दिया। राजू और लक्ष्मी ने

मूर्ति के सामने साष्टांग प्रणाम किया। दोनों हाथों में एक-एक टोकरा लेकर बाहर आये। मंदिर के इस तरफ तालाब के किनारे, करीब-करीब सारा गांव खड़ा था। मंदिर के उत्सव से बढ़कर था रामय्या और सुब्बय्या के परिवारों में होने वाला संबंध। मंदिर का उत्सव तो हर साल होता था, पर इस प्रकार का संबंध गांव में पहली बार हो रहा था।

"बाबू, हमें कब पूरी-हलवा खिलवाओगे ?" बनिये हनुमंतु ने पूछा।

"अरे, माता का उत्सव तो खत्म होने दो। अमावस के तुरंत बाद मुहूर्त है," रामय्या ने कहा।

लक्ष्मी को उसकी भाभी और मल्ली दोनों पकड़कर घर ले गये।

"अमावस से पहले मंदिर में क्यों न रंग-रोगन करवा दें ?" वेंकन्ना ने अपने पिता से कहा।

"अच्छा, तो ऐसा ही करेंगे। मालूम तो करो कितना पैसा लगेगा। शहर से बढ़िया रंग मंगवायेंगे," रामय्या ने कहा।

"मंदिर के चारों ओर चारदीवारी मैं बनवा दूंगा," सुब्बय्या ने कहा।

"चारदीवारी की बात रहने दो। रंगों की तुलना में, मंदिर का काला पत्थर ही अधिक भाता है," राजू ने कहा।

"अरे तुम भी क्या कह रहे हो ? मूर्तियों पर अगर नया रंग पोत दिया जाये तो वे कितनी अच्छी लगेंगी ! तिरुपति के मंदिर में भी तो रंग करवाये गये हैं।" वेंकन्ना ने कहा। उसे यह बुरा लग रहा था कि राजू ने, अपने पिता के चारदीवारी की बात पर तो कोई उज्र नहीं किया था, पर उसके पिता के रंगों की बात उसे पसंद नहीं आ रही थी। दोनों परिवारों में एक प्रकार की स्पर्धा-सी थी। दोनों की यह स्पर्धा गांव में गौरव पाने के लिए ही थी। रामय्या ने स्कूल के लिए जगह दी, तो सुब्बय्या ने उसके लिए झोंपड़ा बनवाया। रामय्या ने तालाब में घाट बनवाया, तो सुब्बय्या ने तालाब के किनारे, हाट के लिए छप्पर लगवाये। दोनों की स्वीकृति पर ही, कोई और पंचायत बोर्ड का प्रेसिडेंट बना करता। दोनों में, गांव की भलाई के लिए होड़-सी थी। गौरव के लिए होड़ तो थी, पर दोनों में किसी प्रकार की कोई दुश्मनी न थी। दोनों में स्वाभिमान था, गर्व था और शान थी। पर रामय्या, सुब्बय्या की अपेक्षा कुछ अधिक मिलनसार था, उसमें लगन थी। सुब्बय्या की नरमी भी गांव वालों को पसंद थी।

राजू ने उस विषय पर बात आगे न बढ़ने दी। वह टोकरा लेकर घर चला गया।

"तुम्हारा दामाद भी अजीब है। सारा गांव एक बात कहता है, और वह कुछ और," धर्मराजू ने कहा।

"कम से कम वह तुम्हारी तरह लोगों में झगड़े तो नहीं पैदा करता !" पुन्नय्या ने कहा।

"जो उसे ठीक लगता है, उसे वह बिना लाग-लपेट के कहता है।"

"करके भी दिखाता है, कुछ भी हो उसमें लगन है, नीयत है।" रामय्या ने होने वाले दामाद की प्रशंसा की।

"अरे, जब बात दूसरे की हो, तो हर कोई बिना लाग-लपेट के कह सकता है। पर जब

बात अपनी ही होती है, तो उलझन पैदा होती है। जो आदमी जोर देकर यह कहता रहा कि दहेज लेना कानून के खिलाफ है, क्या वह बत्तीस एकड़ दहेज लेने के लिए नहीं मान गया ?" धर्मराजू ने कहा।

रामय्या को इस बात का संतोष था कि गांव को दहेज के बारे में मालूम हो गया था। परंतु दहेज के बारे में बातचीत, राजू की गैरहाजिरी में, सुब्बय्या और उसमें हुई थी। अगर उसे मालूम हो गया, तो दोनों की खबर लेगा। पर दहेज न देना उसकी मान-मर्यादा के विरुद्ध था। सुब्बय्या ने भी इसको मानने में बड़ी आनाकानी की थी। रामय्या ने ही उसे मनाया था। "अगर बात बढ़ी तो लड़की के नाम ही लिख दूंगा। और जब मैं अपनी लड़की को दे रहा हूंगा तो किसी को क्या एतराज होगा ?" रामय्या ने कहा था। इस बात को जब दस आदमियों में धर्मराजू ने कहा, तो रामय्या बोला, "वह तो दहेज के लिए तैयार ही न था, मैं अपनी लड़की को ही दूंगा, यह मैंने ही सुब्बय्या से कहा था।"

"जब लड़की ही उनके घर जा रही है, तो फिर जायदाद उसके नाम हो या लड़की के, इसमें फर्क क्या पड़ता है ?" धर्मराजू ने कहा।

रामय्या जानता था कि राजू को अगर यह बात मालूम हो गयी, तो वह भी यही कहेगा, लड़की भी यही कहेगी। वह यह भी जानता था कि धर्मराजू ने शरारत के लिए ही यह बात उठायी थी।

"अरे मुंशी, तूने अपने लड़के की शादी करने की ठानी, पर वह हुई नहीं, तू क्यों दूसरों की बातों में टांग अड़ाता है ?" रामय्या ने खीझकर ताना कसा। पर धर्मराजू की चमड़ी इतनी मोटी थी कि वह इस तरह की बातों की परवाह ही न करता था। जब उसने रामय्या के मुख से 'मुंशी' सुना तो वह ताड़ गया कि उसे गुस्सा आने वाला था।

"मैं तुमसे ही इसका जिक्र करना चाहता था। मुझसे तो काम बना नहीं, तुम ही उसकी शादी करवा दो। दोनों वक्त, मुझे ही चूल्हे में हाथ जलाने होते हैं, दस बरस से यह नरक भोग रहा हूं। जिस घर में स्त्री नहीं, वह घर नहीं, श्मशान है।" धर्मराजू ने अपना रोना रोया।

मुंशी की और बातों में ईमानदारी हो या न हो, पर अपना रोना रोने में जरूर थी। पीढ़ी-दर-पीढ़ी चली आती हाजिरजवाबी के परदों में से यह बात साफ-साफ फूटती। तब वह केवल मुंशी न दिखकर, मनुष्य-सा लगता था। रामय्या को तरस आया, वह शर्मिंदा भी हुआ – ठीक वैसे ही, जैसे भीम दुर्योधन की टांग पर गदा मारकर हुआ था। ऐन जगह पर चोट करके, उसने मुंशी के मुख पर ताला लगा दिया था। उसकी शान के मुताबिक ही, उसके मुख से बात निकली थी।

"अच्छा भाई, देख लेंगे। रात को तुम और लिंगराजू भी आना। हमारे घर फल वगैरह खा लेना – मैं खाना खाने के लिए नहीं कह रहा हूं। चमार भागवत दिखायेंगे," रामय्या ने कहा।

"तुम्हारे बस बुलाने भर की देर है, हमारे आये बगैर भला कथा कैसे चलेगी ?" मुंशी ने कहा।

"क्या बिना शकुनि के भी महाभारत है ?" सुब्बय्या ने ताना कसा।

इस बार मुंशी ही पहले हंसा।

ग्रामाधिकारी रामय्या का घर का आंगन लोगों से खचाखच भरा था, बड़ी गली से छोटी गली तक। कुछ धान की कोठरी के जगत पर बैठे थे, कुछ उसकी सीढ़ियों पर। दोनों चबूतरों पर रामय्या और सुब्बय्या के परिवारजन बैठे थे। गांव के बड़े बुजुर्ग भी उन्हीं के साथ थे। घर की स्त्रियां, बड़े दरवाजे के पास थीं।

चूंकि ग्राम की देवी मल्लम्मा चमार परिवार की थी, इसलिए उसके उत्सव के एक महीने पहले से, चमारों को हरेक छूट रहती, वह चाहे किसी भी घर में बिना रुकावट के जा सकते थे। सब को छू भी सकते थे। रामय्या ने उनको ताड़ी पिलवायी। दस बकरे कटवाकर उनको भोजन बंटवाया। जब तक खाना पच नहीं जाता और ताड़ी का नशा न उतर जाता वे रात भर गाते-नाचते रहते। यह माता के उत्सव की पहली संध्या में ही होता। क्योंकि इस साल बड़े चौधरियों में रिश्ता हो रहा था, इसलिए उत्सव और भी बढ़ा-चढ़ाकर मनाया जा रहा था। आज रात का खर्च रामय्या का था और उत्सव की रात का सुब्बय्या का।

धान की कोठरी के पीछे, खलिहान-सा था। वहां अभिनेताओं ने वेश बदला। स्त्री-पुरुष, बच्चे-बूढ़े, सब, "मल्लम्मा हमारी मां है, मां हम सबका भला करो !" गाते हुए कदम से कदम मिलाकर रंगमंच पर आये। आंगन पेट्रोमैक्स की रोशनी से चमचमा रहा था। घर के अंदर की बिजली की रोशनी भी उनके मुकाबले में फीकी पड़ गयी थी।

सारा गाना ही माता की कथा थी, स्तुति थी। मल्लम्मा दस वर्ष पहले हरिजनवाड़े की एक छोटी-सी झोंपड़ी में पैदा हुई। बड़े लाड़-प्यार से, सोलह वर्ष तक पाली गयी। पैदा होते ही उसके बड़े-बड़े लक्षण थे। ज्योतिष के पंडितों ने बताया कि वह दुर्गा की अवतार थी। उसके छूते ही, रोग इस तरह चले जाते जिस तरह कोहरा सूर्य के सामने से चला जाता है। उसे याद करते ही आफतें टल जातीं। हालांकि वह शादी नहीं करना चाहती थी, तो भी उसके मां-बाप ने उसकी शादी तय कर दी। शादी से पहले लगातार तीन रात, वह रोती रही। रात को बड़ा तूफान आया। मां का दुख ही वर्षा के रूप में आया था। भगवान का क्रोध तूफान के रूप में व्यक्त हो रहा था। पास की नदी में बाढ़ आयी। शोर हुआ और उस शोर से सारा गांव जाग उठा। नदी किनारे तोड़कर बहने लगी। गांव ही डूबने को था। तभी बिजली गरजी, उसकी रोशनी में सबको मल्लम्मा ही दिखायी दी।

"स्वामी, क्रोध मत करो। मैं तुम्हारे पास आ रही हूं, मुझे ले जाओ और इस गांव को बचा लो।" मल्लम्मा की यह आखिरी प्रार्थना इस तरह सारे आकाश में गूंजी कि सबको सुनायी दी। मल्लम्मा बाढ़ में उफनती नदी में कूद पड़ी। तुरंत तूफान बंद हो गया, वर्षा थम गयी। बाढ़ कम हो गयी। सवेरा होते ही, उसकी खोज की गयी। जहां वह रात कूदी थी, उसी जगह बाढ़ की चिकनी मिट्टी में, मल्लम्मा की पत्थर की मूर्ति निकली। वह मल्लम्मा की सजीव मूर्ति-सी लगती थी। धीमे-धीमे, नदी गांव से दूर बहने लगी। अब वह खेतों से परे है। जहां पहले नदी थी, वहां अब तालाब है। नदी का किनारा तालाब का तट हो गया। मल्लम्मा, तालाब

के तट पर, एक मंदिर में प्रतिष्ठित की गयी। तब से अब तक उस नदी में फिर बाढ़ नहीं आयी। न उस गांव में अतिवृष्टि ही, या अनावृष्टि ही हुई। यह सब मल्लम्मा की कृपा ही थी।

ताड़ी के नशे के कारण, अभिनेताओं में एक प्रकार की तन्मयता आ गयी थी। चालीस स्त्री-पुरुष, एक स्वर में गा रहे थे और एक ही क्रम से नाच रहे थे। इस पवित्र भक्ति के आवेश को देखकर दर्शक भी तन्मय हो गये।

इसके बाद 'शशिरेखा परिणय' नामक नाटक था। रामी, शशिरेखा बनी और पद्मालु, बलराम। पद्य ग्रांथिक थे, पर गांव की बोली में ढलकर वे और भी सुंदर हो गये थे और उनकी आवाज इतनी बुलंद थी कि गांव के परले छोर तक सुनायी देती। शशिरेखा का विवाह हो गया। अंत का भरत-वाक्य सबको मिलकर गाना था। तब प्रेक्षक और अभिनेताओं में कोई भेद नहीं रहता। पुल्ली ने छोटी गली के चौपाल में बैठी मंगम्मा को मंच पर खींचा। मंगी को देखकर लिंगराजू भी चला आया। जब उसे रोकने धर्मराजू आगे बढ़ा, तो भीड़ ने उसे झकझोर डाला। इसके बाद अभिनेताओं ने एक-एक करके, सब बड़े बुजुर्गों को बुलाया। जिस-जिसका नाम लिया जाता, वह जाता, अगर वह न आता तो उसकी हंसी होती। उस दिन रात को बड़े और छोटे का भेद भी नहीं रह गया था। अंतिम गाने में वेंकन्ना, पुन्नय्या, रंगा, मल्ली, गंगप्पा, सभी एक साथ शामिल हुए। उन्हें गाता देख, राजू भी चबूतरे पर से उतरा। उसे देख, लक्ष्मी अपनी हंसी काबू न कर पा रही थी। सुंदरम्मा ने उसे आगे धकेला। वह इतनी शरमायी कि ऊपर दुमंजिले पर अपने कमरे में चली गयी। तकिये में मुंह छिपाकर, जी भरके हंसी। उसके बाद, कमरे से बाहर के छज्जे में से तमाशा देखा। हालांकि वह छज्जा पिछवाड़े में था, पर आगे का आंगन, वहां बैठने से दिखायी देता था।

आंगन में अंधेरा हो गया था। सब जा चुके थे। वह खाली था। ठंडी-ठंडी, कंपाने वाली हवा चल रही थी, पर लक्ष्मी छज्जे में वैसी ही बैठी रही। लक्ष्मी को शायद तब भी आंगन में, ताजा तमाशा दिखायी दे रहा था। उसे जैसे गाना सुनायी पड़ रहा हो। उसके मन में वह दृश्य इस तरह समा गया था कि वह कभी मिटाये भी न मिटता। छज्जे तक चमेली की बेल आयी हुई थी। उसके हरे-हरे पत्तों में सफेद-सफेद कलियां थीं। सर्दी में भले ही उनकी सुगंध कम हो जाती हो, पर आने वाले बसंतों की झांकी उनमें दिखायी देती थी। लक्ष्मी उस सुगंध का आनंद ले रही थी। उसका मन पिछली गरमी की स्मृतियों से भरा था और भविष्य की आशाओं से छलक रहा था।

गांव में इस बार उत्सव के मौके पर जितना उत्साह देखा गया, उतना कभी नहीं देखा गया था। हालांकि, अभी विवाह का मुहूर्त निश्चित नहीं हुआ था, तैयारियां जोर-शोर से हो रही थीं। इस विवाह में सभी शरीक थे। गांव में सब अपने-अपने घर सजा रहे थे। माता के मंदिर की चारदीवारी ऊपर उठ आयी थी। मंदिर में भड़कीले रंग करवा दिये गये थे, ऐसे रंग जो बारिश में धुल नहीं सकते थे। रंगा और लिंगराजू शहर से उन्हें खरीदकर लाये थे। "ओह, मंदिर क्या बढ़िया लगता है!" लोगों ने कहा। पर पुजारी को वे रंग अच्छे न लग रहे थे। कभी किसी पुराण कथाकार ने कोई अच्छी बात कही थी, वह उसे याद हो आयी।

"उपनिषदों में परमात्मा निर्गुण हैं, निराकार हैं और जो पुराणों में देवी-देवता हैं, उनमें मानव-सुलभ सभी दुर्गुण हैं। जैसे — क्रोध, लोभ, मद, मात्सर्य आदि। तो भी वे भक्तों की इच्छाएं पूरी कर सकते हैं। इसलिए वे पूजनीय हैं और ये देवी-देवता भी तीन करोड़ हैं। जो जैसा चाहता है, अपने संस्कार के अनुरूप उन्हें रूप देता है। कोई लंगोटी बांधे महात्मा में भगवान का दर्शन पाते हैं। कुछ को वह तरह-तरह के आभूषणों से सुशोभित, रंग-बिरंगी मूर्तियों में ही दिखायी देता है।"

दोनों बड़े किसानों में, उदारता के साथ, शान भी थी और शान के साथ-साथ थोड़ा अहंकार भी। ऊपर-ऊपर के दिखावे में भी उनकी थोड़ी-बहुत दिलचस्पी थी। सिर्फ राजू ही नहीं चाहता था कि मंदिर में रंग करवाये जायें, बाकी सब भी उन्हें जरूरी ही समझ रहे थे।

पुजारी के लिए भी मल्लम्मा उपनिषदों की निर्गुण शक्ति न थी, वह मातंग कन्या थी। निराडंबर, करुणा, त्याग और बुद्धि उसके अनिवार्य लक्षण थे। पुजारी के लिए वह उस गांव की कन्या थी। वह मानव रूप में यहीं पैदा हुई थी। अगर कभी गांव पर आपत्ति आयी, तो वह फिर पैदा होगी।

मंदिर के पीछे बैठकर, मल्ली चिट्ठी लिख रही थी। उस दिन एक महत्वपूर्ण घटना घटी थी। राजू उसे जानता था, पर उसका लिखना भी एक कर्तव्य था। गौ बियायी थी। और जैसा कि उसने चाहा था, उसे बछड़ा हुआ था। वह चिट्ठी लिखकर एक लिफाफे में रख रही थी कि पुजारी गनेर के फूल तोड़ता उस तरफ आया।

"क्यों बेटी, पढ़ने के लिए क्यों नहीं आ रही हो ?" पुजारी ने पूछा।

"पढ़ना आ जो गया है," मल्ली ने कहा।

"लिखना भी ?" पुजारी ने पूछा। मल्ली मुस्करायी। आंखों में पानी तिर आया। पुजारी के सामने, जो कुछ वह चाहती थी छुपाती न थी, और क्या चाहिए था यह भी न कहती थी। अगर उसके भेद उसे मालूम हो जाते, तो भी वह शर्मिंदा न होती। उसकी बातों में कभी थोड़ा हास जरूर होता था, पर उपहास कभी नहीं। वह जानता था कि वह चिट्ठियां किसे लिख रही थी। वह यह भी जानता था कि वे कभी भी राजू तक न पहुंचेंगी। फिर भी, मल्लम्मा के लिए वे बहुमूल्य थीं, यह भी वह जानता था।

मल्लम्मा ने स्वयं गौ के खीस को उबाला, जमाया। दूध बड़ा गाढ़ा था। उसे मालूम था कि कितना मामूली दूध मिलाने से वह स्वादिष्ट होता था। राजू को वह खूब पसंद भी आया। वह एक बर्तन में लेकर बाहर भागी। राजू जानता था कि वह कहां जा रही थी।

गली में वह बिल्ली की तरह दौड़ी। घिसी-घिसाई सीढ़ियों पर से वह आसानी से चढ़ गयी। लक्ष्मी के कमरे में हवा की तरह घुसी। उसने दरवाजे बंद कर दिये। लक्ष्मी बाहर छज्जे में बैठी हुई थी।

"काली गाय ब्यायी है, उसका दूध लायी हूं। भाई को यह बहुत पसंद आता है।" मल्ली ने वह कटोरी लक्ष्मी के हाथ में रखी। लक्ष्मी की आंखों में स्नेह और कृतज्ञता एक साथ चमकीं। एक चम्मच भरकर उसने मल्ली के मुख के पास रखा।

"तेरे लिए लायी हूं," मल्ली ने कहा।

"खा भी," लक्ष्मी ने कहा।

दोनों ने थोड़ा-थोड़ा चखा और दोनों ही राजू के बारे में सोच रही थीं।

दोनों की कितनी अच्छी जोड़ी है, राजू भाई की और लक्ष्मी बहन की। मल्ली सोच रही थी।

'मल्ली को अच्छा पति मिलना चाहिए। अगर वह ससुराल चली गयी तो मेरे दिन कैसे कटेंगे और उसका मन कैसे लगेगा ?' लक्ष्मी ने सोचा। बिना स्वयं जाने ही, राजू मल्ली पर कितना निर्भर रहता था, वह जान गयी। जब कभी वह नहाने जाता, तो तौलिया अक्सर भूल जाता। बिना उसके मांगे ही, मल्ली उसे वह ले जाकर देती। राजू खाते समय भी कुछ और सोचता रहता, अगर किसी ने उसे न बताया तो खाना खत्म करने से पहले ही थाली में हाथ धो लेता था। अगर मल्ली पास खड़ी रहती, तो पेट भर खाता। खेत पर जाने से पहले, मल्ली उसके चप्पल, उसके सामने रखती। चूंकि उसे याद न रहता था कि पिछली रात उन्हें कहां छोड़ा था। अगर कभी मल्ली घर में न होती, तो वह और नौकर चप्पलों के लिए सारा घर छान मारते। सामने रखी हुई चप्पल की जोड़ी ही, राजू को न दिखायी देती थी। जब कभी मल्ली, लक्ष्मी से मिलती तो ये सब बातें उसे बताती।

"भाई अब खेत जायेंगे, अगर पगड़ी न दिखायी दी, तो सारा घर सिर पर उठा देंगे।" यह कहकर मल्ली चली गयी। राजू की आदतों के बारे में सोचती-सोचती लक्ष्मी अपने कमरे में चली गयी। खिड़की में वह टोकरी रखी थी, जिसमें नव धान्य बोये थे। अंकुर फूट रहे थे। उन्हें उसने अपने ओठों से छूना चाहा। पर भय और संकोच ने उसे ऐसा न करने दिया। सुराही में से पानी लेकर उसने उन पर छिड़का। फिर छज्जे में आकर बैठ गयी।

तालाब के किनारे तरह-तरह के झंडे लगे हुए थे। तोरण बांधे गये थे, पत्तों के तोरण, कागजों के तोरण। मंदिर के पीछे के बाग में एक नागर डोला लगा दिया गया था। खिलौनों की दुकानें भी शहर से आ गयी थीं। गांव वाले, इस हाट में, साल भर के लिए पीतल के बर्तन खरीद लिया करते थे। दक्षिण की तरफ से, पीतल के बर्तनों और रेशमी साड़ियों के दुकानदार आते थे। खाटों और तख्तों पर मिठाई की दुकानें लगा दी गयी थीं। तरह-तरह की मिठाइयां और पीने की चीजें। आसपास के गांवों के सभी लोग वहीं जमा थे। रामी छोटे लड़के का हाथ पकड़कर दुकानों का चक्कर लगा रही थी और गुस्से में, रंगा और लिंगराजू उसका पीछा कर रहे थे। धर्मराजू भी तेली के बैल की तरह, मंगी के पीछे-पीछे घूम रहा था। मेले में अगर स्त्री-पुरुष, एक साथ मिलें-जुलें भी तो कोई खतरा या खराबी न थी। मेले, पुराने रीति-रिवाजों की जंजीरें तोड़ देते थे। उस दिन तालाब के किनारे, रंगा के लिए तो बहार-सी आयी हुई थी।

रामी लड़के को चने खरीदकर दे रही थी। रामी झुककर कुछ ले रही थी कि पीछे से किसी ने उसका लहंगा दबाया। लहंगे में चिंगारी-सी उठी।

"क्या कर रहे हो..." सामने की सोडे की दुकान वाला कुछ कहने ही वाला था कि रंगा ने उसे घूरकर देखा। कान में फुसफुसाकर पास के दुकानदार ने उसको आगाह किया। सोडे

की दुकान वाला रंगा के दबदबे के बारे में नहीं जानता था। सब क्षण भर में हो गया था। शायद कुछ पेट्रोल डाला गया था, लहंगा जलने लगा। गंगप्पा जोर से आकर उस पर आ गिरा। लहंगे की आग उसने अपने हाथ से, अपने शरीर से बुझा दी। लहंगा कुछ जल गया था। रामी के पैरों पर छाले पड़ गये थे। गंगप्पा के हाथ, और छाती भी कहीं-कहीं जल गये थे। बायें गाल पर फफोले पड़ गये थे। पद्दालु हाथ में लाठी लेकर, यम की तरह उस तरफ आया।

"यह किसकी करतूत है? किसने किया है यह?" उसने चारों ओर नजर दौड़ाते हुए पूछा। उसकी नजर रंगा पर पड़ी, पर उसने अपनी नजरें न झुकाईं। किसी ने न बताया कि किसने यह किया था। रंगा की ओर घूरते हुए उसने कहा, "मैं पता लगाये बगैर नहीं रहूंगा कि यह किसकी करतूत है। अगर उसकी बोटी-बोटी काटकर कौवों को न डाल दूं, तो मेरा नाम पद्दालु नहीं।" कहकर वह उबलता-उबलता वहां से चला गया।

"इस साले चमार को कितना घमंड है!" रंगा ने, पद्दालु के चले जाने के बाद कहा।

मंदिर में पूजा चल रही थी। दोनों बड़े किसानों ने माता पर एक-एक बकरा चढ़ाया था। जब बकरों पर हल्दी और कुंकुम लगाया जा रहा था, तो लक्ष्मी को बेचैनी हुई, घिन हुई। पर मल्ली वह सब बड़े ध्यान से देख रही थी। राजू को माता के प्रति न ज्यादा भक्ति थी, न उदासीनता ही। और त्यौहारों की तरह यह भी एक त्यौहार था। बलि उसके लिए उतनी भयंकर भी न थी। हर रोज उसके घर में बकरा या मुर्गी, खाने के लिए मारी ही जाती थी। यह बलि भी उसी तरह की थी, इसका वह आदी था। यह अनावश्यक भी न थी।

बकरों का खून हंडों में लेकर, पुजारी ने माता की मूर्ति के सामने रखा। हाथ जोड़कर, वह तन्मय हो, प्रार्थना कर रहा था। सुब्बय्या और रामय्या आपस में कुछ बातें कर रहे थे।

धर्मराजू मेले में इस तरह फिर रहा था, जैसे सिर पर बहुत बड़ा काम आ पड़ा हो। रामी के लहंगे के जलने पर पद्दालु के सबके सामने धमकी देने के बाद, उसके सामने काम ही काम था। मंदिर के पिछवाड़े में, जहां नागर डोला लगा हुआ था, उसने वेंकन्ना और रंगा से कुछ सलाह-मशविरा किया।

"वह चमार, सबके सामने कहता गया कि रात होने से पहले रंगा की हड्डियां तोड़ दूंगा। भाई वेंकन्ना, क्या बुरे दिन आये हैं? अगर हमने रात होने से पहले उसकी मरम्मत न कर दी, तो हम भी क्या हैं, क्या हमारी हस्ती?"

इस षड्यंत्र के बारे में, न दोनों बड़े किसान जानते थे, न राजू और न औरतें ही। राजू के भाई, पुत्रय्या ने उनको फुसफुसाता देखा तो था, पर उसने भी अनुमान न किया था कि कोई बड़ा षड्यंत्र यों तैयार हो रहा था।

गांव के लोग दो कतारों में मंदिर के सामने खड़े थे। हर कोई वह टोकरा हाथ में लिये हुए था, जिसमें नव धान्य बोये गये थे। सबसे आगे लक्ष्मी और राजू खड़े थे। वे एक-एक करके वे टोकरे मंदिर में फेंक रहे थे। मंडप के ऊपर खड़े लोग उनको लोक रहे थे। उन अंकुरों को, वे छत पर बिछा रहे थे। मंदिर की छत पर, बड़े-बड़े परिवारों के लिए, पीढ़ी दर पीढ़ी से

निश्चित स्थल थे। उनके टोकरे वहीं रखे जा रहे थे। मल्लम्मा चूंकि चमार जाति की थी, इसलिए चमारों को, परंपरा के अनुसार, कुछ विशेष अधिकार प्राप्त थे। जब पद्दालु एक तरफ से छत पर चढ़ा तो दूसरी ओर रंगा चढ़ा।

"अरे, आ आ रे!" रामय्या चिल्लाया।

"कोई बात नहीं भाई, एक चमार, पद्दालु ऊपर है न। फिर भी समय के साथ ये रूढ़ियां बदलनी चाहिए न!" धर्मराजू ने कहा। पुजारी ने भी कोई आपत्ति न की। यद्यपि उसे कुछ रूढ़ियों पर दृढ़ विश्वास था, पर उसकी नजर में भी कई रूढ़ियां निरर्थक थीं। मल्लम्मा भले ही चमार जाति की हो, पर वह सभी के लिए आराध्य थी। उसकी दृष्टि में, चमारों को इस संबंध में विशेष अधिकार देना, माता की आराधना की सीमा निर्धारित करना था। वह स्वयं तो उन रूढ़ियों को तोड़ न पाता था, अगर और कोई तोड़ता तो उसे कोई आपत्ति भी न थी। क्योंकि ये रूढ़ियां इतनी मुख्य न थीं, इसलिए पुजारी उनके परिवर्तन का समर्थक था।

"मुंशी जी ने ठीक ही कहा है। रंगा बाबू जोश में काम कर रहे हैं। लड़कों का माता की सेवा में अगर दिल लगता है, तो उनको बढ़ावा ही देना चाहिए। यदि ये रूढ़ियां बदल भी दी गयीं तो क्या जाता है, बाबू?" पुजारी ने कहा।

राजू द्वारा फेंके गये टोकरे को पद्दालु ने पकड़ लिया और लक्ष्मी के टोकरे को रंगा ने। दोनों टोकरे लेकर, मंडप के पीछे की तरफ चले गये। इसलिए उन दोनों टोकरों को रखते समय क्या हुआ था, नीचे वालों को नहीं मालूम था। पर एक टोकरा नीचे गिरा और उसमें अंकुर भी टूट गये थे। यह देखने वालों के लिए अशुभ था, अपशकुन था। उन्होंने घबराकर ऊपर जो देखा, तो पाया कि पद्दालु और रंगा, आपस में खूब मारपीट कर रहे थे। रामय्या ने देखा कि पद्दालु रंगा के जबड़े तोड़ रहा था, जोर-जोर से मार रहा था।

"अरे, तुम हमारे यजमान का टोकरा नीचे फेंकते हो!" पद्दालु चिल्लाया।

"तुमने हमारी जगह उनके टोकरे क्यों रखे?" रंगा पद्दालु को घूसे पर घूसा मार रहा था। वेंकन्ना और पुन्नय्या, दोनों दोनों तरफ से मंडप के ऊपर चढ़े। पुन्नय्या ने जब दोनों को अलग हटाने की कोशिश की, तो रंगा की चपत उसके गाल पर लगी। वह निशाना चूक गया था। पुन्नय्या को गुस्सा आ गया, वह रंगा से जा भिड़ा। वेंकन्ना ने लाठी से पद्दालु का सिर तोड़ने की कोशिश की। जब पद्दालु ने उसकी लाठी पकड़कर खींची, तो वेंकन्ना नीचे जा गिरा। अगर वक्त पर, राजू और उसके साथी न पकड़ते तो उसकी हड्डियां चूर-चूर हो जातीं। लेकिन औरों के बहुत मना करने पर भी, वेंकन्ना फिर मंडप पर चढ़ा। राजू भी एक खंभे के ऊपर से चढ़ा। यह देख लक्ष्मी का दिल थम-सा गया।

"अरे नौकर साले को कितना घमंड!" रामय्या ने कहा।

"रंगा जैसे लड़ाकू को किसने पहले ऊपर चढ़ने के लिए कहा?" सुब्बय्या ने कहा। उसके पवित्र टोकरों को चूंकि रंगा ने नीचे फेंक दिया था, इसके लिए सुब्बय्या कभी भी उसको क्षमा नहीं कर सकता था। धर्मराजू भी इस तरह इधर-उधर घूम रहा था जैसे वह बीच-बचाव करने की कोशिश में हो। राजू भी, लड़ते हुए लोगों को अलग न कर सका और नीचे,

तीस-चालीस मजदूर लाठियां लिये भीड़ को चीरकर, उस तरफ चले आ रहे थे। जो कोई उनको रोकता, वे उसे पीटते। जिन्हें मार पड़ती, वे भी उठकर मारते। वह झुंड स्त्रियों की ओर बढ़ रहा था। राजू नीचे कूदा, ताकि लक्ष्मी को सुरक्षित जगह पर ले जा सके। सुब्बय्या और रामय्या गला फाड़-फाड़कर चिल्ला रहे थे। परंतु उस भीड़ में, शोर में, उनकी आवाज भी नहीं सुनायी पड़ रही थी। धर्मराजू की आवाज रामय्या के कान में अवश्य पड़ी।

"देखो भाई, सुब्बय्या की इतनी उम्र हो गयी है, पर क्या उनको अक्ल आयी? झगड़ा रोकने की कोशिश तो की नहीं, उल्टे रंगा को पिटवाने के लिए लोगों को भड़का रहे हैं।" भीड़ भंवरे खाती आगे बढ़ती जा रही थी। भीड़ के उस ज्वार में, जब रामय्या ने सुब्बय्या की ओर देखा, तो उसे लगा कि वही ये बातें उगल रहा है।

भीड़ ने स्त्रियों और बच्चों को आ घेरा। भीड़ बुरी तरह कसमसाने लगी। सांस लेना भी मुश्किल हो रहा था। भीड़ को चीरकर राजू ने लक्ष्मी के पास जाने की कोशिश की। अपनी हर कोशिश के बावजूद, वह लक्ष्मी तक न पहुंच सका। भीड़ ने उसे पहुंचने ही न दिया। दोनों को अलग-अलग फेंक दिया। जब उसने देखा कि कम से कम मल्ली, लक्ष्मी के पास पहुंच गयी है, तो राजू ने राहत की सांस ली।

उस क्षण तक, उस गांव में पुलिस की जरूरत कभी महसूस न की गयी थी। मेले में छोटी-मोटी चोरियां न हों, सिर्फ यह देखने के लिए दो कांस्टेबल आये हुए थे। शहर जाकर और पुलिस को बुला लाने का समय न था।

एक कांस्टेबल जरा अक्लमंद था। बंदूक लेकर वह मंडप की छत पर गया। उसने हवा में एक गोली छोड़ी। तुरंत शोर-शराबा जरा कम हुआ। उसके बाद उसने मंडप की छत पर झगड़ते पद्दालु, पुन्नय्या, रंगा, और वेंकन्ना को संबोधित करते हुए कहा, "झगड़ना बंद करते हो कि नहीं? या गोली छोड़ने के लिए कहते हो?" गांव वाले जो और किसी बात से नहीं डरते थे, गोली से जरूर डरते थे। चारों नीचे उतर आये।

"तालाब के किनारे किसी को भी नहीं रहना चाहिए। सब अपने अपने घर चले जाओ!" कांस्टेबल ने कहा। रामय्या और सुब्बय्या ने एक-दूसरे को गुस्से में घूरकर देखा। वे कुछ कहने ही वाले थे कि राजू ने अपने पिता से कहा, "चलो, घर चलें।" दोनों बड़े किसान, दो अलग-अलग दिशाओं में चले गये। भीड़ भी कम होने लगी। तालाब का तट ऐसा लगता था, जैसे वहां कोई बाढ़ आकर चली गयी हो।

जहां कुछ क्षण पूर्व भीड़ थी, वहां नव धान्यों के बिखरे हुए, कुचले हुए टोकरे थे, और अस्त-व्यस्त दुकानें रह गयी थीं। पुजारी से वह कुरुक्षेत्र न देखा जा सका। वह मंदिर में गया, उसकी आंखें आंसुओं के कारण अंधी-सी हो गयी थीं। माता की मूर्ति के सामने मौन, उसने अपनी वेदना व्यक्त की।

शाम होते-होते, एक सब-इंसपेक्टर और पचास सिपाही गांव में आये। इंसपेक्टर, रामय्या के घर गया। यह झगड़ा रामय्या के लिए अपमानजनक था। उसकी इतनी धाक थी, पर वह भी झगड़ा न रोक पाया था। आखिर उसे भी, एक मामूली-से सिपाही के हुक्म का

पालन करना पड़ा। उसे गांव पर, पुलिस पर, सब पर गुस्सा आ रहा था।

"रामय्या जी, आप दोनों बड़े लोग, गांव को अब तक बड़ी अच्छी तरह देख भाल रहे थे। अगर आप दोनों में ही झगड़ा हुआ, तो नुकसान गांव का ही होगा। अगर कुछ ऐसी बात है भी, तो बैठकर शांति से उसका फैसला कर लेना अच्छा है। नहीं तो हमें दखल देना होगा, और देखना होगा कि गांव में दंगे-फसाद न हों," सब-इंसपेक्टर ने कहा।

रामय्या को यह बात तो ठीक लगी। पर उसका कहने का तरीका उसे न जंचा। उस गांव में उसका राज्य था और उस सब-इंसपेक्टर का इस तरह बात करना जैसे वह ही कर्ता-धर्ता हो, उसे अच्छा न लगा। उसे गुस्सा आ रहा था। अभी उसने कुछ न कहा था कि इस बीच वेंकन्ना ने उठकर जोर से कहा, "अगर दम है, तो उस पद्दालु और पुन्नय्या को हथकड़ी लगाकर ले जाओ, हमें क्यों धमकाते हो ?"

इंसपेक्टर मुस्कराया। "अगर किसी को गिरफ्तार ही करना है, तो उनके साथ आपको और आपके भाई को भी गिरफ्तार करना होगा," उसने कहा।

"क्या बक रहे हो ?" रंगा चिल्लाया।

इंसपेक्टर फिर मुस्कराया। "जब आपका गुस्सा कम हो जायेगा, मैं फिर आकर मिलूंगा। अगर इस बीच फिर गड़बड़ी हुई, तो जिन पर मुझे शक होगा, मैं उन सबको पकड़ लूंगा। देखिये, यह नौबत न आये।"

इंसपेक्टर चला गया। रामय्या से उस घर में अब तक किसी भी अधिकारी ने इस तरह बात न की थी। उसकी बात पर अभी तक किसी को शक भी न हुआ था। पर इस विषय में वह स्वयं नहीं जानता था कि सच क्या था और क्या बताया जाना चाहिए था। उसके मन में, केवल अधिकारियों पर क्रोध, सुब्बय्या के नौकर-चाकरों पर गुस्सा ही बाकी रह गया था। वह समझ न पा रहा था कि मंदिर में झगड़ा शुरू कैसे हुआ था। पर इसका संदेह अवश्य था कि धर्मराजू ने उन कुलियों को भड़का दिया होगा, जिन्हें सुब्बय्या ने काम से निकाल दिया था। उसे कहीं यह भी संदेह था कि उसके लड़के और रंगा पर भी इसकी कुछ जिम्मेदारी थी। पर जब लोगों ने "रामय्या की जय" का नारा लगाया तो सुब्बय्या को विश्वास हो गया कि यह सब रामय्या ही करवा रहा है। चिल्लाना उसे बिलकुल पसंद न था। पर उस शोर में उसका चिल्लाना पूरी तरह न सुनायी दिया था।

"रामय्या का बूता देकर..." सुब्बय्या का यह चिल्लाना सुनायी दिया था। इस तरह चिल्लाने से पहले वह मुझसे तो पूछ लेता, तो लोगों में इस तरह क्यों बदनामी होती ? क्या वह मेरी बात न जानता था ?

धर्मराजू मंगी को भूल गया। उसकी अक्ल चाकू-सी थी। जितना बड़ा कद्दू उतनी ही खुशी होती है चाकू को। उस गांव में अपनी चतुरता दिखाने के लिए इससे अच्छा मौका पहले कभी न मिला था।

किंतु उसके मन में कोई स्पष्ट उद्देश्य इस तरह का न था कि गांव में जानबूझकर गड़बड़ पैदा की जाये, और दो परिवारों में होने वाले विवाह के संबंध को तोड़ा जाये। वह भी चाहता

था कि राजू और लक्ष्मी का विवाह हो और वह होकर भी रहेगा। पर उस विवाह का बिना किसी रोक-रुकावट के हो जाना उसे गवारा न था। उसके उद्देश्य और व्यवहार में एक प्रकार का विरोध था। पर यह शायद वह स्वयं ही नहीं जानता था। कहीं अंदर जमा हुआ कड़वापन उसकी बातों में यों अनायास फूट पड़ता था।

वह सोद्देश्य ही सुब्बय्या के घर आया था। वह वास्तव में यही कहने के लिए आया था कि अगर यह मामला बढ़ता गया तो दो तरुणों का जीवन नष्ट हो जायेगा और जो कुछ हो ही गया था, उसको भूल जाने में ही गांव का कल्याण था। पर जब वह दिखायी दिया तो राजू ने कहा, "मुंशी, हम बाकी खेती भी ट्रैक्टर से करवायेंगे, सब मजदूरों को कह दो कि वे अपने काम-धंधे का इंतजाम खुद कहीं कर लें। देखें, बाकी मजदूर अपना काम-धंधा खुद देखते हैं, या रामय्या मामा उनको बिठाकर खिलाते हैं, जाओ मालूम करो!"

धर्मराजू का यह कहना तो दूर कि रामय्या का इस बात से कोई संबंध नहीं, उसके मुख से निकला, तो कहा "ऐसे नहीं भाई राजू, अगर उनको यों ही काम से निकाल दिया जाये तो क्या उनका पेट नहीं जलेगा?"

"तभी तो मामा ने उनके पेट की आग बुझाने के लिए उन्हें ताड़ी पिलवाई है," राजू ने कहा।

"आखिर इस सब की जड़ उस पद्दालु और रंगा का एक-दूसरे पर हाथ उठाना ही तो है," धर्मराजू ने कहा।

"उसने जो किया सो किया, अगर मैं होता तो उसी समय उसे माता पर बलि चढ़वा देता। उसकी इतनी हिम्मत कि मेरा टोकरा नीचे फिंकवा दिया!" राजू ने गुस्से में कहा।

धर्मराजू रामय्या के घर गया।

"भाई, राजू और पुन्नय्या जब मिलकर हमें बुरा-भला कह रहे थे, तो मैं सुन न सका। कह रहे हैं कि तुमने ही रंगा को मंदिर की छत पर चढ़वाकर उनका टोकरा नीचे फिंकवा दिया था। कह रहे हैं कि जिनको उन्होंने काम से निकाल दिया था, उन्हें तुमने ताड़ी पिलवाकर भड़काया है। खैर, वे तो बच्चे हैं, जोश में कुछ कह बैठे। यह सोचकर कि सुब्बय्या बड़ा है, मैंने उससे भी कहकर देखा, तुम दोनों में संबंध होने जा रहा है। इस तरह एक-दूसरे से झगड़ना दोनों के लिए ही अच्छा नहीं है, एक बार हमारे भाई के पास आकर बात कर लो, पर उसने मेरी बात सुनी ही नहीं। जो लड़कों ने कहा था वही वह भी दोहराता रहा। ऊपर से यह भी कहा, क्या, जब तक रामय्या के पैर नहीं पड़ूंगा, मेरा गुजारा नहीं होगा? जा, जा, बड़ा समझाने आया है!"

"तो क्या वह चाहता है कि पिता जी उसके पैर पड़ें?" वेंकन्ना ने कहा।

"यह बात नहीं वेंकन्ना, हम अपने घर की लड़की उस घर में दे रहे हैं न।"

"इसलिए क्या तुम कह रहे हो, कि चाचा अपने को नीचा करें! अरे, हमारी बहन को इससे अच्छा संबंध क्या नहीं मिलेगा? ऐसी कोई बात नहीं है।" रंगा ने कहा।

"चुप भी रहो," रामय्या ने कहा।

परंतु अपनी लड़की की शादी के लिए वह अपना आत्म-गौरव नहीं गंवाना चाहता था।

जब से मेला हुआ था उसके मन में यह बात उठ तो रही थी, पर किसी ने इसे साफ-साफ उठाया नहीं था। रंगा ने यह बात उठायी थी, इसलिए कहीं उसे इस बात पर संतोष भी था।

किवाड़ के पीछे खड़े होकर लक्ष्मी यह सब सुन रही थी। उसके होंठ हिले। आंखों में नमी आ गयी। वह चुपचाप दुमंजिले पर, अपने कमरे की ओर दौड़ी। कमरे में जाकर उसने अंदर से कमरा बंद कर लिया। छज्जे में जा बैठी। चमेली के फूल उसके कानों के पास लगे। रात की ओस अभी उन पर से न गयी थी। लक्ष्मी भी बर्फ-सी हो गयी थी। सूरालु ने ऊपर दौड़-दौड़कर जाती अपनी लड़की को देखा। दया, दुख, सब गले में उबल-से रहे थे। उसने बाहर चबूतरे के पास आकर कहा, "तुम अपनी जिद से, झगड़ों से क्या छोटी लड़की का गला काटोगे?"

"जा अंदर जा, बड़ी अकलमंद आयी है समझाने!" रामय्या ने उसे डपटा। उसने कह तो दिया था, पर उसके मन में भी उतना ही दुख था जितना कि उसकी पत्नी के मन में था। पर सुब्बय्या के आमने-सामने कैसे बात की जाये? धर्मराजू इस लायक न था कि उसे दूत बनाया जा सके। बात और उलझानी हो तो उससे बढ़कर कोई न था। सिर पर पगड़ी बांधकर रामय्या निकल पड़ा। धर्मराजू ने जब उसके साथ जाने की कोशिश की, तो उसने उसे रोका।

माता के मंदिर में, आंगन में रामय्या बैठा था। पुजारी से, उसने सुब्बय्या को खबर भिजवायी। सुब्बय्या आया। उन दोनों ने एक-दूसरे को देखा। दोनों नहीं समझ पा रहे थे कि बात शुरू कौन करे, और कैसे करे। इस हालत में, पुजारी ने उन दोनों से कहा, "आप दोनों इस गांव के बड़े किसान हैं। कौन ठीक है और कौन गलत, यह तो मां ही जानती है। अगर मन में गुस्सा हो, तो दूसरा हमेशा गलत ही दिखायी देता है। आप सब भूल जाइये और मां का मेला फिर लगवाइये और जिस शादी के बारे में आप सोच रहे हैं, उसे भी जल्दी से करवाइये। मां आपका भला करेगी।"

"इसीलिए तो बुलाया है," रामय्या ने कहा।

"मैं भी तो तुम्हारी खबर मिलते ही चला आया हूं। जिद तो नहीं की थी," सुब्बय्या ने कहा।

पुजारी यह सुनकर संतुष्ट हुआ। कुछ देर तक दोनों बोले नहीं, आखिर सुब्बय्या ने कहा, "विवाह का मुहूर्त निकलवाओ।"

"बहुत अच्छा!" रामय्या ने कहा।

दोनों को ऐसा लगा जैसे बड़ा बोझ उतर गया हो। दोनों एक-दूसरे को गले लगाने के लिए खड़े हुए। पर तभी पद्दालु आया, उसके माथे से खून बह रहा था।

"वेंकटेश और दस-पंद्रह आदमी हमारा धान का ढेर खलिहान से चुराकर ले जा रहे थे। हमने उन्हें रोका, तो मारपीट हो गयी," उसने कहा।

"अरे, दिन-दहाड़े धान चुराने आये थे? उनकी इतनी हिम्मत!" सुब्बय्या ने कहा।

"वेंकन्ना और रंगा जी अपनी खेत की मुंडेर पर खड़े हो, हंसते हुए यह सब देखते रहे थे," पद्दालु ने कहा।

"तो क्या यह उन दोनों ने करवाया ?" रामय्या जोर से गरजा।

"नहीं करवाया था, तो कम से कम यह तो कहना था कि ऐसा मत करो। अगर हमारे लोग तुम्हारा धान चुरा ले जायें, तो क्या तुम हाथ पर हाथ रखकर बैठे रहोगे ?" सुब्बय्या ने पूछा।

"तुमने उनका काम छीन लिया, इसलिए वे चोरी करने को उतारू हो गये," रामय्या ने कहा।

"यानी इस गुंडागर्दी के पीछे तुम्हारा भी हाथ है ?" सुब्बय्या ने कहा।

रामय्या झट उठकर चला गया। पुजारी मौन हो मूर्ति की ओर देखने लगा।

"वेंकटेश तो मिला नहीं, हमने पेंटय्या को पकड़कर पुलिस के हवाले कर दिया," पद्मालु ने कहा।

सुब्बय्या पद्मालु के साथ खेत की ओर चला।

इंसपेक्टर के साथ पुलिस उस जगह तैनात थी, जहां चोरी हुई थी और तहकीकात चल रही थी। पेंटय्या कह रहा था कि उसने कुछ नहीं किया था, वह कुछ नहीं जानता। वह मुंडेर से जा रहा था कि इन्होंने यों ही पकड़ लिया और उसे मारा-पीटा। यह सुन राजू को गुस्सा आया। उसने उसके गाल पर एक चपत जमायी।

"आपको इसे मारने का हक नहीं है, यह हमारी हिरासत में है," इंसपेक्टर ने कहा।

"इसे पीटा नहीं गया तो यह सच नहीं बोलेगा," राजू ने कहा।

"मगर यह कानून के खिलाफ है।"

"कानून ? अब कानून बघार रहे हो ! तब कहां चला गया था तुम्हारा कानून जब ये हमारा धान उठा ले जा रहे थे ?" सुब्बय्या ने कहा।

"आप कंपलेंट लिखकर दीजिये और हम केस चलायेंगे," इंसपेक्टर ने कहा।

"आप केस चलायेंगे और हम शहर के चक्कर काटते, अदालतों की धूल छानेंगे। तब हमारे घरों की रखवाली कौन करेगा ? हम केस-वेस कुछ नहीं करेंगे, आप ही चलाइये।" यह कहकर सुब्बय्या चला गया।

राजू ताल के किनारे जा खड़ा हुआ। दूर, कुछ ऊंचाई पर इमली का पेड़ था। लक्ष्मी, उसी पेड़ के तने के सहारे खड़ी हुआ करती थी। जब कभी खेत पर आती, तो सरकंडों के बीच में से रानी की तरह चलती आती। पिछले दिनों उसने आना ही बंद कर दिया था। अब भी जब कभी सरकंडे हिलते तो वह सोचा करता कि वही चली आ रही है। वह इमली की टहनी से, सरकंडों के फूलों को तोड़ती आती थी। राजू खजूर के पत्तों से, सरकंडों के फूल तोड़ता चला। दक्षिण वाले खेत में, आम के बगीचे में, अपना नया घर देखे उसे काफी दिन हो गए थे। उसके पैर उसे धीमे-धीमे वहां ले गये। बाग के पश्चिम में एक ऊंची मिट्टी की दीवार थी। उसके परली तरफ, केतकी के झाड़ों के बाद रामय्या का नारंगी का बाग था। नाम तो नारंगी का बाग था, पर उसमें अधिक आम के पेड़ थे। ताल से अपने नये घर आने के लिए रास्ता रामय्या के बाग में से था। दीवार में कहीं-कहीं रास्ते थे। पर अब वह घूमकर ही आया था, वह रामय्या

के बाग में पैर न रखना चाहता था ।

अपने बाग में कदम रखते ही, उसने देखा कि दीवार से बने रास्तों को कांटों की झाड़ें ठूंसकर बंद कर दिया गया है । यह देख उसका माथा ठनका । दोनों परिवारों के बीच अब कांटों की झाड़ियों की दीवार आ गयी थी । गांव में ही दीवारें उठ आयी थीं । गांव दो भागों में बंट-सा गया था । उसने लंबी सांस छोड़ी । वह अपने नये घर के पास आ गया ।

उस दिन, रात की चांदनी में वह लक्ष्मी को वहां लाया था । यह दृश्य अब भी उसकी आंखों में समाया हुआ था । तब दीवारें ठीक तरह न उठी थीं, अब घर करीब-करीब पूरा हो गया था । सोचा गया था कि माता के मेले के बाद गृह-प्रवेश किया जायेगा । जब मेला ही नहीं लगा तो शादी कैसी और गृह-प्रवेश कैसे होगा ?

घर में सफेदी करनी ही बाकी थी । आंगन के दक्षिण में पंप भी लगवा दिया गया था । उसे ऐसा लग रहा था जैसे लक्ष्मी को बता रहा हो कि क्या-क्या काम बाकी रह गया है । जब वह हाथ पकड़कर उसे आंगन में ले जा रहा था, तो लक्ष्मी न अपना हाथ खींच सकी, न हाथ में हाथ रख ही सकी । अजीब शरम थी उसकी । मीठी-मीठी शरम ।

जब राजू दक्षिण के आंगन में जाने के लिए मुड़ा, तो उसे अपनी ही आंखों पर विश्वास न हुआ । लक्ष्मी चीकू के पेड़ के सहारे खड़ी हो, घर की ओर लगातार देख रही थी । उसे लगा कि कहीं यह सपना तो नहीं । जब लक्ष्मी ने उसे देखकर भागने की कोशिश की, तब उसे भान हुआ कि वह सपना न था ।

"लक्ष्मी !" उसने उसे बुलाया ।

लक्ष्मी घबरायी, पर खड़ी हो गयी । राजू पास गया । उसने उसके कंधे पर हाथ रखना चाहा । वह और घबरायी, पर वहां से जा न सकी ।

"क्या यह देखने आयी हो कि मकान कैसा बना है ?" राजू ने हंसी में पूछा । लक्ष्मी ने गंभीर हो सिर हिलाकर 'न' किया । उसमें न संकोच था, न शरम । वह उसकी आंखों में आंखें डालकर देख रही थी । उसकी नजर में न पहले का भय था, न चिंता थी ।

"हमारे बाग और तुम्हारे बाग के बीच कांटों की झाड़ियां लगा दी गयी है," लक्ष्मी ने कहा ।

"मैंने भी देखा है," राजू ने कहा ।

"उन्हें कैसे हटाया जाये वहां से ?" लक्ष्मी ने पूछा ।

राजू को इस प्रश्न का कोई उत्तर न सूझा ।

मल्ली वहां नीबू तोड़ने आयी । जब उसे आवाज सुनायी दी, तो उसने दक्षिण के आंगन की ओर देखा । उसके होश उसके न रहे । चुपचाप उसने चारों ओर देखा, कहीं ऐसा न हो कि रामय्या के आदमी उन्हें देख लें । दूर, केलों के बाग में, गंगप्पा केलों के पत्ते काट रहा था । मल्ली उसके पास भागी ।

"अरे भाई, लक्ष्मी बहन और राजू भाई नये घर के पास बातचीत कर रहे हैं । अगर किसी ने उनको देख लिया तो आफत आ जायेगी । तुम पूरब की ओर देखते रहना, कोई न आने पाये

और मैं पश्चिम की ओर...।"

मोटा पिलपिला गंगप्पा दौड़ा, और उसकी दौड़ भी औरों की मामूली चाल-सी थी। वह पूर्व की ओर के दरवाजे के पास लाठी ठुड्डी पर लगाकर खड़ा हो गया। चाहे जान चली जाये, वह किसी को उस तरफ से अंदर न आने देगा। मल्ली घूमकर, पश्चिम के दरवाजे के पास दीवार के सहारे खड़ी हो गयी।

"मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि आखिर बात इतनी बढ़ क्यों गयी ?" राजू ने कहा।

"अगर एक भी संभलकर वक्त पर पीछे हट जाता, तो बात इतनी न बढ़ती," लक्ष्मी ने कहा।

"अगर तुम्हारा रंगा मेरा टोकरा नीचे न फेंकता तो..." राजू ने कहा।

"रंगा जल्दबाज है, गुस्सैल है, अगर पद्दालु अपने पर काबू रखता तो...?" लक्ष्मी ने कहा।

"कुछ भी हो, तुम यह नहीं भूल सकतीं कि तुम रामय्या चौधरी की लड़की हो," राजू ने कहा।

लक्ष्मी ने अपना झुका सिर उठाकर राजू की ओर देखा। वह तूफान में पत्ते की तरह कांप उठी। वह भागने लगी अपने बाग की ओर। राजू चौंका। वह समझ गया कि वह कुछ गलत कह गया था। उसने पुकारा, "लक्ष्मी ! लक्ष्मी !" पर तब तक लक्ष्मी कांटों की झाड़ी को पार कर के चली गयी थी। "लक्ष्मी ! लक्ष्मी !" पुकारता राजू कांटों के झाड़ के पास गया।

"भैय्या !" मल्ली एक छलांग में वहां आ पहुंची, "नहीं भाई, अगर तुमने उस बाग में पैर रखा, तो आफत आ जायेगी। अगर किसी ने देख लिया, तो लक्ष्मी का बुरा हाल कर देंगे।"

राजू पीछे हटा। वह कांटों की झाड़ी की ओर देखता खड़ा रहा।

मल्ली ने कहा, "भैया, तुम लक्ष्मी बहन को तो कह रहे थे, पर तुम भी तो यह नहीं भूल सकते कि तुम सुब्बय्या चौधरी के लड़के हो।"

यह बात कहकर मल्ली, कबूतर की तरह उड़ गयी। उसका आंचल हवा में उड़ा। राजू चकित था। इतनी बावली लड़की इतनी गहरी, बड़ी बात कहेगी, उसने कभी कल्पना भी न की थी।

लक्ष्मी माता के मंदिर में जाकर ही कुछ संभल सकी, तब तक उसका दिल धक-धक करता ही रहा। वह माता की मूर्ति के सामने गिरकर, फूट-फूटकर रोने लगी। वह दुख, जो खेत से वह जब्त किये हुए थी, मंदिर में आकर फूट पड़ा। पुजारी पास आया और भागती लक्ष्मी के कंधे पर हाथ रख उसे सहलाया।

"बेटी, ये गुस्सा और यह तनातनी, ज्यादा दिन नहीं रहेगी। रोओ मत, मां की कृपा से कभी न कभी तुम दोनों का विवाह होकर रहेगा," उसने कहा।

"वह नहीं होगा, सारा गांव फांक-फांक हो गया है। कांटों की झाड़ियां रास्तों में डाल दी गयी हैं। हम दोनों के बीच कांटों की एक ऐसी दीवार आ गयी है, जिसे हटाया नहीं जा सकता।" कहती हुई लक्ष्मी रोने लगी।

रामय्या ने अपने बाग के बीच कांटों का बाड़ा लगवा दिया। सुब्बय्या भी, अपने दूसरे खेत के बीच कांटों की मेंड़ लगा रहा था। ताल के पास कांटों की झाड़ियां रखी जा रही थीं। रामय्या, वेंकन्ना, धर्मराजू और उसके पीछे वेंकटेश और पेंटय्या खड़े थे। वेंकन्ना ने जमानत देकर, पेंटय्या को छुड़वा लिया था। धर्मराजू और लिंगराजू हद-बंदी के लिए सांकल ले आये थे।

"तभी मैंने कहा था कि सर्वे का पत्थर रामय्या भाई के खेत में आ गया था, पर किसी ने मेरी बात न सुनी," धर्मराजू ने कहा।

"बाप-दादाओं के जमाने से वह पत्थर यहीं है, अब इसे हटाया तो हम नहीं मानेंगे," पुन्नय्या ने कहा।

"तो क्या इसी तरह हमारी जमीन अपने खेत में मिला लेना चाहते हो?" रामय्या ने कहा।

"किसकी जमीन किसने हड़पी है, यह अदालत में ही मालूम कर लेना।" सुब्बय्या ने कहा।

"अरे लगाओ झाड़!" वेंकन्ना गरजा।

"कैसे लगाओगे, देखता हूं," सुब्बय्या ने कहा।

वेंकटेश ने पद्दालु को, जो पत्थर गाड़ रहा था, धकेला। पुन्नय्या ने लिंगराजू के हाथ में से सांकल लेकर दूर फेंक दी।

कइयों की टांगें टूटीं, कइयों के सिर टूटे।

अगर झाड़ के उस तरफ का कौवा भी इस तरफ आता, तो उसे मार दिया जाता। खेतों में और गांव में, लोगों ने अकेला बाहर जाना छोड़ दिया। लाठियां लेकर, लोग जत्थों में इधर-उधर घूम रहे थे। दिन-रात लाठियों के एक साथ जमीन पर ठोके जाने की आवाज सुनायी पड़ रही थी। झोंपड़ियां जल रही थीं। खड़ी फसलें जल रही थीं। शहर-मजिस्ट्रेट के सामने कितने ही मुकद्दमे चल रहे थे। पुलिस को फुरसत न थी। शहर में वकीलों को बहुत काम था। कोई नहीं जानता था कि कब किसी जान पर आ बनेगी।

एकाएक, सर्दियों में तूफान आया। जो फसल खेतों में रह गयी थी, उसे बचाने के लिए सब किसान लग गये। उस दिन सब अपनी आपसी दुश्मनी भूल गये थे। एक दिन और एक रात लगातार वर्षा होती रही। जवान आदमी और जवान औरतों ने एक दिन और एक रात खेतों में ही बितायी। शाम को जाकर वर्षा जरा थमी। बूढ़े और औरतें, जो गांव में रह गयी थीं, खेतों में काम करने वालों के लिए खाना बांधकर लाये।

कुछ खेत गांव के पश्चिम में, नाले के परली तरफ थे। जितनी फसल बचायी जा सकती थी, उसे बचाते-बचाते अंधेरा हो गया। दोपहर ढल गयी। किसानों ने जरा आराम किया। दिन भर कुछ खाया न था, इसलिए घर से आये खाने को, गीली जमीन पर बैठकर, उन्होंने भर पेट खाया। हल्के मन से, थके-मांदे वे घर की ओर चले, स्त्रियां, पुरुष, जवान, बच्चे-बूढ़े, सभी। नाले में घुटने से ऊपर पानी था। वे उसे पार करने निकले।

रामी बच्चे को उठाकर नाले में उतरी। रंगा उसके सामने आया। वह उसके रास्ते से हट गयी। रंगा उसकी ओर बढ़ ही रहा था कि हाथी-से बड़े गंगप्पा ने उसको रोका। जो नाले में उतर रहे थे, उन्हें तुरंत गांव में बढ़ती दुश्मनी याद हो आयी। वे तुरंत दो जत्थों में बंट गये। कुछ लोग गंगप्पा के पीछे थे, तो कुछ रंगा के। रामी नाला कुछ ऊपर की तरफ से पार कर रही थी। उसके साथ गंगप्पा उसकी रखवाली करता जा रहा था। उसने अपने चुरट को दांतों में दबाकर बाहर थूका। वह थूक धार में, रंगा के पास बह गया। रंगा ने पीछे मुड़कर देखा। जब उसने अपने पीछे कुछ लोगों को देखा तो हिम्मत आ गयी। वह धार के उल्टी ओर गंगप्पा की ओर चला। जो लोग जहां थे वहीं रुक गये। हालत एक ऐसे पटाखे की तरह थी, जो कभी भी फूट सकता था।

"मुझ पर थूकते हो ?" रंगा चिल्लाया।

"तुम पर किसने थूका है, नाले में थूका है," गंगप्पा ने कहा।

"गधा कहीं का !" रंगा ने अपनी लाठी उठाकर कहा।

"अरे जबान संभालो !" कहता गंगप्पा उसकी ओर लपका। स्त्रियां और बच्चे, डर के कारण चिल्लाने लगे। किसी तरफ जाने का रास्ता नहीं था। सभी झगड़े में लपेट लिए गये थे। देखते-देखते नाले में पानी भी बढ़ने लगा, पर लड़ाई में फंसे लोग यह न देख सके। कुछ बूढ़े और स्त्रियां चिल्ला-चिल्लाकर नाला पार कर रहे थे। वे भी न जानते थे कि नाले में पानी चढ़ रहा था। रंगा रामी की ओर बढ़ा। उसने लड़के को छोड़ दिया, उसके गले तक पानी आ गया था, अगर पुल्ली उसे झट न उठा लेती, तो वह डूब जाता। नाले में इस तरह पानी उछल रहा था, जैसे कुछ हाथी उसमें आ घुसे हों। जो यह जान गये कि पानी चढ़ रहा था, लड़ना छोड़कर नाले के पार जा रहे थे। किनारे पर से राजू ने यह दृश्य देखा। वह भीगे धान के गुच्छों को गाड़ी में डालकर उस तरफ आ रहा था। उसने उन्हें किनारे पर डाल, गाड़ी नाले में हांक दी। वह जिन्हें तैरना न आता था, उन्हें गाड़ी में बिठाकर नाले के पार लगा रहा था। नाले में बाढ़-सी आ गयी थी। वह गोदावरी-सी लगता था। उस धार में, उनके लिए भी जो तैरना जानते थे, नाला पार करना मुश्किल था। उत्तर की ओर आकाश में, मेघ और पहाड़ एक-से लग रहे थे। बिजलियां चमक रही थीं। यद्यपि वहां वर्षा रुक गयी थी, पहाड़ों में मूसलाधार बारिश हो रही थी और नदी बढ़ती जाती थी। बाढ़ के कारण गांव को तो खतरा न था, पर जमा की हुई फसल उसमें बह जाती। राजू, बिना किसी भेद-भाव के, हर किसी को नाले के पार ले जा रहा था। बैल थक गये थे, वह स्वयं थक गया था। अंत में, दो बूढ़े और दो बच्चों को नाले के पार ले गया। किनारे पर खड़े होकर उसने नाले की ओर देखा, अब पानी में कोई न था।

"सब किनारे पर आ गये हैं न ?" पास में खड़े पद्दालु से पूछा। उसने अभी यह कहा ही था कि दस गज दूरी पर रंगा का सिर पानी के ऊपर दिखायी दिया। पास ही, फिर रामी का सिर दिखायी दिया। रामी मुश्किल से सांस ले पा रही थी और रंगा, उसके सिर पर दोनों हाथ रखकर, उसे डुबाने की कोशिश कर रहा था। रामी बचने के लिए हाथ-पैर मार रही थी। राजू

यह देख आग-बबूला हो उठा। वह तुरंत नाले में कूदा। रंगा को, कुरता पकड़कर खींचा। रामी पानी से ऊपर उठी। उसकी आंखें और मुंह सूज गया था।

"वह मुझे डुबा रहा था," रामी ने मुख से पानी उगलते हुए कहा। राजू यह सुन आपे से बाहर हो गया। उसने रंगा को एक चपत जमायी। रंगा एक तरफ गिरते-गिरते बचा। संभल कर वह राजू की ओर लपका। वह राजू के सामने टिक न सका। किनारे की ओर जाते हुए उसने कहा, "तुम्हें अगर गड़वा न दूं, तो देखना।"

रंगा चला गया। राजू पैर घसीटता, किनारे पर गया। उसका मन और शरीर दोनों ही थक गये थे। वह पानी के किनारे की घास पर चित्त जा गिरा।

"आओ भाई, सिर भीग गया है। अगर सुखाया न गया, तो जुकाम हो जायेगा," मल्ली ने कहा। वह इधर-उधर की बातें सुनकर वहां भागी-भागी आयी थी।

मुश्किल से राजू उठ पाया। यंत्र की तरह घर की ओर चल पड़ा।

रात को माता की दीपाराधना करते समय, पुजारी ने देवी की ओर देखा। न मालूम उसको उसकी आंखों में क्या दिखायी दिया!

'मां, अपने ही बच्चों पर क्यों रूठ गयी हो? जिस नाले में इतने दिन बाढ़ न आयी थी, उसमें अब बाढ़ क्यों आयी? किसकी बलि लेने के लिए?' पुजारी ने मन ही मन सोचा।

घर पहुंचने के बाद, रंगा भय, प्रतिकार में बदला लेने की सोचते हुए भीषण कोप में पड़ा था।

"वह जब यों पीट रहा था, तुम में से एक भी तो उसे रोकने के लिए नहीं आया? क्या फायदा है इतने लोगों को पालने का? सब फालतू! उसे और तुम्हें गाड़ न दिया तो देखना। घर आराम का खाना है, सब बेकार ही।" रंगा ऊटपटांग बक रहा था। उसे एक खाट पर लिटाकर सूरालु गरम पानी से उसकी टकोर कर रही थी।

"थोड़ी देर और होती, क्या अपना लड़का बचता?" दुखातुर सूरालु ने कहा। भय से उसका गला सूख गया था और रामय्या, घायल शेर की तरह चबूतरे पर घूम रहा था।

"यह नहीं, हुजूर..." वेंकटेश ने कुछ कहने की कोशिश की।

"चुप भी रह...तुम सब पहले बाहर जाओ," धर्मराजू ने कहा, जैसे वह बीच-बचाव करने की कोशिश कर रहा हो। जो कुछ हुआ था धर्मराजू और वेंकन्ना ने, पेंटय्या की जुबानी सुना था। लड़ाई किस बात पर हुई थी, अभी तक इसका कारण रामय्या को मालूम न था। उसने उनसे कह रखा था कि वे न बतायें कि वाकई लड़ाई क्यों हुई थी। बेअक्ल हैं, कहीं किसी के मुंह से बात निकल गयी तो कुछ का कुछ हो जायेगा। यह भी संभव है कि रामय्या, रंगा पर ही गुस्सा करे। इसलिए उसने उन सब को भेज दिया था।

"भाई, हमारे पास काफी गवाही हैं, अदालत में फौजदारी का केस दायर कर दो, और उस आवारा को जेल भिजवा दो," धर्मराजू ने कहा।

"अरे दम है तो इस मुकदमे का निबटारा गांव में ही करना होगा। अगर अदालत में गये तो इसका मतलब यही ही है कि हम उनसे डर गये हैं," रामय्या ने कहा।

रामय्या के अदालत न जाने का एक और भी कारण था। रंगा की घर में सेवा-शुश्रूषा की जा रही थी। हनुमंत ने आकर इस प्रकार कहा, "बाबू, आपका दामाद बहुत बड़ा आदमी है। अगर वे न आते, तो आधे लोग नाले में बह जाते। उन्होंने बिना किसी भेद-भाव के सब की मदद की। पेंटय्या की पत्नी और वेंकटेश के पिता को उन्होंने ही किनारे पर लगाया था।"

दोनों परिवार एक होकर रहें, गांव में शांति रहे, तभी उसके व्यापार के लिए अच्छा था। हनुमंत को यह भी डर सता रहा था कि अगर यह झगड़ा चलता रहा, तो उसके घर पर भी मुसीबत आ सकती थी। इसलिए रामय्या से बात करते समय, बात-बात पर राजू को "दामाद" कहता। वह यह भी जानता था कि अगर उसने रंगा की करतूत के बारे में बताया तो वेंकन्ना नाराज होगा। इस तरह वह मुफ्त ही आफत मोल ले रहा था। इसलिए जब रंगा चबूतरे की ओर आया, तो वह वहां से चला गया।

रंगा बदले की बात कर रहा था और रामय्या के मन में, हनुमंत की बातें ही गूंज रही थीं। राजू ने सभी की मदद की, तो उसने रंगा को क्यों पीटा? इसने जरूर कुछ शरारत की होगी, वह संदेह रामय्या के मन में उठने लगा था। इसलिए ही उसने मुकदमा दायर करने का सुझाव नहीं माना था। ऐसी भी बात नहीं कि वह केवल न्याय की ही बात सोच रहा हो, वह जानता था कि मुकदमा चला तो अदालत उसकी तरफ की ही गवाही नहीं सुनेगी, बल्कि उनकी भी। अगर यह साबित हो गया कि दोष रंगा का ही था, तो बदनामी ही मिलेगी गांव में। रामय्या के लिए यह गौरव सबसे अधिक महत्व का था कि वह निष्पक्ष था, न्याय का पक्षपाती था। दूसरों की गवाही भले ही झूठी हो, अगर गांव वालों का यह संदेह रहा कि वह सच है, तो उसकी प्रतिष्ठा गांव में कम हो सकती थी। किंतु उसका विश्वास था कि मेले के अवसर से गांव में जो तनातनी, मार-पीट चल रही थी, उसके जिम्मेवार सुब्बय्या और राजू ही थे। रंगा ने गैर-जिम्मेवारी ही बरती हो, पर क्या इतनी बात को सुब्बय्या को बढ़ाना चाहिए था? खैर, इतना झगड़ा होने के बाद ही उसने क्यों नहीं यह कहा – 'भाई, गलती किसी की भी हो, जो हो गया सो हो गया। इस तरह के झगड़े आइंदा न हों, यह देखना हमारा फर्ज है?' क्या सुब्बैया नहीं जानता कि वह कितना न्यायशील आदमी है? इस झगड़े का असली कारण उसका ट्रैक्टर खरीदना है और पीढ़ी दर पीढ़ी, मजदूर वगैरह पेट पालने वालों की रोटी छीनना है। वह भी गांव का बड़ा बुजुर्ग है, उस पर भी उन लोगों को काम-धंधा दिलाने का दायित्व है। जब उन सबने आकर मेरे पास अपना रोना रोया तो मैंने दस रुपये दे दिये। बस, क्या इतनी बात पर, सुब्बय्या को यह कहना चाहिए था कि मैंने उनको ताड़ी पिलवायी है और मैंने ही यह सब गड़बड़ी करवायी है?

लक्ष्मी ने, यह सब कमरे में, खंभे के सहारे खड़े होकर सुना। उसका दिल दुख के मारे दबा जाता था, एक ऐसा दुख जो आंसुओं से भी परे था। वह धीमे-धीमे, सीढ़ियों पर से अपने कमरे में चली गयी।

मल्ली को छोटी गली की चौपाल से अंदर आता देख रंगा झट बोल उठा, "क्यों आयी हो?"

"बहन को देखने," मल्ली ने कहा ।

"क्या तुम्हें, तुम्हारे भाई ने भेजा है ?" वेंकन्ना ने पूछा ।

"क्यों चाचा, क्या मुझे देखने नहीं आना चाहिए ?" मल्ली ने रामय्या की ओर देखते हुए कहा । जब उसने कुछ न कहा, तो वह पीछे जाने के लिए मुड़ी ।

"मल्ली !" लक्ष्मी ने छज्जे पर से उसे पुकारा । वह खड़ी होकर ऊपर देखने लगी ।

"शरम नहीं आती, वहां क्यों खड़ी हो ?" रंगा ने झिड़का

मल्ली, सिर नीचा करके खड़ी रही । रामय्या को यह बुरा लगा । वह जानता था कि मल्ली के मन में कोई कड़वाहट न थी, उसमें कड़वेपन के लिए जगह ही न थी ।

"क्यों उस बेचारी पर हल्ला कर रहे हो ?" रामय्या ने कहा । सूरालु को मल्ली बड़ी प्यारी थी, उसे उस पर बहुत दया आती थी ।

"जा बेटी, ऊपर जा ।" सूरालु ने कहा । रामय्या का मुंह देखकर, रंगा और वेंकन्ना और कुछ न कह पाये । मल्ली दुमंजिले पर चली गयी ।

मल्ली को देखते ही, उसे गले लगाकर लक्ष्मी फूट-फूटकर रोने लगी । इतने दिनों में, जिस दुख को उसने रोक रखा था, वह उमड़ पड़ा था ।

"बहन, रोओ मत । जो झगड़े बीच में आये हैं, वे अंत तक नहीं रहेंगे । मल्लमा देवी, तुम दोनों को ठीक देखेगी ।" गंभीर होकर मल्ली ने कहा और मल्ली की इन बातों से लक्ष्मी को बड़ी सांत्वना भी मिली ।

"अरे, तुमने तो खेत की ओर आना बिलकुल ही बंद कर दिया है," मल्ली ने कहा ।

"कैसे आऊं ?" लक्ष्मी बोली ।

"आदमी, आदमी आपस में लड़ते हैं, मगर ताल ने क्या किया है ? बड़े इमली के पेड़ ने क्या किया है ? तुम्हें आता न देख, खेत भी उदास हैं । मैं रोज गौ को चराने ले जाती हूं । हाल ही में तो वह ब्यायी थी । मामा कहते हैं कि नौकर-चाकर हैं, तुम इसे क्यों ले जाती हो ? मैं कहती हूं, क्या जाता है अगर मैं ही ले गयी तो ? जब बछड़ा सवेरे दूध पीकर कूदता-फांदता है, तो देखते ही बनता है । कल वह हमारे घर में ही आ गया, इधर-उधर की चीजें दिखलाकर मैं उसे ले गयी । देखना, बछड़ा कैसे बड़ा होता है ! वह जरूर बाजी मारेगा मुकाबले में । भाई उसे बड़ा प्यार करता है ।"

गांव में सिर फूट रहे हैं, इतना लड़ाई-झगड़ा चल रहा है । पर मल्ली बड़े आराम से ये खबरें सुना रही थी । मल्ली न मालूम इन बातों से बेखबर हो, मस्त कैसे रह पा रही है ? मल्ली की बातें सुनकर लक्ष्मी को लगा जैसे गांव हमेशा की तरह शांत और सुखी हो । जो वह कह रही है, वह भी ठीक है । ये बातें, ये झगड़े ज्यादा दिन नहीं चलेंगे । ये सब क्षणिक हैं, अनावश्यक हैं, ऐसा लक्ष्मी को प्रतीत हुआ । ये खबरें, यह आराम, यह शांति हमेशा बनी रहे । उसे ऐसा लगा जैसे गांव के बुरे दिन काफूर हो गये हों । जब मल्ली जाने के लिए उठी, तो लक्ष्मी को बड़ा दुख हुआ । यह कहकर कि वह रोज आ जाया करेगी, मल्ली चली गयी ।

मल्ली ने मंदिर के पिछवाड़े बैठकर भाई के नाम पत्र लिखा । "बहन लक्ष्मी को देख

आयी हूं। बेचारी बहुत दुखी है।" यह पत्र भी, पिछले पत्रों के साथ एक लिफाफे में रखकर, गांठ में बांध लिया।

खेत के बीच कांटों की झाड़ी की दीवार के पास एक तरफ राजू खड़ा था और दूसरी तरफ लक्ष्मी।

लक्ष्मी राजू से मिलने नहीं आयी थी। वह जानती थी कि उसका उससे मिलना खतरे से खाली न था। पर जब वह इमली के पेड़ के पास आयी, तो उसने सोचा कि क्या ही अच्छा हो यदि वह दिखायी दे जाये ! जब वह दिखायी पड़ गया, तो उसके पास आये बगैर भी न रह सकी। और जब वह बातचीत छेड़े, तो बिना बात किये कैसे रहे ?

"क्या कह रहे हैं तुम्हारे पिता जी ?" राजू ने पूछा। लक्ष्मी को यह बुरा लगा। कुछ दिन पहले तक रामय्या उसके लिए मामा था और अब वह लक्ष्मी का पिता हो गया ! लक्ष्मी ने कुछ देर उस प्रश्न का उत्तर न दिया। कुछ ठहरकर उसने पूछा, "क्या यहां यह कांटों की दीवार रहनी ही चाहिए ?"

राजू ने लंबी सांस ली।

"यह दीवार यहां आयी ही क्यों ? कब और कैसे जायेगी, मैं सोच नहीं पाता हूं," राजू ने कहा।

"अगर कोई एक अपनी जिद छोड़ दे और आमने-सामने खड़े होकर दोनों तरफ के लोग कुछ सोचें-समझें - क्या हममें कभी 'हमारा-तुम्हारा' का भेद था ? कितने मिल-जुलकर हम रहते थे !" लक्ष्मी, एक-एक शब्द तोलकर कह रही थी।

"अगर मैं अपने को मनाकर आ भी गया, तो रंगा और तुम्हारा भाई मुझे तुम्हारे पिता से बातें करने देंगे ?"

"फिर, तुम्हारे पिता जी ?" लक्ष्मी ने लंबी सांस लेकर धीमे से कहा। "क्या रंगा पर गुस्सा करना ही बड़ी बात है ? वह भी क्या तुम्हारे समान है ? जब नाले में बाढ़ आयी थी, तो तुमने उस पर क्यों हाथ उठाया था ? "

"अगर मैं हाथ न उठाता, तो वह रामी को डुबो देता। मैं अपना गुस्सा काबू में न रख सका। फिर भी, तुम्हारे पिता क्यों उसकी हर बात की तरफदारी करते हैं ?"

"अब तक तो तुम 'हमारा मामा' कहा करते थे, अब वह 'तुम्हारे पिता' हो गये हैं !" लक्ष्मी ने मन की बात बाहर उगल ही दी।

"वे जितने हम से दूर हैं, हम भी उनसे उतने ही दूर हैं," राजू ने कहा।

लक्ष्मी को यह बात चुभी।

"यही तो मैं कह रही हूं, अगर दोनों में से कोई एक पास आया तो दूसरा स्वयं आ जायेगा।"

"तुम यह बात अपने पिता से क्यों नहीं कहतीं ?"

"मैंने सोचा था कि कम से कम तुम मेरी बात सुनोगे। हमारे पिता और तुम्हारे पिता पुराने जमाने के हैं। उनमें हठ, जिद ज्यादा है। सोचा था कि तुम उनसे अलग हो।" लक्ष्मी की

आवाज में निराशा थी। ग्लानि भी। पर राजू के मन मेंरामय्या के बारे में कितनी ही इधर-उधर की बातें जमा हो गयी थीं। उसका ट्रैक्टर से खेती करना और उनके परिवार से आगे बढ़ जाना, रामय्या को गवारा न था। तभी तो खेती के मजदूरों को भड़काकर मेले में हो-हल्ला करवाया था। उसके इन विचारों के लिए किसी प्रकार के प्रमाणों की जरूरत न थी। इसलिए उसका मेरे पास आकर क्षमा मांगना उचित है। यद्यपि उसने ये बातें लक्ष्मी से कही न थीं, पर उसके मन में वे अवश्य थीं।

"अगर तुम्हारे पिता मेरे सामने आकर मुझे डांटे तो भी मुझे मंजूर है। पर पीछे-पीछे से यह सब करवाते रहें, तो हम दोनों का मिलना नामुमकिन है।"

"जान चली जाये, पर मेरे पिता ऐसी बातें नहीं करेंगे, न करवायेंगे," लक्ष्मी ने कहा।

"तो तुम्हारा मतलब है कि यह सब हम करवा रहे हैं?"

"कौन करवा रहा है, गलती किसकी है, यह तो माता ही जानती है। पर जब मन में गुस्सा होता है, तो जिस पर गुस्सा होता है, उसकी हर बात बुरी लगती है।"

कुछ दूरी पर, कांटों की झाड़ी के इस तरफ, सुब्बय्या के घर की गौ और उस तरफ रामय्या की गौ, आगे बढ़कर एक-दूसरे को चाट रही थीं। राजू और लक्ष्मी ने यह देखा और शर्मिंदा हुए।

"उन्हें कोई दीवार या रुकावट दूर नहीं रख सकती," लक्ष्मी ने कहा।

"उनमें जो अक्ल है हममें नहीं है," राजू ने कहा।

मानो यह साबित करने के लिए ही, उस तरफ रंगा और वेंकन्ना आ निकले।

"छिः, शरम नहीं आती, पराये आदमी से इस तरह बात कर रहे हो!" वेंकन्ना ने आपे से बाहर होते हुए कहा।

"चलो!" रंगा ने कहा।

दोनों, लक्ष्मी की बांहें पकड़कर वहां से ले गये। राजू ने चाहा कि झाड़ों से ऊपर कूदकर लक्ष्मी को बचाये। पर उसके हाथ-पैर न हिले और सुब्बय्या और पुन्नय्या ने भी यह सब देखा।

जब रामय्या को यह बात मालूम हुई, तो बड़ा बिगड़ा। उसने कहा, "तुम गलती से मेरे घर पैदा हुई हो।"

"क्या कांटों की-सी बातें कर रहे हो!" सूरालु ने कहा। वह इस ख्याल में थी कि कभी न कभी हालत ठीक होगी और लक्ष्मी जल्दी से जल्दी सुब्बय्या के घर जायेगी। यद्यपि दोनों परिवारों में झगड़ा हो गया था, दोनों में बातचीत न थी, तो भी उसका मन यह न मानता था कि हालत इतनी गयी-गुजरी है। अब तक तो कभी न कहा, पर अब हिम्मत करके उसने कहा, "आज नहीं तो कल, यह उस घर की बहू ही तो है।"

"क्या? उसके घर देने से तो यह अच्छा है कि इसकी गर्दन मरोड़कर नदी में फेंक दिया जाये।" वेंकन्ना ने कहा। उसने इस तरह की बात कभी भी पिता के सामने न कही थी। रामय्या के मन में तरह-तरह के विचार खींचा-तानी करने लगे। लड़की पर उसे लाड़ था। सुब्बय्या का नाम सुनते ही उसे आग-सी लग जाती थी। कभी भी उसने अपनी लड़की को ऐसी बात

न कही थी, अगर पत्नी न कहती तो शायद वह ही कहता। भले ही यह बात न कही हो, पर मन में यह बात जरूर सुलग रही थी, पानी में तेल की तरह तैर रही थी। इन विचारों का, गुस्से और जिद से कोई मेल न था। जब गुस्सा अधिक हुआ तो तेल भाप बन गया।

"क्यों तुम्हारा घमंड भी बढ़ रहा है? इतना सब होने के बाद, मैं क्या उस घर में लड़की दूंगा?" रामय्या ने गुस्से से कहा। सूरालु को रोना-सा आ गया।

"आ बेटी," उसने लक्ष्मी को अपने पास ले लिया।

जब सास को इस तरह डांट पड़ी, तो बहू को कुछ संतोष हुआ। उसने किवाड़ के पीछे से धीमे-धीमे कहा, "उस लड़की को बुरा-भला कहने से क्या फायदा? जमाना बदल गया है। सिनेमा क्या आया कि गांव में भी लोग प्रेम करने लगे हैं, इधर-उधर भटकने लगे हैं।"

लक्ष्मी न अब तक रोयी थी और न उसने एक भी बात ही कही थी। जब मां ने उसे पास बुला लिया, तब भी वह अपने दुख में फूटी नहीं थी। जब उसने राजू को भी, अपने भाई की तरह बात करते देखा, तो उसका मन भी कहीं शायद पथरा-सा गया था। उसे निराशा में ही, एक प्रकार का साहस आ गया था।

"भाभी, हर स्त्री के मन में कोई न कोई इच्छा होती है, उन्हें सिनेमा देखकर सीखने की जरूरत नहीं है। मैं यह सोचकर गयी थी, अगर पिताजी और वे आपस में मिल गये तो ये झगड़े खत्म हो जायेंगे और मेरी जिंदगी भी ठीक हो जायेगी।"

"क्या तुम यह सोच रही थीं कि अगर तुम उसके पास जाकर रोयीं-धोयीं तो वह बदमाश पिताजी के पास जाकर उनको मनायेगा?" वेंकन्ना ने कहा।

"कभी तो तुम यह सोचा करते थे कि वह तुम्हारा बहनोई हो जाये तो काफी है। अब वही बदमाश हो गया है। तुम मर्दों में स्नेह और प्रेम की अपेक्षा हठ और जिद ज्यादा है। मेरे लिए किसी को भी किसी के पैरों पर पड़ने की जरूरत नहीं है। तुम एक-दूसरे का सिर फोड़ो और अपनी ख्वाहिश पूरी करो।" लक्ष्मी धीमे-धीमे, सीढ़ियों पर से अपने कमरे में चली गयी। रामय्या चकित था। लड़की ने जो कुछ कहा था उसमें कितना सच था, यह वह जानता था। उसने यह बात साफ-साफ कह दी थी, इसलिए उसके मन में अपनी लड़की के प्रति गौरव भी था। पर एक छोटी-सी लड़की इतनी बड़ी बात कैसे कह गयी थी, उसका स्वाभिमान यह मानने को तैयार न था।

बड़ी गली की चौपाल में जाकर वह काफी देर तक इधर-उधर घूमता रहा। उसके मन में हर बात सूझ रही थी। यदि वह हिम्मत करके खेत पर चला गया और उसने यों ही राजू को पुकारा – 'जमाई बेटा' तो राजू जरूर मामा कहेगा और सारा झगड़ा तय हो जायेगा। पर उसके मन में कितनी ही परतें थीं जो उसे यह कहने न दे रही थीं और उन परतों को पार करके जब उसका विचार बाहर आयेगा, तो अंधेरा हो जायेगा। अंधेरे में सच और भी निखर जाता है। जब आंखों से देखे जा सकने वाले दृश्य ओझल होने लगते हैं, तो मन में छिपे हुए दृश्य और स्पष्ट दिखने लगते हैं।

जब वह अंधेरे में गली में से खेत की ओर जा रहा था, तो उसे गश्त करता पुलिस का

सिपाही नहीं दिखायी दिया। माता के मंदिर के पीछे पहले की तरह शांति थी। गली के पत्थर पहले की तरह किच-किच कर रहे थे। राजवाह पर उसने और सुब्बय्या ने मिलकर पुल बनवाया था, उसी पुल पर से गांव में गाड़ियां आ-जा रही थीं। उसके मन में और गले में 'जमाई बेटा' का स्वर निरंतर घूम रहा था। आखिर जब खेत पहुंचा, तो यह बात उसके मुख से बाहर न निकली, जब उसने वहां का दृश्य देखा तो मन की बात मन में ही घुट-सी गयी।

खेत के बीचो-बीच ट्रैक्टर जल रहा था। पद्दालु, नाले में से पानी लाकर उस पर उड़ेल तो रहा था, पर आग बुझ नहीं रही थी। पुलिस वाले, वेंकटेश और पेंटय्या को पकड़े हुये, दूर खड़े थे। अगर वे आकर उनको न पकड़ते तो दोनों को सुब्बय्या के आदमी मार देते। खेत की मुंडेर पर सिर नीचे किये राजू उदास बैठा था। उस आग में, सुब्बय्या और पुन्नय्या के चेहरे, गुस्से के कारण तमतमा रहे थे। कांटों की झाड़ी की दीवार के पार धर्मराजू, रंगा, लिंगराजू और वेंकन्ना खड़े होकर तमाशा देख रहे थे। उनके चेहरों पर प्रसन्नता थी। रामय्या को यह दृश्य बहुत लग रहा था। वह जानता था कि ट्रैक्टर के जलाने में उसके लड़के और धर्मराजू की जरूर कोई साजिश रही होगी। उसे इतना गुस्सा आ रहा था कि उन दोनों को चीरकर रख देना चाहता था। तभी उसे पुन्नय्या की बात सुनायी दी। पुन्नय्या ने ताल के छोर से उसे आग की रोशनी में देख लिया था।

"अब बड़े चौधरी भी आ गये हैं। इन्होंने ही तो पैसे देकर ट्रैक्टर जलवाया है। जमानत पर इन लोगों को छुड़वाने के लिये आ गये हैं," उसने जोर से कहा।

"क्या बक रहे हो ?" रामय्या ने कहा। उसके मन में पहले ही तूफान उठ रहा था और यह बात सुन वह और भी बढ़ गया था। रामय्या का दुख साधारणतया क्रोध में बदल जाता था।

"मैंने पैसे देकर इसे जलवाया है ?"

"अगर तुमने उनको पैसे नहीं दिये, तो भला किसने दिये ? जिनके पास खाने तक को नहीं है, उनके पास पैट्रोल खरीदने के लिए पैसे कहां से आये ? मेले के दिन उन्हें ताड़ी पिलवायी थी और आज उन्हें पैट्रोल दिलवाया है," सुब्बय्या ने कहा। वह आपे से बाहर हो गया। उसे मुंडेर के किनारे-किनारे आकर कहा, "कहो फिर वही बात..." शायद सुब्बय्या कहता और न मालूम रामय्या तब क्या करता कि तभी पुलिस वालों ने आकर दोनों को रोक लिया। इतने में ट्रैक्टर का पैट्रोल टैंक भभक उठा। ट्रैक्टर बम की तरह फूट पड़ा। लोहे के टुकड़ों की और पैट्रोल की बौछार कांटों की झाड़ियों पर और पास खड़े लोगों पर पड़ी। सब शोर सुनकर घबरा गये थे। पर राजू जहां बैठा था, वहां से न हिला। उसका मन बर्फ-सा जम गया था। यह विस्फोट भी उसे न हिला सका। यही मौका देख वेंकटेश और पेंटय्या भाग निकले। पुलिस वालों ने उनका पीछा किया। अंधेरे में बागों में, खेतों में वे दोनों अपराधी जा मिले। धर्मराजू और लिंगराजू विस्फोट के बाद तुरंत चले गये। वेंकन्ना और रंगा भी खिसक गये। दोनों के कान बहरे हो गये थे, दिल भी घबरा रहे थे। सुब्बय्या और पुन्नय्या भागे-भागे राजू के पास आये।

"क्यों बेटा, कहीं कुछ चोट तो नहीं लगी ?" सुब्बय्या ने पूछा।

"नहीं तो," राजू ने कहा।

"चलो उठो, घर चलें," पुन्नय्या ने कहा। राजू धीमे से उठा। उसने जलते हुए ट्रैक्टर की ओर देखा। सिर नीचा करके चला गया। रामय्या को लगा कि उसकी पीठ झुक गयी थी, जैसे अभी ही पचास के पार उसकी उम्र हो गयी हो। उसका मन कहीं यह भी कहता था कि वह स्वयं ही इसका कारण था। रामय्या ने अपने क्रोध को बढ़ाकर, इस आत्मग्लानि को मन ही मन दबा दिया। ताल के किनारे खड़ा-खड़ा वह कुछ देर आग की ओर देखता रहा।

सुब्बय्या, राजू और पुन्नय्या जब घर पहुंचे, तो धर्मराजू शेषम्मा से बात कर रहा था। उसने सोचा न था कि ये लोग इतनी जल्दी घर वापस आ जायेंगे। उन्होंने उसे और उसके लड़के को खेत में देखा था। उनके मन में संदेह उठ सकता था कि ट्रैक्टर जलवाने में उसका भी हाथ था। वह जानता था कि वेंकन्ना ने वेंकटेश को पैसा दिया था। उस पैसे से वे शहर की ओर जाने वाले सड़क के पास के पैट्रोल पंप से पैट्रोल खरीद लाये थे। वह भी पैट्रोल खरीदकर लाया था और यह भी जानता था कि उसने उस पैट्रोल को तेलिन मंगम्मा के घर छिपा दिया था। पर उनको उस पर संदेह नहीं होना चाहिए था, क्योंकि जल्दी ही पंचायत के चुनाव आ रहे थे। पहले चुनाव नाम मात्र के होते थे। रामय्या और सुब्बय्या ही मिल-मिलाकर सदस्यों का निर्णय किया करते थे और अध्यक्ष होने के लिए एक-दूसरे से कहा करते थे। वह भी कभी-कभी सदस्य बन जाता था, पर सदस्यों की उन दिनों कोई धाक न थी। हर प्रस्ताव, दोनों बड़े चौधरी, आपस में सलाह-मशविरा करके रखा करते थे और उनका कोई विरोध भी नहीं करता था। पर अब समय बदल गया था। दोनों परिवारों में अब पटती न थी। चुनाव जरूर लड़ा जायेगा, मुकाबला होगा। वे मजदूर भी थे, जिनको सुब्बय्या ने काम से निकाल दिया था। उनको रामय्या की मदद तो मिलती थी, पर सच कहा जाये तो वे धर्मराजू की ही बात सुनते थे। दो हाथी आपस में भिड़ जायें तो बीच में सियार को मजा आता है। अब पंचायत समिति में उसका स्थान मुख्य होने वाला था। उसका इसी में भला था कि दोनों बड़े किसानों से दोस्ती बनाये रखे। तब वह गांव में अपनी धाक जमा सकता था। अगर वह सीधे सुब्बय्या से बात करता, तो शायद वह न मानता। उसकी बात आदमी आसानी से नहीं मानते थे। इसलिए वह शेषम्मा को फुसला रहा था, बाद में वह सुब्बय्या को मना लेगा। उसने, खेत में जो कुछ हुआ था, उसे बड़े विस्तार के साथ उसे सुनाया :

"शेषम्मा भाभी, जो बात जैसी है उसे वैसे ही सोचना चाहिए। मेरा तो यह विश्वास है कि रामय्या भाई को इस बारे में कुछ भी नहीं मालूम। वह दुष्ट रंगा ही इस सबका कारण है। उसने ही पैसे देकर यह पैट्रोल मंगवाया था। फिर भी मैं एक बात कहना चाहूंगा। सुब्बय्या भाई भी बड़े गुस्सैल हैं। अगर मैं अच्छी बात कहूं, तो भी नहीं मानते। यह वेंकटेश आपके यहां जाने कब से काम कर रहा है, उसे काम से हटा देना अच्छा नहीं था। ट्रैक्टर खरीदा जा सकता है, उससे खेती भी की जा सकती है। मैं इसे गलत नहीं कहता। अगर सुब्बय्या भाई उनसे कहते, 'देखो, जब तक तुम्हें और काम नहीं मिलता मैं यह इंतजाम कर रहा हूं, तुम्हें कोई

नुकसान नहीं होगा। वक्त बदल रहा है, मशीन की खेती आज नहीं तो कल आकर रहेगी ही। तुम अभी से और कोई काम देख लो।' अगर वे इस तरह कहते, तो क्या आज वे यह करते? दूसरों की बात भला सुनते? उन्होंने ट्रैक्टर जला दिया है, अगर उन्हें ले जाकर जेल में भी डाल दिया गया, तो भी उन्हें क्या फिक्र है?..."

अभी उसका भाषण समाप्त न हुआ था कि सुब्बय्या, पुन्नय्या और राजू वहां आ पहुंचे। उसने अपनी बात झट बदल दी। संभलकर उसने कहा, "बहू, जरा पीने के लिए पानी तो ला दो।"

"जा बाहर पहले," राजू ने धीमे से कहा। धर्मराजू बुरी तरह घबरा गया। अगर राजू जोर से कहता, तो डर के मारे वह तब तक ताल किनारे पहुंच गया होता। वह इतना घबरा गया था कि क्या किया जाये, उसे न सूझा। राजू के स्वर में और चेहरे पर धर्मराजू को भयंकर ज्वालाएं दिख रही थीं।

"ऐसी बात नहीं राजू, मेरी बात मानो, मुझे कुछ नहीं मालूम। वे लक्ष्मी के लिए कोई और संबंध खोज रहे थे। मैं तो खेत पर यही कहने के लिए गया था कि ऐसा करना ठीक न था और वहां लपटें देखकर मैं डर गया। तीस हजार की मशीन वहां राख हो गयी थी।" वह क्या कह रहा था, वह ही न जानता था। आदतन उसके मुख से बातें निकलती थीं। उसे डर था कि न जाने कब ज्वालामुखी फटकर उसे झुलसा दे। भय और चिंता के कारण उसका सिर चकरा रहा था। वह बोलता-बोलता ही उठा। वह अभी बोल ही रहा था कि राजू ने फिर धीमे से कहा, "जाओ बाहर!"

धर्मराजू अब वहां न ठहरा। दूसरे क्षण वह रामय्या चौधरी के घर था।

"उस संबंध के बारे में पूरी तरह कह देना था," पुन्नय्या ने कहा। राजू कुछ न बोला। उसका मन कभी इस तरह खाली न था। अब तक जो कुछ हुआ है उसके बारे में रामय्या बेखबर है। वेंकन्ना और रंगा के ही ये कारनामे हैं। चूंकि बात इतनी उलझ गयी थी, इसलिए रामय्या उनकी तरफदारी कर रहा था। राजू के मन में कहीं विश्वास था कि रामय्या में मान-मर्यादा, न्यायशीलता लुप्त नहीं हो गयी थीं। पर अब यह विश्वास पूरी तरह जा चुका था। रामय्या काम से ही खेत पर आया था। ताल के किनारे खड़े होकर तमाशा देखता रहा। पर उसने एक बात भी न कही। सप्ताह भर से वेंकन्ना और रंगा ही खेत पर आ रहे थे, वह उस तरफ आया तक न था। उस शाम वह अंधेरा होने के बाद वह किसी मतलब से ही वहां आया था। उसका मन भी जहर में डूब गया है।

राजू के मन में अब तक कहीं आशा थी कि अगर वह खेत के पास, या तालाब के किनारे रामय्या से मिला, तो इन झगड़ों का बिना जिक्र किये शादी की बात करेगा तो वह जरूर नरमा जायेगा। उसका विश्वास था कि जब उसकी और लक्ष्मी की शादी हो जायेगी, तो ये सब झंझट और झगड़े स्वयं खत्म हो जायेंगे। यह आशा भी अब जाती रही।

"गरम पानी रखा है, आओ भाई!" मल्ली ने कहा।

"गरम पानी क्यों? कोई खास सर्दी तो है नहीं," राजू ने उठते हुए कहा।

"हवा ऐसी ठंडी चल रही है कि दांत बज रहे हैं," गंगप्पा ने कहा। राजू उसके पीछे-पीछे चला। जब वह कुएं की जगत के पास पहुंचा, तो उसे भी सर्दी लगी। गंगप्पा ने उसकी पीठ पर गर्म पानी उड़ेला। राजू को इतना अच्छा लगा कि उस गर्म पानी ने, राजू के अंदर की सर्दी भी दूर कर दी थी। पानी खत्म हो गया था। पर वह और नहाना चाहता था। मन में भूख थी, तन में भूख थी। उस दिन उसने खूब खाया। भाभी ने जितना परोसा उतना खा गया, मना नहीं किया।

पंचायत की सभा हो रही थी। चुनाव के पहले की यह आखिरी सभा थी। सभा में आने से पहले ही रामय्या ने एक निर्णय कर लिया था। वह सोच रहा था कि अगर कोई ऐसा काम शुरू किया गया, जिसमें गांव का हर आदमी हिस्सा ले सके, तो ये झगड़े खत्म हो जायेंगे और गांव का भी भला होगा। उस हालत में, मैंने स्वयं सुब्बय्या से समझौता करने की कोशिश की तो इसका मतलब यह होगा कि मैंने गलती की है और मैं वह गलती कबूल कर रहा हूं। इसलिए उसे पटवारी की सलाह पसंद आयी। नाले का सारा पानी, व्यर्थ समुद्र में जा गिरता था। परिषद के इंजीनियर ने पहले ही सरकार को लिख रखा था कि अगर उस पर कोई प्रोजेक्ट बनाया जाये तो अच्छा रहेगा। परंतु उसके सेंक्शन होते-होते काफी समय लग सकता था। इसलिए अगर सबने मिल-मिलाकर नाले पर बांध तैयार कर दिया, तो नाले की इस तरफ बंजर भूमि में सोना पैदा होगा। श्रमदान के लिए सारे गांव को शामिल किया जा सकता है। मैं भी इस काम के लिए कुछ दान दे सकता हूं, सुब्बय्या भी कुछ देगा। अगर सरकार ने कुछ न भी दिया तो भी प्रोजेक्ट पूरा हो जायेगा।

आखिर जब धर्मराजू ने इस प्रस्ताव को सभा में रखा, तो इंजीनियर ने बहुत-सी आपत्तियां कीं। उसने कहा, "अगर पिछले दिनों जैसी वर्षा फिर हुई, तो बड़े से बड़ा मिट्टी का बांध भी नहीं टिक पायेगा। यही नहीं, इसके साथ साथ हमें रजवाहे बनाने की अलग से व्यवस्था करनी होगी और खेतों में रजवाहे के लिए जमीन लेनी होगी और इस सबके लिए समय लगेगा।" इंजीनियर यह सब अड़चनें डाल रहा था, तो रामय्या को खीझ हो रही थी।

"आप ये सब योजनाएं बनाइये, मैं कल ही जाकर इन्हें सरकार से सेंक्शन करवा लूंगा," रामय्या ने कहा। इंजीनियर मुस्कराया।

"मान भी लिया जाये कि ये सब सेंक्शन हो जाते हैं, तो भी बांध पत्थर और सीमेंट से बनवाना होगा। सरकार को पहले योजना मंजूर करनी होगी, फिर पैसा सेंक्शन करना होगा, टेंडर बनवाने होंगे, ठेका देना होगा, कितनी ही बातें हैं।" इंजीनियर ने कहा।

"इन सब बातों की अब जरूरत नहीं है। भाई तो यह चाहते हैं कि चुनाव से पहले यह सब काम खत्म हो जाये। आप ही ने तो कहा था, अगर बांध काफी चौड़ा बनाया गया, तो वह पक्का रहेगा और टिकाऊ भी," धर्मराजू ने कहा।

"अगर आप चाहते हैं कि मिट्टी का बांध टिकाऊ हो, तो उसके लिए जरूरी है कि नदी का पाट चौड़ा किया जाये। कम से कम एक सौ एकड़ भूमि एक्वायर करनी होगी। नाले के किनारे कुछ हटाने होंगे, तब एक बड़ा-सा तालाब बनेगा और बांध पर पानी का दबाव कम हो

जायेगा। मगर इसके लिए भी वक्त लगेगा," इंजीनियर ने कहा।

"इसमें क्या रखा है, नाले के इस तरफ जो नीची जमीन है उसे एक्वायर कर लिया जाये तो काफी है," धर्मराजू ने कहा।

"तुम्हारा क्या जाता है, तुम्हारी तो जमीन है नहीं ? तुम्हारे भाई की जमीन क्या हुई, नीची जमीन में पचास एकड़ तो हमारे ही जायेंगे," सुब्बय्या ने कहा।

रामय्या तुरंत ताड़ गया कि यह सब सोच-साचकर ही धर्मराजू ने उससे यह बात रखवायी थी। सुब्बय्या को यह विश्वास न होगा कि मैं यह सब नहीं जानता था और अब प्रस्ताव रखकर, वापस ले लेना मेरी शान के खिलाफ है और साथ ही यह भी साफ हो जायेगा कि सुब्बय्या ने जो बात कही है, वह ठीक है।

"सरकार यों ही तो जमीन लेगी नहीं, उसके लिए बाजार में जो दाम है, वह देगी," रामय्या ने अपनी बात फिर दुहरायी।

"सरकार का पैसा मुझे नहीं चाहिए। तुम ही मेरे पचास एकड़ खरीद लो, और जो कुछ सरकार दे, वह तुम ही रख लेना। तुम ही तो गांव को सुधारने के लिए अगुवाई कर रहे हो।" सुब्बय्या ने परिहास करते हुए कहा। इंजीनियर ने यह सोचकर कि बात ख्वामह-ख्वाह बढ़ जायेगी, कहा, "भाइयो, मेरे प्रस्तावों पर मंत्रिमंडल विचार कर रहा है और मुझे आशा है कि एक सप्ताह में उनका अनुकूल निर्णय भी मिल जायेगा। इसलिए तब तक इस प्रस्ताव पर विचार न करना ही अच्छा है। अगर जरूरत हुई तो हम दस दिन बाद फिर यहां मिल सकते हैं।"

इसके साथ सभा समाप्त हो गयी। इसके बाद चाहे रामय्या कुछ भी कहता, सुब्बय्या उसका गलत अर्थ ही लेता। रामय्या यह कह, उठके चला गया, "मुझे जरा और एक जगह कुछ काम है, बाकी बातें आप लोग ही तय कर लीजिये।" उसके चले जाने के बाद, किसी को भी किसी बात पर कोई निर्णय लेने का साहस न था।

इसके बाद, किसी को फिर सभा बुलाने की हिम्मत न हुई और इस बीच चुनाव भी पास आ गया।

"भाई, अब तक तुम्हारी अच्छाई की वजह से ही तो सुब्बय्या प्रेसिडेंट बना रहा और अब वह यह दिखा रहा है कि वह ही बड़ा आदमी है। बढ़-बढ़कर बातें कर रहा है। तुम मैदान में उतरकर उसे दिखा दो कि वह भी क्या है और उसकी हैसियत कितनी है," धर्मराजू ने कहा।

रामय्या ने तो यह सुनकर कुछ न कहा पर वेंकन्ना और रंगा ने धर्मराजू का समर्थन किया। रामय्या जब तक उन लोगों के बीच रहता, सोचता रहता कि वह सुब्बय्या का सर्वनाश करके ही रहेगा और उससे बदला लेकर रहेगा। बीच-बीच में, उसे हाल में, आंगन में लक्ष्मी दिखायी देती। वह उसका मुंह देखती और कहीं अलग चली जाती। तब उसे ऐसा एहसास होता, जैसे वह कोई गलती कर रहा हो। मन में कहीं ठेस लगती और जब वह आंखों से ओझल हो जाती, तो पुन्नय्या वगैरह, जो उसकी बदनामी कर रहे थे, उसकी याद हो आती। बदला लेकर रहूंगा, वह सोचता। धर्मराजू को साथ रखना उसे पसंद न था, पर जब से यह झगड़ा शुरू हुआ था,

तब से वेंकन्ना और रंगा की उससे गहरी छनने लगी थी। उनका यह ख्याल था कि चुनाव में धर्मराजू और लिंगराजू खूब काम करेंगे। इसलिए उसने उन्हें रोका नहीं।

धर्मराजू ने चुनाव के बारे में उसे सब घोंटकर पिला दिया था। जब रामय्या ने अपने समर्थकों की एक बैठक बुलायी, तो धर्मराजू ने कहा, "भाई, जो हमारे साथ हैं, वे हमेशा हमारे साथ हैं ही। प्रचार करके उनको अपनी तरफ करने की जरूरत नहीं है। हमें तो उन लोगों को अपने साथ करना है, जो न इधर के हैं न उधर के, बीच में हैं। फिर विरोधियों में फूट डालकर, असंतोष पैदाकर, लालच दिखाकर, उनको अपनी ओर करना है। चलो, पहले पुजारी से ही बात कर लें।"

"क्या पुजारी हमारे साथ है ?" रंगा ने पूछा।

"जब तक यह मालूम नहीं होता कि हमारे साथ नहीं है, वह हमारा ही आदमी है। अगर नहीं है, तो उसे अपनी ओर करना होगा। अगर वह हमारी तरफ हो गया, तो कम से कम हमें हजार वोट तो मिलेंगे ही। आओ भी, इसमें सोचने की क्या बात है ?" धर्मराजू ने कहा। रंगा ने कहा कि अच्छा हो यदि उसके घर पहले खबर भेज दी जाये।

"देखो रंगा, यदि हमने उसे अपने घर बुलवाया तो वह जरूर आयेगा। पर आते-आते वह क्या सोचेगा ? बड़े लोग घर बुला रहे हैं, मुझे डांटने-डपटने या डराने के लिए ही बुला रहे होंगे। इस सब की क्या जरूरत है ? अगर मान लो, हम ही उसके पास चले गये, तो वह सोचेगा कि बड़े लोग हमारे घर आये हैं, कितने अच्छे हैं ये ! अगर वे कुछ पूछें या मांगें तो उनको इनकार करना अच्छा न होगा। जरूरत हमारी है, उसकी नहीं।"

पुजारी मंदिर में ही था। मंदिर के पीछे की दीवार में से कुछ ईंटें गिर गयी थीं। वह उन्हें गारे से लगाकर बैठा रहा था। रंग करने वाले ने, मंदिर के सामने के भाग में ही दिलचस्पी दिखायी थी। उन्होंने मंदिर का पिछवाड़ा देखा ही न था। रामय्या, धर्मराजू, वगैरह जब उसको देखने आये, तो मल्ली उसे गारा बनाकर दे रही थी और पुजारी उसे पोतकर, ईंट लगा रहा था। वह जानता था, पर उसने नहीं सोचा था कि रामय्या यों अपना प्रचार करने निकलेगा।

"अरे भाई, यह क्या है ? यह वही सेंध है, जो कभी चोर ने माता के आभूषण चुराने के लिए लगायी थी। तब हमारे भाई से कहा क्यों न था ?" धर्मराजू ने कहा।

"एक बार उन्होंने भरवा तो दिया था, उस समय राजू ने जो मरम्मत की थी, वही बेकार थी। यह फिर गिर गयी है," पुजारी ने कहा।

"तुमसे बात करनी है, जरा अपने घर तो आओ।" वेंकन्ना ने राजू की ओर घूरते हुए पुजारी से कहा।

"काम खत्म होते ही मैं आपके घर आ जाऊंगा," पुजारी ने कहा।

"हम जा रहे हैं, जो कुछ बात करनी है यहीं कर लीजिये। मल्ली, आ।" राजू वहां से चल पड़ा। मल्ली भी मिट्टी से सने हाथ बिना धोये ही उसके साथ चल दी।

"हाथ धो लो न, बेटी !" पुजारी ने कहा।

"तालाब जो है," मल्ली ने कहा।

उन दोनों के चले जाने तक रुककर धर्मराजू ने कहा, "देखा भाई, उन्होंने हमारे आने से पहले ही अपना प्रचार शुरू कर दिया है।"

पुजारी ने अपना काम एक क्षण के लिए छोड़कर, धर्मराजू और रामय्या की ओर देखा।

"राजू ने यह बात भी न उठायी थी। मुझे तो अभी तक यह भी नहीं मालूम था कि चुनाव आ रहे हैं। पहले कभी नाम के लिए चुनाव हो जाते थे, बड़े किसान जैसा कहते थे वैसा ही होता था," पुजारी ने कहा। उसके इस कथन में रामय्या को कहीं ताना दिखायी दिया। वह थोड़ा-सा झुंझलाया।

"अब कहां हैं दोनों बड़े किसान ?" उसने अपनी झुंझलाहट को बिना छिपाये ही कहा।

"अरे, देखो पुजारी, हमारे रामय्या भाई की और उनकी क्या बराबरी है ? उनकी क्या चाल है, वे क्या करने जा रहे हैं, क्या तुम नहीं जानते ? माता के मेले को बिगाड़ा उन लोगों ने। घर में, गांव में, धान के ढेर और झोंपड़ियां जलायीं उन लोगों ने। तिस पर यह प्रचार करते फिर रहे हैं कि सारा गांव उनके इशारे पर चल रहा है। अगर पंचायत उनके हाथ न आयी, तो सारा गांव ही तबाह हो जायेगा," धर्मराजू ने कहा।

"पटवारी साहब, किसकी क्या गलती है यह तो माता ही जानती है। किसी की गलती दिखाने के लिए कम से कम मुझमें तो ताकत नहीं है। जब हम पढ़ा करते थे, एक दिन हमारे मास्टर साहब ने एक बढ़िया बात बतायी थी। जब एक लड़की ने चुगली की तो उन्होंने कहा था, जब तुम दूसरे की चुगली करते हो या उस पर अंगुली उठाते हो, तो उसकी ओर एक ही अंगुली होती हैं, बाकी तीन स्वयं तुम्हारी ओर ही होती है। पहले उन तीन अंगुलियों को समझाना चाहिए, फिर किसी पर अंगुली उठानी चाहिए। तब तो मैं नहीं समझ सका था कि उनकी बात कितनी बढ़िया थी, पर बाद में मैं जान गया। जब से मैंने होश संभाला है, मैं माता के सामने कह रहा हूं, मैंने किसी की निंदा नहीं की है। अगर कोई करता है तो उसे सुनता भी नहीं।"

इस कदर साफ-साफ बात पुजारी ने पहले कभी न की थी। रामय्या को आश्चर्य हुआ और वेंकन्ना को क्रोध आया।

"खैर, यह बताओ तुम अपना वोट हमें दोगे कि नहीं ?" उसने जोर से पूछा।

"मैं अपना वोट किसी को नहीं दूंगा। मेरी बात सुनिये, आप यह चुनाव ही न करवाइये, यह गांव के लिए अच्छा नहीं है," पुजारी ने कहा।

"उन लोगों की मदद देखकर, इसे घमंड हो गया है," रंगा ने कहा।

"अरे क्या बच्चों की-सी बातें कर रहे हो ? पुजारी मर जायेगा, पर उनकी ओर नहीं जायेगा। तुम नहीं जानते। तुम ठहरो भी। आओ भाई चलें, बाद में फुरसत से बात कर लेंगे," धर्मराजू ने कहा।

रामय्या समझ गया कि पुजारी बड़ी गहरी और समझदारी की बात कर रहा था। पर कहने का तरीका ठीक न था, उसमें घमंड छलकता था। एक ऐसा आदमी जो उसके दान पर पल रहा था, उसकी इतनी हिम्मत कि वह इस तरह बातें करे, जैसे वह मुझसे बड़ा हो। अपने

साथियों के साथ रामय्या तुरंत चला गया। पुजारी ने लंबी सांस ली।

रामय्या बड़ी गली के चौपाल से घर में आ रहा था कि नारियल, फल, फूल लेकर लक्ष्मी बाहर जा रही थी।

"कहां जा रही हो ?" रामय्या ने पूछा, हालांकि यह प्रश्न अनावश्यक था।

"माता के मंदिर जा रही हूं।"

"अकेली मंदिर क्यों जा रही हो ?"

"माता मेरा क्या बिगाड़ेगी ? मल्लम्मा तो कोई पार्टी-वार्टी जानती-बूझती नहीं है।" लक्ष्मी यह कहकर चली गयी। रामय्या स्तब्ध हो वहीं खड़ा रह गया। उस दिन से जब वेंकन्ना और रंगा उसे खेत से ले आये थे, पिता और लड़की में बातचीत बंद थी। लक्ष्मी को जब देखता, रामय्या उसे पास लेकर पुचकारना चाहता। पर उसके मन में यह भी डर था कि वह शायद पास ही न आये। यह डर उसे इसलिए लग रहा था क्योंकि वह उससे बच-बचकर रहती, चेहरे पर भी एक प्रकार का गुस्सा झलकता रहता। वह गांव का बड़ा चौधरी था।

उसके लाभ और हानि में, पसंद और नापसंद में, सब घर वालों को दिलचस्पी होनी चाहिए थी, यह उसका विचार था। लक्ष्मी छोटी-सी लड़की थी और वह मन ही मन उसकी आलोचना कर रही थी, उसका विरोध कर रही थी, यह उसे गवारा न था। पर उसे खड़ा करके, उससे यह पूछने के लिए कि क्यों वह ऐसा सोच रही थी, रामय्या आगे -पीछे देख रहा था। अगर खुलेआम उसका विरोध करती, तो वह बिलकुल ही सह न पाता। मगर वह ऐसी परिस्थिति भी पैदा न करना चाहता था जिसमें ऐसा करना जरूरी हो जाये। वह जानता था कि लक्ष्मी बिना तुनके उसका विरोध कर सकती थी। इसलिए ही उसके मन में लक्ष्मी के लिए प्रेम के साथ, थोड़ा भय भी था। उसकी रगों में, उसका अपना ही खून बह रहा था और वह अकेली ही उसका विरोध कर सकती थी, यह सोच उसे उस पर अभिमान भी था। तरह-तरह की बातें उसके मन में उठ रही थीं, इसलिए वह लक्ष्मी के बारे में कोई निर्णय न कर सका था। अच्छा हो यदि वह अपने मन की बात साफ-साफ कह दे और उसकी बात भी सुने। अगर ऐसा हो सका तो उसके मन का बोझ कम हो जायेगा। पर लक्ष्मी अपनी पीड़ा, वेदना एकांत में, अकेली ही सह रही थी। अगर उसमें यह सहन-शक्ति और शालीनता है तो इसलिए न, क्योंकि वह मेरी लड़की है। रामय्या ने आह भरी।

'माता की कोई पार्टी नहीं है न ?' लक्ष्मी की यह बात उसे कहीं चुभ गयी थी। उसके मन में, कहीं यह बात इस अर्थ के साथ गूंज रही थी कि पुजारी के लिए भी क़ोई पार्टी नहीं है। यह बात सच थी, यह उसकी अंतरात्मा भी जानती थी। फिर भी, उसे पुजारी की बात बुरी लगी थी। वह यह समझ तो गया था कि वह बात वस्तुतः उसने धर्मराजू के बारे में कही थी, जो उसकी तरफ से प्रचार करने आया था। कुछ भी हो, जो बात धर्मराजू पर लागू होती थी, वह उस पर भी लागू होती थी, इस पुजारी की खबर तो लेनी ही होगी।

रंगा और वेंकन्ना हैदराबाद जाकर चार हजार में एक पुरानी कार ले आये। जब रामय्या को पता चला कि यह कार पंचायत के चुनाव के लिए लायी जा रही है, तो उसे बड़ा अजीब

लगा। पर उसे मालूम था कि कभी उसने भी, कुछ और सोचते हुए, इसकी अनुमति दे दी थी। रंगा ने कहा था कि चार-पांच हजार रुपये में काम बन जायेगा। पर कार की बात रामय्या को अच्छी तरह याद न थी। जब इस बारे में बातचीत चल रही थी, तब धर्मराजू और लिंगराजू आये।

"अरे भाई, इस बारे में इतनी बहस की क्या जरूरत है ? अगर जरूरत न हुई तो बेच-बाच देंगे। अब जब खरीद ही ली है तो पांच-दस दिन रहने दो," धर्मराजू ने कहा।

पर जब रामय्या चार दिन कार में इधर-उधर घूमा-फिरा, तो उससे चुनाव की गरमी आने लगी। अब उसे भी लगा कि कार की जरूरत थी। यह जानकर धर्मराजू ने कहा, "पंचायत के चुनाव के लिए कार की क्या जरूरत है ? बेच-बाच दो।"

रामय्या ने कहा, "अरे, अब खरीद ही ली है तो चुनाव के बाद बेच देंगे।"

पुन्नय्या ने जब विरोधियों का प्रचार देखा, तो उसे लगा कि अगर हमने कुछ न किया, तो हमारा पासा कमजोर हो जायेगा। इसलिए उसने दस नयी साइकलें खरीदीं, झंडों पर तरह-तरह के नारे लिखकर उन्हें साइकिलों पर लगा दिया और स्कूल के बच्चों को उन पर बिठाकर गांव की गली-गली में प्रचार करने के लिए भेज दिया। सिर्फ राजू ही घर छोड़कर कहीं नहीं जा रहा था। उसने यह भी न कहा था कि इस प्रकार का प्रचार न किया जाये। सुब्बय्या ने गांव के टीचरों को अपनी ओर मिला लिया था। उसने उन्हें आश्वासन दिया कि वह उनके वेतन बढ़वा देगा। रामय्या के आदमियों ने गांव के बड़े-बूढ़ों से कहा कि सुब्बय्या के आदमी स्कूल के बच्चों को राजनीति में उतारकर उनकी पढ़ाई खराब कर रहे थे। सुब्बय्या और पुन्नय्या ने वेंकटेश आदि पर, जो फौजदारी के मुकदमे दायर कर रखे थे, उन्हें वापस ले लिया था। भले ही उनकी रामय्या ने थोड़ी-बहुत मदद की हो, पर पीढ़ी दर पीढ़ी वे सुब्बय्या के यहां ही काम करते आये थे। यही नहीं, रामय्या की गांव में बड़ी धाक हो, पर शहर की अदालतों में यह धाक कितनी काम करेगी, इस बारे में उनको संदेह था। इसलिए जब सुब्बय्या ने अपने मुकदमे वापस कर लिये, तो वे सब उसकी ओर हो गये। इसके अलावा ट्रैक्टर भी खराब हो गया था, सुब्बय्या ने उन्हें फिर से खेतों में काम करने के लिए, पद्दालु से कह भिजवाया था। परंतु उन सबको फिर अपनी ओर करने के लिए धर्मराजू ने उन्हें खूब ताड़ी पिलायी और उनमें से तीन को, रामय्या को बिना कहे ही, कार में शहर भिजवा दिया था। वे पी-पाकर कार में गांव वापस आ रहे थे कि वेंकटेश और पेंटय्या कार में ही गड़बड़ी करने लगे। वे ड्राइवर पर जा गिरे, कार उसके काबू में न रही। उसी समय, एक झुंड के साथ, गंगप्पा नारे लगाता गली में चला आ रहा था। कार, उनको चीरती हुई-सी, गली में निकल गयी। जब वे पास के घरों के सामने चबूतरे पर जा चढ़े, तो कार उनके पीछे आकर रुक गयी। हालांकि कोई मरा न था, न कार को ही कोई खास नुकसान हुआ था, फिर भी इस घटना का चुनाव के प्रचार में बड़ा महत्व रहा। आपस में एक-दूसरे पर केस दर्ज करवाये गये, सुनवाई हुई, डाक्टरों के झूठे सर्टिफिकेट पेश किये गये। पुलिस वाले गांव में फिर गश्त करने लगे। इन सब के कारण गांव में सरगर्मी बढ़ रही थी। गांव का वातावरण, जो माता के मेले के बाद जरा ठंडा पड़ने लगा था, फिर गरमाने

लगा।

गंगप्पा घायल था, उसे पट्टियां बांधी गयीं, पट्टियों पर खून के धब्बे लगाये गये। उसे एक सजायी हुई बैलगाड़ी पर बिठाकर, पुन्नय्या उस गांव की गली-गली में जुलूस निकालने लगा और अपनी पार्टी का प्रचार करने लगा। यह सब कार की दुर्घटना के बाद जोर-शोर से शुरू हो गया था।

"अगर वे जीत गये, तो तुम सब की भी यह गति होगी," यह कहकर उन्होंने गंगप्पा को सबको दिखाया। गलियों में भीड़ ही भीड़ थी। सामने से रामय्या की कार आयी, रेडियेटर पर गड्ढे पड़ गये थे। उन्हें ठीक करने के लिए तो समय न था, पर शहर जाकर धर्मराजू इंजन की मरम्मत करवा लाया था। ड्राइवर की बगल में धर्मराजू बैठा हुआ था। पिछली सीट पर तीन कोई नये आदमी थे। गाड़ी और कार एक-दूसरे के आमने सामने खड़े थे। कार के पीछे रामय्या के आदमी खड़े हो गये और गाड़ी के दोनों ओर सुब्बय्या के आदमी खड़े हो गये। बाकी लोग घबराये और गली के दोनों ओर बने चबूतरे पर जा खड़े हुए। गाड़ी के सामने लाठी लेकर, पद्दालु खड़ा था।

"अरे चलाओ भी। अगर रास्ता न देंगे, तो वे ही मरेंगे," धर्मराजू ने कहा। ड्राइवर झिझक रहा था। उस पर पहले ही एक मुकद्दमा चल रहा था और गाड़ी की अगल-बगल में खड़े लोग अपनी-अपनी लाठियां इस तरह उठाये हुए थे कि कार हिली नहीं, कि उसकी चटनी बना देंगे।

इस बीच पुलिस भी आ गयी। इंसपेक्टर ने खबरदार किया कि अगर इस बार फिर गड़बड़ी हुई, तो सबको गिरफ्तार करना पड़ेगा और दफा 144 लगानी पड़ेगी।

"देखिये साहब, जैसे गांव के आदमी काफी न हों, ये बाहर के लोग ला रहे हैं," पुन्नय्या ने कार की पिछली सीट पर बैठे लोगों की ओर इशारा करते हुए कहा।

"साहब, आप ही गवाही दें, मैं इन पर मान-हानि के लिए नालिश कर दूंगा। मैं रामय्या भाई की लड़की की शादी के लिए इन बड़े आदमियों को ला रहा हूं। ये उनका इस तरह अपमान करते हैं," धर्मराजू ने इस प्रकार कहा, जैसे उसका बड़ा अपमान हुआ हो।

इंस्पेक्टर ने स्वयं पुलिस को इधर-उधर खड़ा करके, गाड़ी और कार के लिए अलग से जाने के लिये रास्ता बनाया और इस तरह एक दुर्घटना होने से बचा दी।

"अरे, मैंने इन बड़े लोगों को कार में सवार करवाया। कार तोड़ दी जाती तो एक और खरीदी जा सकती थी। अगर इन पर कोई खतरा आ पड़ता तो? सच जानो, मैं हथेली पर जान लिये यहां पहुंचा हूं। मेरा काम हो गया, अब तुम इनकी क्या खातिरदारी करते हो और कैसे इनको वापस भेजते हो, यह तुम्हारी जिम्मेवारी रही। अब मुझसे यह बोझ नहीं ढोया जायेगा। कितनी भीड़ थी, कुछ न पूछो। कार के ठीक सामने लाकर गाड़ी रख दी और वह पद्दालु डंडा लेकर कार के सामने खड़ा हो गया। अगर वक्त पर इंसपेक्टर न आते, तो जाने क्या होता," धर्मराजू शेखियां मार रहा था।

रामय्या न जानता था कि ये बड़े लोग कौन थे। देखभाल का सब इंतजाम करते हुए उसने पूछा, "ये कौन हैं?"

"वाह, तुम भी खूब हो ! तुम्ही जैसे किसी ने पूछा था कि सीता, राम की क्या होती थी। अरे, पल्लिपाडू के गुर्रालु बापनय्या जी हैं।"

गुर्रालु बापनय्या कौन थे और उनके बारे में धर्मराजू ने क्या कहा था, यह सब रामय्या को याद न था। पर वह इतना समझ गया कि वे लक्ष्मी को देखने आये थे। उसके मन में झुंझलाहट बढ़ रही थी। क्या पहला संबंध पूरी तरह टूट गया है ? इतना सब हो जाने के बाद, दोनों परिवारों का मिलना असंभव है ? लक्ष्मी उनके घर की बहू कभी भी नहीं बन सकती, यहां तक तो रामय्या के सामने साफ-साफ था। पर लक्ष्मी के लिए दूसरे संबंध के बारे में उसने अपने मन में कोई निर्णय नहीं किया था। इसलिए उसका गुस्सा धर्मराजू और आये हुए व्यक्तियों पर बढ़ता जाता था। परंतु, रामय्या ने अतिथियों का अपमान नहीं किया। उनके रहने के लिए, बड़ी गली की चौपाल में प्रबंध किया। उसने अपना गुस्सा भी किसी को नहीं दिखाया। उनकी हर तरह से खातिरदारी की। पर जब वह घर में आया, तो उसका गुस्सा उसके काबू में न रहा। धर्मराजू पर तो बिगड़ा ही, अपनी पत्नी को भी न छोड़ा। सूरालु को यह नया संबंध पसंद न था। उसके दिल में कहीं यह आशा सुलग रही थी कि एक दिन ये झगड़े खत्म हो जायेंगे और गांव में ही, सब तरह से अच्छा संबंध उसकी लड़की को मिलेगा। उसने भले ही पति का साथ न दिया हो, पर जब वे उस पर गरजे तो कहीं उसके मन में संतोष भी था।

"तुम्हीं ने तो उन्हें लाने के लिए कहा था अगर हमने यह कहा तो हमारी क्या मान-मर्यादा रहेगी ?" रंगा ने कहा। रामय्या कितना भी गुस्सा कर रहा हो, उस अकेले को ही उसके सामने ऐसी बात कहने का साहस था, जो रामय्या को पसंद न होती थी। वेंकन्ना तो अपना मुंह खोलता न था। धर्मराजू ने रामय्या को गुस्सा करता देख, उसे मनाने का प्रयत्न किया। आखिर उसने पटवारी की-सी बात कही, "भाई, अगर हमने अब यह कहा कि हम लड़की नहीं दिखायेंगे, तो वह हमारी मर्यादा के विरुद्ध होगा। दिखा देना ही अच्छा है, उन्हें हम शाम को पल्लिपाडू छोड़ आयेंगे। इसके बाद, फुरसत से सोच-साचकर खबर भिजवायेंगे कि हमें यह संबंध पसंद नहीं है। इस तरह की बुरी खबरें पहुंचाने के लिए मैं जो हूं," धर्मराजू ने कहा।

फिर भी अगर वर पक्ष वालों को लड़की दिखायी जाती है, तो इसका मतलब है कि आधी शादी हो ही गयी है। फिर उनसे कैसे कहा जाये कि हमें वर पसंद नहीं है ? अगर उन्होंने लड़की को देखते ही अपनी स्वीकृत दे दी तो ? अगर लड़का हर तरह से ठीक हो, तो कैसे कहा जाये कि पसंद नहीं है ? इसलिए रामय्या का मन, लक्ष्मी को दिखाने के लिए नहीं मान रहा था।

लक्ष्मी यह सब इस तरह सुन रही थी, जैसे उसका इससे कोई संबंध ही न हो। उसे तभी थोड़ी-सी निराशा हो गयी थी, जब उसने राजू से खेत में उस दिन बात की थी। उसे यह आशा थी कि राजू उसके प्रेम को, इन झगड़ों से और दुश्मनी से अलग और ऊपर रखेगा और इस तनातनी के वातावरण से उसे कलुषित न होने देगा। पर राजू ने भी उसी तरह बात की, जिस तरह और कर रहे थे। रंगा और उसके भाई जैसे उनको बुरा-भला कह रहे थे, राजू ने भी उसी तरह निंदा की। उसकी आशा जाती रही, जोश जाता रहा। अब चाहे कुछ भी हो, उसे सहने

के लिए उसने अपने को तैयार कर लिया था । पिता की क्या दुविधा थी, यह भी वह जान गयी थी । जब वह उस दुविधा से बाहर न आ सका तो पिता ने ही स्वयं पूछा, "क्यों बेटी, तुम्हारा क्या कहना है ?"

'जैसी आपकी मर्जी ।' अगर लक्ष्मी ने यह कहा होता, तो न मालूम रामय्या क्या कहता । वह बहुत देर चुप खड़ी रही । आखिर उसने कहा, "उन्हें बुलाया है, तो बिना दिखाये कैसे भेजेंगे ?"

"बहन को यह संबंध पसंद है," रंगा ने कहा ।

रामय्या को इस बारे में संदेह था, उसने सोचा कि अच्छा यही होगा कि उसकी पत्नी इस विषय में उस समय दखल न दे । उसके मन में विरोधी विचारों की रस्साकशी हो रही थी । उसको अपनी प्रतिष्ठा पर जितना अभिमान था, उतना किसी बात पर न था । जो लड़की को देखने आये थे, उनको लड़की बिना दिखाये भेज देना, उसकी मर्यादा के प्रतिकूल था । उसे लगा कि लक्ष्मी की बात में व्यंग्य था, पर उसके अहं ने उसके उस अनुमान को दबा-सा दिया । जो भी हो, लक्ष्मी मेरी लड़की है, मेरी मर्यादा भंग न होने देगी, चाहे उसके लिए उसे कितना ही कष्ट हो । अगर मैंने यह संबंध स्वीकार भी कर लिया, तो वह खुशी-खुशी शादी कर लेगी ।

रामय्या ने लड़की की ओर देखा । उसका मुंह निश्चल था, उसमें किसी प्रकार का कोई भाव न था । जब पिता ने उसकी तरफ देखा तो उसने नजर नीची न की । रामय्या को उसकी आंखों में कुछ ऐसी गहराइयां दिखायी दीं, जिन्हें भांपना उसके लिए संभव न था । रामय्या को उसकी नजरें देख कुछ पीड़ा हुई । पीड़ा गुस्से में बदली और गुस्सा निश्चय में ।

"शाम तीन बजे लड़की को देखेंगे, अच्छी साड़ी पहनाओ और बाल बनवाओ ।" वह पत्नी और बहू से कहकर चला गया । लक्ष्मी धीमे-धीमे सीढ़ियों पर चढ़ी । अपने कमरे में गयी । फिर छज्जे में । उसकी मां सूरालु ने पीछे ही जाकर उसे सहलाने की सोची, पर जब उसे चुपचाप सीढ़ियों पर जाता देखा, तो उसकी हिम्मत न हुई ।

राजू ताल के पास बैठा था । खेत में ट्रैक्टर की जली तारें निकालकर नयी तारें लगाकर मैकेनिक उसे ठीक कर रहा था ।

धूप और गर्मी के कारण, जमीन फट गयी थी और फटी हुई जमीन लोहे की तरह कड़ी हो गयी थी । दरारों के नीचे मिट्टी की आत्मा कहीं झांक रही थी । कड़ी दुपहरी में भी मिट्टी की आत्मा अंधेरे में थी । ऐसा अंधकार जिससे वह बाहर न आ सकती थी, ऐसा अंधकार जो मनुष्य की जिज्ञासा और दृष्टि से परे था । उन दरारों को राजू देखता और कुछ और सोचता हुआ बैठा था । दरारें पड़ी जमीन पर धान की जड़ों से बचती एक नाली बहती जा रही थी । सांप चला आ रहा था । उसकी पेट की सफेद चमड़ी से मिट्टी रगड़ रही थी । पर सांप को शायद इसका कोई दर्द न था । वह आराम से मिट्टी की सूइयों पर से चलता गया और वह इस रेंगने में इस तरह मस्त था कि उसने राजू की ओर भी न देखा । जब वह पास आया तभी उसने उसे देखा, आंखों से ही नहीं, सारे शरीर से । वह रुक गया । फिर झट एक ओर चला गया । मुंडेर पर चढ़ गया, फिर ताल के पानी में इस तरह फिसल गया जैसे कोई जरूरी काम हो । वह

पानी में तैर रहा था, राजू को लग रहा था जैसे वह जमीन पर रेंग रहा हो। सांप के लिए पानी और जमीन में कोई फर्क नहीं है।

दुर-दुर, दुर, दुर – ट्रैक्टर आवाज करने लगा। राजू ने उस तरफ देखा। मैकेनिक उसकी मरम्मत करके, उसे कुछ दूर चलाकर भी ले गया। जब ऊबड़-खाबड़ जमीन पर पहुंचा, तो ट्रैक्टर सूखी हुई जमीन को उड़ेलने-सा लगा। जमीन फटती जाती थी और काली मिट्टी की आत्मा और नीचे चली गयी थी। ट्रैक्टर के सामने जमीन हार गयी, उसकी गुलाम हो गयी, मानो उसके पैरों पर पड़ती जाती थी।

सांप को जमीन शायद प्यारी है, ट्रैक्टर के लिए जमीन कुछ भी नहीं है और मनुष्य के लिए ? क्या मनुष्य के पास जमीन को गुलाम बनाने की शक्ति या उसको प्यार करने की शक्ति नहीं है ? उस मनुष्य को जो काली मिट्टी की तरह अकड़ गया हो, जम गया हो, उसे नरम करने की बुद्धि, शक्ति क्या इस सृष्टि में नहीं है ?

राजू जब घर पहुंचा, तो वहां बरामदे में बड़ी सभा लगी हुई थी। दक्षिण की ओर के कमरे के किवाड़ की आड़ में खड़ी, सुंदरम्मा सब सुन रही थी। सुब्बय्या आरामकुर्सी पर लेटा हुआ था। माथे की झुर्रियां और फूले नथुने, उसके अंदर के ज्वालामुखी की झांकी प्रस्तुत करते-से लगते थे। पुन्नय्या इधर-उधर चहलकदमी कर रहा था। गंगप्पा चुपचाप, ठुड्डी के नीचे लाठी रखकर खड़ा था। शेषम्मा पश्चिम के दरवाजे के पास लेटी हुई थी। पद्दालु चिंतित मुद्रा में, घर के मुख्य द्वार के पास था और उत्तर के ओसारे में मल्ली इस तरह दाना मिला रही थी, जैसे किसी बात से उसका कोई संबंध ही न हो। पुन्नय्या गला फाड़-फाड़कर कह रहा था, "क्या हम नहीं जानते थे कि वे किस तरह के आदमी हैं ? तुम यहां स्त्रियों की तरह हाथ पर हाथ रखे बैठे हो, इसीलिए तो वे यह सब कर रहे हैं। तुम शुरू से ही, उसने जो कहा मानते गये, उसकी हां में हां मिलाते रहे, पीछे लगे रहे। वह क्या हमसे कोई बड़ा किसान है ? बड़ा आदमी है ? बस गांव में जो वह कहता है, वही होता है जैसे वह ही सब कुछ हो और हम कुछ भी नहीं। यह सब तुम्हारी नरमी देखकर ही तो।"

"तो क्या करने के लिए कहते हो ? क्या तुम चाहते हो कि उसकी कार के सामने जा मरूं ? या जो लड़की देखने आये हैं, उनको मार डालूं ?" सुब्बय्या ने भी आवाज ऊंची करके कहा।

"उन लोगों से हमारा क्या वास्ता है ? यह संबंध टूट गया है, यह तो हम माता के मेले के समय ही जान गये थे। अगर हम अब तक राजू की कहीं शादी कर देते, तो हमारा पासा भारी रहता। अब वे हमसे पहले ही लड़की की शादी कर रहे हैं। यह बड़े अपमान की बात है, हमारी इज्जत मिट्टी में जा मिली है। क्या हम गांव में सिर उठाकर चल सकेंगे ?"

राजू जान गया था कि क्या बात थी, फिर भी उसने पूछा, "मामला क्या है ?"

"लक्ष्मी के लिए कोई और संबंध तय किया जा रहा है," गंगप्पा ने कहा।

"तो देख क्या रहे हो ? धर्मराजू खुलेआम कहता फिर रहा है कि सगाई भी हो गयी है," पुन्नय्या ने कहा।

"शादी करते हैं तो करें, इससे हमारा क्या आता-जाता है," राजू ने कहा।

"अरे शरम नहीं आती यह बात कहते हुए? पहले वे अपनी लड़की तुम्हें देना चाहते थे। माता के सामने प्रतिज्ञा भी की थी, हमें वस्त्र और तांबूल देने के बाद हमें बिना कुछ कहे ही अब चुपचाप दूसरा संबंध देख रहे हैं, ये बड़े आदमी।"

"अरे बेटे, कुछ भी हो, उस लड़की की शादी से पहले तेरी शादी करनी होगी," सुब्बय्या ने कुर्सी पर से उठते हुए कहा।

"हां, यह बात हुई," पुन्नय्या ने उसका समर्थन किया।

"इसमें क्या कमी है कि रामय्या भाई दूसरा संबंध देख रहे हैं? मैं जाकर उनसे साफ साफ पूछूंगी," शेषम्मा ने कहा।

"तुम क्या जाओगी? सवेरा होने से पहले ही संबंध तय कर देंगे," पुन्नय्या ने कहा।

किवाड़ की आड़ में, थोड़ा-सा मुंह आगे करके, सुंदरम्मा ने कहा, "लड़की और कहीं ढूंढने की क्या जरूरत है, हमारी चाची ने पहले ही अपनी लड़की के बारे में खबर भिजवायी थी न? रूक्कू बहुत अच्छी है, इकलौती है, सौ एकड़ की अच्छी खेती है। खबर भेजो और वे मजे में अपनी लड़की देंगे।"

"क्यों, तुमने वह लड़की देखी है न? तुम्हें क्या कहना है?" सुब्बय्या ने कहा।

"लड़की के क्या कहने, वह अच्छी ही है," शेषम्मा ने कहा।

"यों क्यों चुपचाप बैठे हो, क्यों नहीं 'हां' कहते?" पुन्नय्या ने कहा।

"अगर हमें सौ एकड़ जमीन और सौ तोला सोना न मिले, हम भूखे जो मारे-मारे फिरेंगे," राजू ने ताना कसा।

"अरे, दहेज की बात कौन उठा रहा है? तुम्हारी भाभी ने सिर्फ इतना ही तो कहा है कि यह एक अच्छा संबंध है।" पुन्नय्या ने कहा।

"मुझे ऐसी लड़की नहीं चाहिए, जो जमीन-जायदाद के साथ आये, सोना-जवाहरात के साथ आये। दहेज देने वाले घर में शादी ही नहीं करूंगा," राजू ने कहा।

"शायद देवर का मन अभी लक्ष्मी से नहीं हटा है," सुंदरम्मा ने कहा।

"सब चला गया है, अब मन में कुछ भी नहीं है। मैं अब शादी भी नहीं करना चाहता, बस!" राजू ने जिद पकड़ी।

"क्यों नहीं करोगे?" पुन्नय्या ने पूछा।

"अरे बेटा, अगर हमारे घर से पहले उनके घर में शादी हो गयी, तो क्या हमारी इज्जत खाक में नहीं मिल जायेगी?" सुब्बय्या ने कहा।

"इसलिए क्या अगर मैं शादी भी न करना चाहूं, तो भी मुझे शादी कर लेनी चाहिए?" राजू ने कहा।

"तो क्या शादी नहीं करोगे? संन्यास ले लोगे?" शेषम्मा ने पूछा।

"मैंने कब यह कहा है? जब मेरी इच्छा होगी तब कर लूंगा," राजू ने कहा।

"बस इतनी बात है? तो तुम्हें परिवार की प्रतिष्ठा वगैरह से कोई सरोकार नहीं है?"

पुन्नय्या ने कहा ।

"अरे, इस तरह की पागलपन की बातें छोड़कर कोई पक्की बात बता । न दहेज चाहिए न सोना, जा तू जिस लड़की से शादी करना चाहे उससे ही कर ले । परंतु वह शादी उस घर में होने वाली शादी से पहले ही हो जाये ।" सुब्बय्या ने कहा ।

राजू कुछ देर चुप रहा । शाम ढल रही थी । अंदर रोशनी और भी कम हो गयी थी । कोनों में तो अंधेरा-सा हो रहा था । राजू के मन में, एक प्रकार की अनिश्चितता फैल गयी थी । गला सूख गया था । घर पर, गांव पर, अपनों पर, परायों पर, उसके मन में एक प्रकार की झुंझलाहट उबल रही थी । उत्तर के कमरे में, दाना-चारा मिलाना छोड़कर, मल्ली यह सब सुन रही थी । राजू को उस बढ़ते अंधकार में वह दिखायी दी । राजू को लगा कि सारे संसार में वह ही अकेली थी, जो उसके सबसे निकट थी । उसने कहा, "तुम यही तो चाहते हो कि उस घर में शादी होने से पहले मेरी शादी पहले हो जानी चाहिए । लड़की को कहीं और ढूंढने की क्या जरूरत है, जब घर में ही सभी तरह से अच्छी एक लड़की बैठी है ।"

"मल्ली ?" सुंदरम्मा ने इस प्रकार कहा, जैसे उसे ही अपने कानों पर विश्वास न हो ।

सब मुंह बाये, राजू की ओर देखने लगे । राजू कुछ देर तक सांस ही न ले सका । वह आनंद के कारण था या आश्चर्य के कारण, वह स्वयं ही न जान सका ।

"क्या तुम्हारी अक्ल मारी गयी है ?" पुन्नय्या ने पूछा ।

"क्यों ? तुम मेरी शादी ही तो चाहते हो ?" अभी वह अपने मन में कुछ ठीक-ठीक निर्णय भी न कर पाया था कि उसके मुख से मल्ली का नाम निकल गया था । जब मुख से निकल ही गया, तो उसके मन ने आखिर उसका समर्थन किया । थोड़ी देर बाद, सुब्बय्या भी राजू की बात भली-भांति समझ गया ।

"इसने क्या गलत कहा है, मल्ली में क्या खराबी है ?" सुब्बय्या ने कहा ।

मल्ली को एकाएक दाने-चारे की याद आयी । वह उसे उठाकर तुरंत पशुशाला की ओर भागी । बैलों की जोड़ी, भूख के कारण कराह रही थीं । गौ रस्सी को तोड़ने की कोशिश कर रही थी । मल्ली मूक भाषा में उन मूक प्राणियों के सामने अपने मन के विचार व्यक्त कर रही थी । वह नहीं जानती थी कि राजू का निर्णय ठीक था कि नहीं ? दिल में कहीं अंधेरा ही अंधेरा छा गया था । उसका अकेलापन उसे ही भारी हो रहा था । कोई है भी तो नहीं, जिससे खुलकर बातचीत कर सके । बात ऐसी है कि राजू से भी नहीं कही जा सकती । इस शादी के कारण राजू उसके बहुत निकट आ जायेगा, पर बहुत दूर भी चला जायेगा; अभी ही हो गया है । एक ओर यह आशा और भय था कि विवाह होकर रहेगा, तो दूसरी ओर यह भी निश्चय था कि यह विवाह नहीं होना चाहिए । इन दोनों के बीच मल्ली का मन खींचा जा रहा था । जब तक सुंदरम्मा ने आकर उसे भोजन के लिए नहीं बुलाया तब तक उसे यह भी खबर न थी कि रात कितनी गुजर गयी है ।

पंचायत के चुनाव के अभी दो दिन थे । सब जगह गांव में चुनाव की ही सरगर्मी थी । कार में कलेक्टर साहब आये । गांव की सरगर्मी के कारण वे चिंतित थे । अगर किसी को

उन्होंने बुलाया या वे किसी के घर गये तो विपक्षी को गुस्सा आयेगा और कहा जायेगा कि उच्च अधिकारी पक्षपात कर रहे हैं। परंतु दोनों ही पक्षों को सावधान कर देना उनका कर्तव्य था। अगर चुनाव में दंगा-फसाद हुआ, तो उनकी और पुलिस की बदनामी होगी। इसलिए कलेक्टर ने पंचायत बुलायी। दोनों पक्षों के सदस्यों को तो उन्होंने बुलाया ही, उन्होंने कुछ ऐसे लोगों को भी बुलाया जो उसके सदस्य न थे। सभी को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा, "शासन को विकेंद्रित कर, शासन के अधिकार प्रजा को देने के लिए ही सरकार ने पंचायत राज्य की स्थापना की है और सरकार का यह उद्देश्य है कि वास्तविक, प्रजातंत्रात्मक समानता को उभारने के लिए पंचायत को बढ़ाया जाये और यह देखा जाये कि वे अच्छी तरह काम करती रहें। पर इस उद्देश्य की कार्यान्विति का भार जनता पर है, गांव की प्रजा पर है। यदि प्रतिष्ठित परिवारों में इस कारण झगड़े पैदा होते हैं तो वे प्रजा के श्रेय और सरकार के ध्येय के लिए घातक हैं। चुनाव शांतिपूर्वक हो, इसकी जिम्मेवारी सब पर है और इसके बावजूद अगर दंगे-फसाद हुए तो कड़ी कार्यवाही करनी होगी।"

यह बात सुन, रामय्या और सुब्बय्या दोनों ही बड़े झुंझलाये। अरे यह कौन है छोकरा कलेक्टर, जो हमें यों नसीहत दे रहा है? जैसे कि स्कूल-मास्टर बेंत लेकर बच्चों को डराया-धमकाया करता है। अब तक जो कलेक्टर आये थे, उनमें से किसी ने भी तो इस तरह की बात न की थी। अरे इस बेतजुर्बेकार अधिकारी का इस तरह की बड़ी-बड़ी बातें करना, जैसे कि उन्हें कुछ मालूम ही न हो, दोनों को अखर रहा था।

"आपको हमें कुछ कहने की जरूरत नहीं है, आप अपना काम कीजिये।" रामय्या ने कह ही दिया। यह सुनते ही कलेक्टर के मुंह पर शिकनें आयीं। पर क्या कहा जाये, यह वह तुरंत निर्णय न कर सका।

"मैं एक अधिकारी के तौर पर नहीं बोल रहा हूं। अगर आप गांव के दोनों बड़े लोग यह आश्वासन दें कि चुनाव शांतिपूर्वक होंगे, तो मैं चुनाव कराऊंगा," कलेक्टर ने कहा।

"अगर न दिया तो?" रामय्या ने कहा।

"तो हमें चुनाव स्थगित करने होंगे।"

"क्या यह सब आप अपनी ही इच्छा से कर सकते हैं?" सुब्बय्या ने पूछा।

"अब मुंसिब के हाथ में है न पंचायत! अगर चुनाव न हुए, तो यह उनके हाथ में ही रहेगी। इसलिए कलेक्टर और वे दोनों मिलकर शोर-शराबा का बहाना करके चुनाव स्थगित करने की सोच रहे हैं," पुन्नय्या ने कहा।

"तो क्या तुम्हारा इशारा यह है कि हमने कलेक्टर साहब को घूस दी है?" रंगा दूर से गरजा।

"वह तो तुम्हें और उनको मालूम होगा," सुब्बय्या ने कहा।

"कुछ भी हो, चुनाव होने ही चाहिए," रामय्या ने कहा। राजू यह सुन खड़ा हो गया।

"क्लेक्टर साहब, आप जो कह रहे हैं ठीक है। अगर चुनाव हुआ तो जरूर दंगे-फसाद होंगे। चाहे कोई भी जीते, पर उससे गांव का भला नहीं होगा। आप चुनाव को स्थगित करवा

दीजिए," उसने कहा।

"क्या तुम्हारी अक्ल मारी गयी है ?" पुन्नय्या ने कहा।

"जैसे भी हो, वे हार जायेंगे ! इसलिए यह चाल चल रहे हैं।" धर्मराजू ने कहा।

उसके बाद, किसने क्या कहा, यह पता नहीं लगा। सबकी आवाजें मिल गयी थीं। शोर हो गया। कलेक्टर उठ खड़े हुए। उनके अगल-बगल में, सब-इंसपेक्टर और चार कांस्टेबिल खड़े हो गये ताकि कहीं ऐसा न हो कि दंगा हो जाये। तभी राजू भी, उसी मंच पर आया जिस पर कलेक्टर खड़े हुए थे।

"अरे, बंद करो शोर !" वह चिल्लाया। शोर कुछ कम हुआ।

"उन्होंने कुछ कह दिया, इस पर बिगड़ने की क्या जरूरत है ? हमें अपने को गांव का बड़ा बताने में ही शर्म की बात है। हमारी हालत कुत्तों की-सी हो गयी है, जो हड्डी के लिए झगड़ते हैं। हम प्रेसिडेंटगिरी के लिए भी उसी तरह लड़ रहे हैं। इस प्रजातंत्र से अच्छा तो यह है कि कोई अच्छा अधिकारी, लाठी लेकर हम पर शासन करे। कलेक्टर साहब, आप चुनाव को स्थगित करवा दीजिये।"

"तुम वैसे भी नहीं जीतोगे, इसलिए कलेक्टर साहब को अधिकार देकर उनको अपनी ओर करना चाहते हो, यही तुम्हारी चाल है," वेंकन्ना ने कहा।

"कलेक्टर साहब, जब तक फिर चुनाव न हो, उन रामय्या जी को ही प्रेसिडेंट बने रहने दीजिए।" यह कहकर राजू वहां से चला गया। राजू का यह बर्ताव देखकर, दोनों पक्षों के लोगों को आश्चर्य हुआ। चुनाव में दोनों ने ही बहुत खर्च किया था, खास कर सुब्बय्या ने जो कुछ किया था वह तो बिलकुल फालतू जाता, यदि चुनाव स्थगित कर दिये जाते। रामय्या न जान सका कि राजू ने क्यों इस प्रकार कहा था। पर यह जानता था कि उसने यह बात उसका गौरव रखने के लिए नहीं कही थी। वेंकन्ना और धर्मराजू ने दो अलग-अलग कारण बताये।

"उनके सामने तो यह कह गया। मगर चुनाव स्थगित हो जाने के बाद, कलेक्टर को अपनी ओर करके, पंचायत रद्द करके उनकी आड़ में अपना उल्लू सीधा करना चाहते हैं," वेंकन्ना ने कहा।

"कलेक्टर इतनी आसानी से उनके हाथ में नहीं आने वाला है। उनकी चाल मालूम है, क्या है ? अगर आज चुनाव हुए, तो वे जरूर हार जायेंगे। जो भी हो, हम ही जीतेंगे। इसलिए वे चाहते हैं कि तुम्हारी प्रेसीडेंटगिरी कायम रहे और इस बीच वे इतना अड़ंगा डालेंगे कि तुम कुछ नहीं कर पाओगे। जब तुम कुछ कर नहीं पाओगे, लोगों में तुम्हारा अच्छा नाम, धाक वगैरह भी जाती रहेगी। उस हालत में वे लोगों को अपनी तरफ कर सकेंगे और तब चुनाव करवायेंगे। वाह, वह लड़का तो हम नियोगियों (ब्राह्मणों की एक बुद्धिजीवी जाति) को भी मात करता है।"

रामय्या को ये दोनों ही कारण पसंद न आये। वह यह जानता था कि ये सच न थे। वह यह भी जानता था कि राजू ने जो कुछ कहा था, वह ही सच था। परंतु उसे राजू का, जैसे उससे बढ़कर गांव में कोई हो ही न, कलेक्टर की तरह मंच से बात करना पसंद न था। वह गांव का

था, गांव के झगड़ों में उसका भी हाथ था, तुरंत उसका इस तरह बर्ताव करना जैसे उसका दोनों पार्टियों से कोई संबंध ही न हो और दोनों को मिलाकर डांटना-डपटना, उसे कतई पसंद न था।

इस गुस्से के पीछे, उसके बिना जाने ही रामय्या में, राजू के प्रति कहीं गौरव भी बढ़ रहा था। जब प्रयत्न करने पर भी उस गौरव को न दबा सका, तो डंडा लेकर पता नहीं कहां वह चल पड़ा।

मल्ली, मंदिर के पीछे एक पेंसिल और कागज लेकर गनेर के पेड़ों के बीच में बैठी थी। वह भाई को चिट्ठी लिखना चाहती थी, पर क्या लिखा जाये, यह न सोच पा रही थी। फिर भी लिखना है, नहीं तो न खाना खा पायेगी, न सो ही पायेगी। गनेर का एक फूल उसकी गोद में गिरा। गनेर के फूलों का शहद उसे बड़ा पसंद था। पतला-पतला पानी-सा शहद। अजीब मिठास। न मालूम जब से उसने होश संभाला था, कितने गनेर के फूलों का शहद उसने चूसा था। गनेर के डंठल को उसने आदतन मुख में रखा। उसको जीभ में कुछ नरम-नरम-सा लगा। उसने शहद चूसा। आंखें मूंद लीं। शहद जीभ पर बहने लगा। उसे गुदगुदी-सी हुई, कुछ-कुछ घिन भी। जीभ पर कुछ हिल-सा रहा था। उसने उसे थूक दिया। घास पर, थूक में कोई कीड़ा चमक रहा था। वह भी शहद के लिए फूल में घुसा हुआ था। उसने अभी पेट भर गनेर का शहद न पिया था, जब कभी पीने की सोचती तो वह कीड़ा याद आ जाता।

भाई को "मुझे गनेर का शहद बहुत पसंद है। परंतु उसमें कीड़े होते हैं।" लिखने के बाद उसकी चिंता कुछ कम हुई। इस सत्य को भाई को क्यों न बताया जाये ? कहना है, जरूर कहना है, पर कहने के लिए मल्ली के पास शब्द नहीं हैं और मन की बात को, शब्दों में उतारना भी उसे नहीं आता। मल्ली ने गनेर के फूलों की ओर देखा। उनमें शहद था, हर फूल में शहद था, पर उनमें कीड़े भी हैं। बस, वे दिखायी नहीं देते।

"मल्ली !" उसे किसी की आवाज सुनायी दी। वह घबरा गयी। उसने उस चिट्ठी को इस तरह जाकेट में छुपा दिया जैसे वह कोई चोरी की चीज हो। लक्ष्मी मंदिर के मोड़ के पास खड़ी उसे देख रही थी। कबूतर की तरह उड़ती-सी वह भागी। लक्ष्मी को गले लगा लिया। गला सूख गया था। दोनों के मुख से बात न निकल रही थी। मल्ली की जब आवाज निकली तो उसको लगा जैसे वह आवाज किसी और की हो।

"सुनती हूं कि तुम्हारी कहीं और शादी हो रही है।"

लक्ष्मी ने सिर हिलाया।

"कह रहे हैं कि भाई मुझ से शादी करेगा," मल्ली ने कहा।

"तुम से ?" लक्ष्मी ने कहा।

इसके बाद, मल्ली वहां खड़ी न रह सकी। भाग निकली, कबूतर की तरह। उन दोनों को मंदिर के सामने बैठे हुए रामय्या ने देखा। उनकी बातें भी उसने सुन ली थीं। लक्ष्मी जब पीछे मुड़ी, तो अपना पिता दिखायी दिया। वह एक क्षण खड़ी हो गयी। क्या वे यह देखने आये हैं कि मैं किससे मिलती हूं ? बिना किसी डर के, उसने अपने पिता की आंखों में सीधे देखा

और देखकर चली गयी। उस दृष्टि के कारण, रामय्या का मन कांप-सा गया था। उसके और उसकी लड़की के बीच एक बड़ी खाई-सी आ गयी थी। एक समय था, जब मंदिर देखते ही, उसका मन भर जाता था। उन दिनों गांव में कैसी शांति थी! मंदिर में जब बैठते, तो मन को क्या आराम मिलता था! सब कुछ भुला दिया जाये तो अब भी मंदिर में बैठना अच्छा लगता है। इसलिए वह मंदिर आया था। वह जानता था कि उसकी लड़की वहां रोज आती थी। पर वह उसका पीछा करने न आया था। यह सब लड़की से कैसे साफ-साफ कहा जाये? वह कह भी न सकता था। अगर वह कह भी देता, तो वह समझती भी नहीं। रामय्या ने लंबी सांस ली। वह उठकर जाने को ही था कि पुजारी ने लाकर उसको माता का प्रसाद दिया। रामय्या ने भक्तिपूर्वक उसे ले भी लिया। उसने अपनी लड़की के बारे में पुजारी से कहना चाहा। राजू के बारे में बात करना चाहता था। पर कुछ भी न पूछ सका। घर की ओर चल दिया।

आम के पेड़ पर खूब बौर आयी हुई थी। कहीं-कहीं, हल्दी के रंग के बौर के बीच में से मटर के दानों की तरह अमियां लग रही थीं। बौरों में चीटियों के झुंड फिर रहे थे। रामी दंतिया से पेड़ के तने पर यों ही चोट कर रही थी। थोड़ी हंस भी रही थी। उसकी हंसी में शरारत थी। गंगप्पा की हालत यह थी कि मन इतना भरा हुआ था कि बात बाहर नहीं आ रही थी। उसका मन 'रामी, रामी' कह रहा था। यह नाम उसके मन में गूंज रहा था, पर बाहर नहीं निकल रहा था। ठुड्डी के नीचे लाठी रखकर, आंखों से ही रामी को मना रहा था। अंत में, जब वह मन की बात आंखों से कहने ही वाला था

कि राजू ने पीछे से आकर उसकी पीठ थपथपायी। 'भाई' कहने के बदले, उसके मुंह से "रामी" निकल गया। राजू अपनी हंसी न रोक सका। रामी भी ठहाका मारकर हंसी। राजू दोनों को देखकर वहां से निकला। जाने कैसे, इतने दिनों बाद, उसकी उदासी कुछ कम हुई थी। इस तरह का दृश्य, माता के मेले के बाद, उसने कहीं भी न देखा था। ताल के किनारे, सरंकडे के फूल झड़ रहे थे। छूते ही उड़ जाते थे, सरकंडे भी कुछ-कुछ लाल पड़ने लगे थे। पैरों से उनको रौंदता राजू तालाब के मोड़ की ओर मुड़ा। वह वहीं रुक गया। वहां पानी के छोर पर मल्ली बैठी हुई थी। उसकी पीठ ऐसे हिल रही थी, जैसे उसमें कोई तरंगें उठ रही हों। राजू ने सोचा कि शायद उसने उसे देख लिया था और शरम, लाज और संतोष के कारण ही वह यों हिल रही थी। जब से उसने कहा था कि वह मल्ली से विवाह करेगा, उसने उसे देखा न था। धीमे-धीमे वह प्रेम से उसके पीछे गया। झुककर, उसने उसके कंधे पर हाथ रखा। मल्ली घबरायी। झट खड़ी हुई। पीछे मुड़कर देखा। दोनों ही स्तब्ध खड़े थे। पहली बार उसकी जिंदगी में भाई ने उसको इस प्रकार छुआ था। उसने कभी न सोचा कि वह इस तरह करेगा, या कर सकेगा। उस स्पर्श के कारण उसे आश्चर्य हुआ और कुछ-कुछ दृगभ्रांति भी। राजू ने सोचा कि खुशी से मल्ली का मुंह खिल उठेगा, पर उसके गालों पर आंसुओं की धाराएं बह रही थीं। वह दुखी थी। उसके चेहरे पर शिकनें आ गयी थीं। राजू ने कभी भी मल्ली को इस तरह न देखा था।

"मल्ली, क्यों, क्या हो गया?" राजू ने कहा। वह कुछ संभली, सिर नीचे करके व

"भाई,मैं तुम्हारे पैर पड़ती हूं,मेरे गले में मंगलसूत्र न बांधना।" वह इतना ही कह सकी। इसके बाद,उसका गला भर आया। आंसुओं से आंखें अंधी-सी हो गयीं। हाथ फैलाकर,वह तालाब की ओर दौड़ी,जैसे कोई पंख कटा कबूतर हो। रोज वह उस राह आती-जाती थी,पर तब गिरती-पड़ती,वह पेड़ों के झुरमुट में चली गयी। राजू को यह सब समझ नहीं आ रहा था। वह मल्ली जिसे खुश होना चाहिए था,क्यों यों रो रही है ? क्यों इस तरह भाग गयी जैसे जान पर आ बनी हो ? राजू कुछ सोच न पाया,वह एक पेड़ के पास आकर खड़ा हो गया।

मल्ली भागी-भागी रामी के पास आयी,उस पर गिर-सी पड़ी।

"क्या मल्लम्मा,क्या हो गया ?" रामी ने पूछा।

"बहन !" गंगप्पा सिर्फ यही कह पाया। मल्ली को होश आया।

"भैया,मुझे यह शादी नहीं चाहिए," उसने कहा।

"क्या तेरी अक्ल मारी गयी है ?" गंगप्पा ने कहा।

"अक्ल तो छोटे चौधरी की मारी गयी है। प्रेम तो लक्ष्मी से किया और शादी मल्लम्मा से ? शादी के बाद,न तो वह स्वयं खुश होगा,न मल्ली को खुश करेगा। क्या वह शादी के बाद लक्ष्मी को भूल सकेगा ?" रामी ने मल्ली को सहलाते हुए कहा। गंगप्पा मुख खोले बावले की तरह खड़ा था।

"गुस्सा उन पर,और उतारेगा उसे मल्ली पर। उनका वह कुछ बिगाड़ नहीं सकता।" जो कहना था,रामी ने वह साफ-साफ कह दिया। गंगप्पा को ऐसा लगा जैसे उसको कोई बड़ा भेद एकाएक समझ आ गया हो। लंबे-लंबे डग भरता वह चल पड़ा। रामी और मल्ली,घबराती हुई उसके पीछे चल पड़ीं।

"छोटे चौधरी,छोटे चौधरी !" रामी कह रही थी। मल्ली ने कुछ भी न कहा। वह घबरायी, अपने भाई के पीछे दौड़ी। पर दोनों,गंगप्पा से न मिल सके,जाने कहां से उसकी चाल में इतनी तेजी आ गयी थी।

राजू को,जो कुछ सोचता हुआ पेड़ के नीचे लेटा हुआ था,गंगप्पा की आवाज ऐसी लगी, जैसे किसी ने उसके सिर पर चोट की हो। गंगप्पा के होंठ हिल रहे थे,उसने अपने गुस्से को यों व्यक्त किया,"हमारी बहन ही तुम्हें मुफ्त मिली है,तुम्हारे बड़े परिवारों की लड़ाई को मिटाने के लिए ? शादी करने की मर्जी तो है नहीं,फिर उससे शादी करके,क्या उसकी जिंदगी मिट्टी में मिलाना चाहते हो ? अगर बहन के गले में मंगल सूत्र बांधा तो..." गंगप्पा इसके बाद कुछ न कह सका। उसके हाथ में अनायास लाठी उठी।

"भैया !" कहती हुई,मल्ली ने उसके हाथ की लाठी पकड़ ली। रामी ने उसे उसके हाथ से छीन लिया।

राजू ने चकित हो कहा,"गंगप्पा !" गंगप्पा का गुस्सा दुख में बदल गया। उतने बड़े आदमी को बच्चे की तरह रोता देख,राजू को भी ठेस पहुंची।

"अगर दम हो,तो सीधे रामय्या मामा के घर जाओ और पूछो कि सगाई होने के बाद, कैसे लड़की की शादी कहीं और करने की सोच रहे हो। चाहे कुछ भी हो,सूरज पश्चिम से

निकले या पूर्व से,लक्ष्मी की मुझसे शादी करनी होगी,जाकर कहो न ।"

रोते-रोते,गंगप्पा ने यह बात कह दी थी । राजू को लग रहा था जैसे ये बातें उसकी न थीं । उसे गंगाप्पा,उस समय गंगाप्पा नहीं लग रहा था । वह गंगप्पा न था,जिसे वह जानता था ।

"गंगप्पा,इतनी अच्छी सलाह मुझे किसी ने न दी थी," राजू ने कहा । वह जल्दी-जल्दी चल पड़ा ।

"छोटे चौधरी,कहां जा रहे हो ?" रामी ने भय से पूछा ।

"नहीं भैया,उनके घर मत जाओ," मल्ली ने कहा ।

"कोई डर नहीं है । मेरे पीछे कोई न आना,न अपने आदमियों को लाना ।" कहकर,राजू जल्दी-जल्दी चलता गया ।

रामी ने देखा कि किसी ने कांटों की झाड़ों के परली तरफ यह सब सुन लिया था । वह भागी,मल्ली और गंगप्पा भी भागे ।

छोटी गली में,बिना पीछे देखे,राजू चलता रहा था । लोग घरों में से निकल कर,इधर-उधर चबूतरों पर आ खड़े हुए थे । रामय्या के आदमी लाठी लेकर इधर-उधर खड़े हो रहे थे । राजू उनकी ओर देख भी न रहा था,वह अपने रास्ते चला जा रहा था । रामय्या के आदमी यह न जान पा रहे थे,कि वे अपनी लाठी उठायें या नहीं । पर वे लाठी लिए मुस्तैद थे । राजू,छोटी गली की चौपाल की सीढ़ियों पर चढ़ा । रामय्या के लोगों ने गली घेर ली । राजू ने दरवाजे के पास कदम रखा ही था कि रंगा और वेंकन्ना आये । वे दरवाजे को रोक खड़े हो गये । दूर,बड़े घर के दुमंजले पर,लक्ष्मी छज्जे में आयी ।

"मामा से बात करनी है ।" राजू ने कहा ।

"तुम्हारा मामा यहां कोई नहीं है ।" रंगा ने कहा,जैसे उसने उसकी बात ही न सुनी हो । राजू ने अपने गुस्से को काबू में रखते हुए वेंकन्ना से कहा,"वेंकन्ना,सुनता हूं तुम अपनी बहन के लिए कोई और संबंध तय कर रहे हो ? हमारी सगाई तो कभी की हो गयी है,यह न तुम्हारे लिए अच्छा है,न हमारे लिए ।"

"अरे जा बे जा,हिजड़े कहीं के,हम अपनी बहन की शादी तुमसे कैसे करेंगे ?" रंगा ने कहा । राजू ने फिर अपने को काबू में करते हुए,वेंकन्ना से कहा,"अगर हमारे दोनों परिवार मिलकर रहें तो पहले की तरह अच्छा रहेगा,इसमें गांव का भी कल्याण है । मैं यही तुमसे कहने आया था ।"

"अब ही हमें क्या कमी है ? गांव को क्या कमी है ? अगर तुम्हें कोई कमी है या कष्ट है,तो तुम्ही देख लो,हमारे घर आने की जरूरत नहीं है ।"

"नाले में जा मरो,सब कष्ट दूर हो जायेंगे ।" रंगा ने कहा ।

"वेंकन्ना,इस जैसे निखट्टुओं ने,जो दूसरों के घर बेकार पड़े रहते हैं,गांव की यह हालत की है ।" राजू ने कहा ।

"अरे,क्या बका ?" कहते हुए,रंगा ने राजू को एक चपत जमायी । लक्ष्मी को ऐसा लगा

जैसे वह छज्जे पर से गिर गयी हो। राजू सीढ़ियों पर से गिरते-गिरते बचा। गली के छोर पर पद्दालु, गंगप्पा, सुब्बय्या के आदमियों ने आगे कदम रखा। रामय्या के आदमी लाठी लिये तैयार थे।

"ठहरो," राजू जोर से चिल्लाया। जो जहां था, वह वहीं खड़ा हो गया। उसने रंगा की ओर मुड़कर कहा, "मैं समझौते की बात करने आया था, इसलिए तुम जिन्दा रह गये, नहीं तो तुम्हें यहीं जिन्दा गाड़ कर रख देता।" रामय्या को जो उस समय बड़ी गली की चौपाल से आ रहा था, यह बात सुनायी पड़ी।

"अरे हमारे घर में ही हमें डराते हो!" उसने कहा।

"मैं तो इसलिए आया था कि कम से कम तुम तो समझदारी और न्याय की बात करोगे। मैं डराने के लिए आया था या कुछ और करने के लिए, अपने लड़के से ही पूछ लेना।" यह कहकर राजू सीढ़ियां उतरने लगा। रामय्या समझ गया कि असली बात क्या थी। उसने राजू को बुलवाना चाहा। उसने एक कदम आगे रखा।

"अरे, जरा उसकी मरम्मत कर दो," रंगा ने कहा। आदमी लाठी लिये खड़े थे। गंगप्पा, पद्दालु ने दो कदम आगे रखे। राजू उसका उपहास करता-सा पीछे हटा।

"अरे, उन्हें क्यों भड़काते हो? दम हो तो तुम ही आओ, तय कर लेंगे।" राजू ने कहा। रंगा आगे जाने को ही था कि रामय्या ने उसको पीछे से पकड़ लिया।

"अरे, इस तरह के कीड़ों को घर में जगह देना ही बेअक्ली है। मेरी बात सुनो और उसे भेज दो। अगर तुमसे भेजते न बनता हो, तो मैं भेज देता हूं।" राजू ने कहा। फिर उसने पीछे मुड़कर न देखा। वह सीढ़ियों से उतर गया। जो वहां लाठी लिये खड़े थे, उन्हें न सूझा कि क्या किया जाये, उन्होंने उसे रास्ता दे दिया। वे उस पर न मालूम क्यों लाठियां न उठा सके। राजू, जल्दी-जल्दी चला गया। रामय्या से यह न छिपा था कि उसकी चाल में शान थी, साहस था। राजू, राजा की तरह चला जा रहा था। रामय्या को लगा, जैसे हाथ में आया मौका उसने यों ही छोड़ दिया हो। उसकी नजर में वह उस समय पहाड़ की तरह विशाल लग रहा था। वह लंबी सांस छोड़कर पीछे मुड़ा ही था कि उसे लक्ष्मी छज्जे में दिखायी दी। उसकी नजरें, छुरी की तरह उसे चुभ रही थी। उसे दर्द हुआ और वह दर्द, आदतन गुस्से में बदला। उसे राजू पर, रंगा पर, लक्ष्मी पर, सभी पर गुस्सा आ रहा था।

"जाओ, यहां से जाओ, मेरी नजर से हटो।" वह जोर से चिल्लाया। वेंकन्ना और रंगा न समझ सके कि वह क्यों गुस्से में चिल्ला रहा था। पर वे इतने घबरा गये कि वे यहां से चलते बने। लेकिन, लक्ष्मी बिना हिले-डुले, वैसे ही छज्जे में खड़ी रही। रामय्या एक चुरुट सुलगाकर, बड़ी गली की चौपाल में चला गया।

"भाई, कुछ नरम होते लगते हैं।" धर्मराजू ने कहा। शाम गड़बड़ी होने के बाद, छोटी गली की चौपाल से अपनी सभा हटाकर वह गंगम्मा के घर बैठा सलाह-मशविरा कर रहा था। वेंकन्ना और रंगा भी जान गये थे कि रामय्या उनकी बात नहीं मानेगा। चाहे वे कुछ भी निर्णय करें, वह उसका विरोध करेगा और रामय्या के न करने पर, वे कुछ कर नहीं सकते थे। जब

उसके बिना जाने कुछ कर दिया गया, तो बाद में उसे उसके साथ आना ही होगा। इसलिए धर्मराजू अपनी सभा मंगम्मा के घर लगा रहा था, ताकि उसे कोई रोके टोके नहीं। इसका एक और कारण भी था।

धर्मराजू को यह भी संदेह था कि लिंगराजू अपना बहुत-सा समय मंगम्मा के यहां ही बिता रहा था। जब से माता का मेला हुआ था, तब से धर्मराजू को फुर्सत न थी, उसे बड़ा काम था। रामय्या आधी रात के समय, मौके बेमौके, उसे बुला भेजता था। वह न चाहता था कि रामय्या यह जाने कि वह हर रात मंगम्मा के यहां ही रहता था। यह नहीं कि रामय्या यह जानता ही न हो। मांस खाने का मतलब तो यह नहीं है कि हड्डियों की माला पहनकर, सब जगह घूमा-फिरा जाये। यही नहीं, जब धर्मराजू के दिमाग को पूरा काम रहता था, तब और व्यसन भूल जाता था। पर धर्मराजू ने जब देखा कि लिंगराजू घर देर से आ रहा था और इस बीच मंगम्मा के गले में, दो तीन नये जेवर भी आ गये थे, तो उसको इन दोनों के बीच कोई संबंध दिखायी देने लगा। जब से पंचायत के चुनाव स्थगित कर दिये गये थे, रामय्या उसके लिए बुलावा नहीं भेज रहा था। गांव में सरगर्मी तो थी, पर शहर आना-जाना, मुकदमेबाजी, डाक्टरों के सर्टिफिकेट कम हो गये थे। शाम जो गड़बड़ी हुई थी, वह रामय्या के कारण शान्त हो गयी थी। नहीं तो धर्मराजू को फिर हाथ भर काम रहता। इस तरह घर के काम, गांव के काम, उसके हाथों से निकल जाना उसको पसन्द न था। अगर अपना कार्यालय उसने मंगम्मा के घर बदल दिया, तो उसका ख्याल था कि रंगा और वेंकन्ना उसका कहा मानेंगे और जो कुछ करना होगा, उसे बिना आगे पीछे देखे, बेझिझक, हिम्मत के साथ कर देंगे और जब तक वह मंगम्मा के घर रहेगा, लिंगराजू भी उस तरफ न आयेगा।

धर्मराजू की चिन्ता यह न थी कि लिंगराजू को सुधारा जाये। कम से कम उसे, यह तो सिखाना ही होगा कि बाप-दादा की जायदाद कैसे हिफाजत से रखी जाये। लिंगराजू को वैसे भी मेरी अक्ल और होशियारी आयेगी नहीं, अगर यहां रहा, तो कम से कम यह तो सीखेगा कि कैसे चालें चली जाती हैं और नहीं तो कम से कम, दुनियावी रास्ते पर तो आ ही जायेगा।

धर्मराजू ने, चार हट्टे-कट्टे चमारों को बुलवाया। उनका उस रात काम था, सबके सामने रंगा के अपमान करने के लिए, राजू को सबक सिखाना।

खेतों में धान तैयार था। राजू खेत में बने झोंपड़े के पास बैठा था। रात एक काली परत की तरह, कहीं-कहीं पत्तों पर चमक रही थी। बायीं ओर ताड़ के पेड़ों में झींगुर शोर कर रहे थे। आकाश में मन्द नीला प्रकाश था। छोटे-छोटे बादल के टुकड़े कहीं इधर-उधर अटके से थे। सब निश्चल, उस निश्चलता में राजू को सारा संसार शान्त-सा लगा। उसके मन से भी कोई बोझ हट गया था। उस दिन शाम को उसने लक्ष्मी को देख लिया था। रामय्या के घर जाना साहस का काम था, पर वह उतना खतरनाक साबित नहीं हुआ था। रंगा ने उसे चपत मारी थी, पर उसने जल्दबाजी में उसे पलटकर न मारा था। रामय्या भी इसे समझेगा। गुस्से में वह चाहे तब कुछ भी कह गया हो, पर बाद में वह अवश्य सोचेगा, समझेगा। यह भी जान जायेगा कि मैंने बहुत ही संयम से काम लिया था। किसी अच्छे काम के लिए उससे यह सब हो गया था।

राजू को लगा जैसे कोई बहुत बड़ा काम उसने कर दिया हो। पद्दालु, खेत में गश्त करने उस समय आया। जब से खेत में ट्रैक्टर जला था, सुब्बय्या के आदमी रात को वहां पहरा दे रहे थे।

"आप घर चले जाइये, आज रात अब कुछ और नहीं होगा।" पद्दालु ने कहा।

"तुम झोंपड़े में सो जाओ, जब नींद आयेगी तो चला जाऊंगा।" राजू ने कहा। पद्दालु झोंपड़ी के अन्दर गया। राजू उठकर खेत की मुड़ेर पर चलने लगा। उसे घर जाने की इच्छा नहीं हुई। वह नाले के किनारे आया, उसने चुरुट सुलगा ली। पानी के किनारे धोबियों के पत्थर चमक रहे थे। नाला अजगर की तरह रेंग रहा था। आकाश में तारे झिलमिला रहे थे, पर नदी के प्रवाह में ऐसे लगते थे, जैसे हिल डुल न रहे हों।

कांटों की झाड़ियों के पीछे दो-तीन आकृतियां दिखायी दीं। झाड़ी हटाकर वे इस तरफ आये।

"शायद झोंपड़ी में लेटा हुआ है।" एक आवाज ने कहा।

"तुम यहीं रहो, मैं लूंगा उसकी खबर।" रंगा ने कहा।

"तुम नहीं, नहीं।" वेंकटेश ने कहा।

"अरे, वह तो सो रहा होगा, मेरा क्या करेगा ? क्या मुझे गाड़ देगा ?" कहता रंगा आगे बढ़ा। बाकी तीन उसके पीछे चलने लगे।

"नहीं, तुम यहां रहो, आहट होगी तो वह उठ जायेगा। जरूरत पड़े तो चले आना।" रंगा ने कहा। वे तीनों वहीं रुक गये।

पद्दालु ने जब देखा कि झोंपड़ी का दरवाजा चोरी-चोरी खोला जा रहा है, तो उसे संदेह हुआ। किवाड़ के पीछे, ढिबरी की रोशनी में, उसे कोई दिखायी दिया। वह अन्दर आ रहा था। पर वह कौन था, यह पद्दालु न जान सका। वह भी चुपचाप वहीं लेटा रहा। वह चोर को पकड़ लेना चाहता था अगर वह हिला डुला तो चोर चंपत हो जायेगा। वह आकृति अन्धेरे की ओर बढ़ी। पद्दालु उसे देख रहा था। उसे गदाला की आवाज सुनायी दी। पद्दालु लेटा रहा। जब चोर ने गदाला जोर से गाड़ा तो वह परली तरफ लुढ़क गया और गदाला जोर से पोती हुई जमीन में गड़ा। इससे पहले कि चोर संभल सकता, पद्दालु ने उस पर हमला किया। चोर एक तरफ झुक गया।

"तुम हो।" रंगा ने पद्दालु को पहचान लिया। पद्दालु ने भी रंगा को पहचान लिया।

"कत्ल करने आये थे ?" पद्दालु ने कहा। भय और चिन्ता, शत्रु के घर में भी फंस जाना, इन सबके कारण रंगा पगला सा गया। उसमें पागलों की-सी शक्ति आ गयी। यहां से भाग जाना होगा, कांटे की झाड़ियों के पार पहुंचना होगा। यहां शोर करने से फायदा न था। जाने कितने लोग राजू के खेतों में गश्त कर रहे होंगे, वे सब मिलकर भुरता बना देंगे और गली में काला मुंह करके ले जायेंगे। उस तरह अपमानित होने से तो मर जाना ही अच्छा था। रंगा ने जोर से हमला किया, पद्दालु एक तरफ जा गिरा। रंगा जोर से किवाड़ की ओर दौड़ा। जमीन में गड़ा गदाला उसके पैरों में लगा। उसकी चोट से वह झोंपड़ी के दूसरी ओर जा गिरा। पद्दालु

ने उसका धीमें से कराहना सुना। वह उसे जाकर पकड़ लेना चाहता था कि झोंपड़ी के पास उसे तीन और आदमी दिखायी दिये। उसने किवाड़ में खोंसी लाठी निकाली और उन पर हमला किया। पहले तो वे पीछे हटे, फिर संभले और जोर-शोर से मार-पीट शुरू हो गयी। पद्दालु की लाठी टूट गयी। उसके हाथों पर दो तीन चोट लगीं, पर हाथ से वह उनके हमले का मुकाबला करता गया। एक ने अंदर जाकर दियासलाई सुलगायी। रंगा वहां पड़ा हुआ था, उसका सिर हल पर था, नीचे खून जम गया था। वह पीछे हटा। "कौन हो तुम?" उसने ज्यों ही सुना, उसके हाथ से दियासलाई गिर गयी, पर जब वह वहां से हट गया, तो राजू को रंगा दिखायी दिया। दियासलाई के बुझने से पहले ही वह आगे बढ़ा और उस अन्धेरे में, अब वह आदमी भाग निकला। राजू ने दियासलाई जलायी। रंगा की आंखें निश्चल, अजीब सी दिखायी दे रही थीं। राजू ने उसकी नाड़ी देखी। कहीं कोई हरकत न थी। पर शरीर में अभी गर्मी थी। राजू वहां से हटा। पद्दालु, उनको कुछ दूर खदेड़कर हांफता-हांफता आया।

"आप हैं। आप घर नहीं गये?" पद्दालु ने पूछा।

"नहीं तो, नाले के किनारे बैठा था, आहट सुनी तो इधर देखने चला आया और आकर देखता हूं कि अंदर रंगा है।" राजू ने कहा।

"मुझे मारने आया था।"

"तुम्हें नहीं, मुझे।"

"तो अंदर अभी क्या कर रहा है?"

"बिना हिले डुले पड़ा है। शायद मर गया है।"

"मर गया है?"

"देखने से तो ऐसा ही लगता है। उसका सिर हल पर जा पड़ा था। खूब खून बहा।"

"अब क्या किया जाये?"

"वही मैं भी सोच रहा हूं। उसके घर खबर पहुंचानी है।"

"जो उसके घर खबर देने जायेगा, जिन्दा वापस नहीं लौटेगा?" पद्दालु ने कहा।

"यह तो सच है, फिर मैं ही जाकर बताऊंगा।" राजू ने कहा।

"नहीं, नहीं, मेरी जान चली जाये, पर आपको नहीं जाने दूंगा।" पद्दालु ने कहा।

"शायद उसमें अभी थोड़ी बहुत जान बाकी हो। फिर भी अच्छा है, तुम जाकर पुलिस इंसपेक्टर से कह आओ। वे शहर से डाक्टर बुलवा लेंगे।"

"शव का हमारे झोंपड़े में रहना खतरनाक है न? इसे ले जाकर मैं उनके बाग में डाल दूं।" पद्दालु ने कहा।

"हमें, इस तरह की बेवकूफी के काम नहीं करने चाहिए। तुम जाओ।"

"तो क्या आप यहां अकेले ही रहेंगे?

"कोई डर की बात नहीं, तुम हो आओ।"

"आह!" कदम रखते ही, पद्दालु कराह उठा।

"क्यों? क्या हो गया है?" राजू ने पूछा।

"टखने पर चोट लगी मालूम होती है। इसके पीछे तीन आये थे, मैं उन पर हमला कर बैठा। लाठी टूट गयी। चले गये। भाग निकले साले।"

"बैठो, देखूं तो।" राजू ने कहा।

"अरे बाप रे बाप, बड़ा दर्द कर रहा है। छूते ही ऐसा दर्द हो रहा है कि कुछ न पूछिये।" पद्दालु ने कहा।

"अरे बैठ भी।" राजू ने उसके पैर को दबाकर देखा। पद्दालु दर्द के मारे कराहता रहा।

"लगता है चोट हड्डी पर लगी है।" राजू ने कहा।

झोंपड़े की दीवार से एरेंड के तेल की शीशी लटक रही थी। वे उसे गाड़ी के पहियों में लगाने के लिए वहां लाये थे। राजू उसे लेकर पद्दालु के पैर पर रगड़ने लगा।

वेंकन्ना के रोने में, भय था, दुख था, क्रोध था।

"मैंने कहा था कि तुम उस तरफ न जाओ। मेरी बात उसने सुनी नहीं, चला गया। उन्हें मारने के लिए, वह झोंपड़ी में क्यों गया था। उस पद्दालु की हड्डी पसली एक न कर दूं तो... अगर पिता जी को सच मालूम हो गया, तो तुम्हारी और मेरी चमड़ी उधड़वाकर रख देंगे।" मंगम्मा, लिंगराजू और धर्मराजू ने उसे पकड़ लिया। वेंकटेश चुपचाप रामय्या के घर जाकर वेंकन्ना को नींद से उठा ले आया था। मंगम्मा के घर आने पर, धर्मराजू ने बुरी खबर मीठे ढंग से कहने की सोची थी। वेंकन्ना वह खबर सुनकर ढह-सा गया। जब कुछ संभला, तो धर्मराजू ने कहा, "तुम चाहे जितना भी रोओ, जो मर गया है, वह फिर तो आ नहीं सकता।"

"यह बात नहीं, वह उनके झोंपड़े में गया था। वे लोग तो यही कहेंगे कि वह वहां बुरे इरादे से ही गया था और पिता जी पूछेंगे कि मेरे जाने बिना वह वहां क्यों गया था?"

"उसके बारे में तो मैंने सोच रखा है, इस समय राजू शव के पास है। सुब्बुलु को भेजकर इंसपेक्टर को बुलवाओ। हमारे लोग उसे सीधे झोंपड़े में ले जायेंगे और वे गवाही देंगे कि उन्होंने अपनी आंखों राजू को, रंगा को मारते देखा था। राजू पर कत्ल का मुकदमा दायर कर दिया जायेगा और उससे उसके लिए बच निकलना असंभव है।" धर्मराजू ने कहा।

पैर का दर्द कुछ कम हो जाने के बाद चौधरी को खबर देने के लिए पद्दालु निकल पड़ा। वह नाले के पास पहुंचा था कि कांटों की झाड़ियों के परे, उसे दो आदमी पीछा करते दिखायी दिये। उसकी लाठी पहले ही टूट चुकी थी। उसे न सूझा कि क्या किया जाये। अगर इन पांच-दस लोगों ने झोंपड़ी पर हमला किया, तो बेचारे मालिक अकेले पड़ जायेंगे। पर बड़े मालिक को खबर दिये बगैर भी नहीं रहा जा सकता। तुरंत आदमियों को झोंपड़े के पास जमा करना है।

नाला पार कर गया। बायीं तरफ, गांव से कुछ दूर हरिजनवाड़ा था। अच्छा यही है कि घर जाकर एक और लाठी लेकर चला जाये। उसके पीछे कोई नाले में उतरा। पद्दालु जितनी जल्दी हो सका, उतनी जल्दी नाला पार कर गया। अपने घर की ओर भागा। उसको पीछे दौड़ते आये हुए लोगों की कदमों की आहट सुनायी दी।

उसने दरवाजा खटखटाया। वह खुला। आधी रात के समय, दरवाजे का खुला रहना

और पुल्ली का जागे रहना देख, उसे आश्चर्य हुआ। पर उसे अलग जरूरी काम था। उसने लाठी ली और पत्नी से कहा, "दरवाजा बन्द कर लो।" वह कुछ न बोली।

"पिता जी।" कहती रामी दरवाजे की चौखट के पास आयी।

तब पद्दालु ने उन दोनों का मुंह गौर से देखा और ताड़ गया कि जरूर कोई न कोई बात थी।

"क्या बात है?" उनसे पूछा।

"तुम कहीं मत जाओ।" पुल्ली ने दबी हुई आवाज में कहा।

"लड़के को उठा ले गये हैं।" रामी ने कहा।

"लड़के को?" पद्दालु को एक क्षण विश्वास न हुआ।

"अगर तुमने हमारी बात सुनी तो उसकी जान को खतरा नहीं है।" कहते हुए पोतगाडु, पेन्टय्या, कोने के अन्धेरे में से बाहर आये।

"अरे चोर कहीं के।" पद्दालु ने लाठी उठायी। पुल्ली ने लाठी पकड़ ली।

"नहीं, अगर तुमने लाठी उठायी, तो जान लो कि मेरी जान चली गयी।" उसने कहा।

"अगर तुमने कुछ किया, तो वे बुडतडु (लड़के) को मार देंगे।" रामी ने अपने दुःख को गले में जब्त करके कहा।

पद्दालु चकरा-सा गया। पोतुगाडु हंसता-हंसता सामने आया।

"अगर तुमने हमारी बात सुनी, तो तुम्हारा और उसका कुछ नहीं बिगड़ेगा। नहीं तो, तुम्हारे मालिक ने जिस तरह रंगा को मारा है, हम भी बुडतडु को मार देंगे।"

"क्या बक रहे हो, हमारा मालिक तो उस तरफ था ही नहीं। वह तो मारने आया था और खुद मर गया।" पद्दालु ने कहा।

"यह तो पुलिस तय करेगी। तुम हमारे साथ आओ।" वेंकटेश ने कहा।

"कहां?"

"तुम इस तरह के सवाल मत करो। ज्यादा दिन नहीं रहना होगा। बस, जब तक तुम्हारे छोटे मालिक पर खून का जुर्म साबित नहीं हो जाता, तभी तक।" दरवाजे के पास आये हुए, अप्पन्ना ने कहा।

"गधे कहीं के! यह सब तुम्हारे मुन्शी की साजिश है। अरे, मेरी जान चली जाये, पर अपने मालिक पर ऐसा केस नहीं आने दूंगा। मैं जाकर अभी इंसपेक्टर से सब कुछ कह दूंगा।" कहता पद्दालु चल पड़ा। पुल्ली ने उसके पैर पकड़ लिये।

"नहीं, नहीं, अगर तुमने जाकर सच बता दिया, तो वे बुडतडु को मार देंगे। मेरी कसम, तुम मत जाओ. . ." कहती मुख पीट-पीट कर वह रोने लगी। पद्दालु खड़ा हो गया। उधर मालिक के साथ अन्याय हो रहा था। अगर वह न गया, तो पुलिस आयेगी और उस झोंपड़े में, उन्हें और शव को देखेगी। उन पर केस पक्का हो जायेगा और अगर मैं उनके पास जाता हूं, तो इधर मेरे लड़के को ये कसाई मार देंगे।

अभी वह सोच ही रहा था कि वे दोनों कसाई उसका एक-एक हाथ पकड़ कर, उसे चला

कर ले गये।

"अगर तुम दोनों में से किसी ने सच कहा, तो न पद्दालु रहेगा, न यह लड़का।" उन्हें खबरदार करके वे चले गये। पुल्ली फूट-फूट कर रोने लगी। रामी ने अपनी मां को उठाकर खाट पर लिटा दिया।

पद्दालु को गये दो तीन घन्टे हो गये थे। एक तरफ कहीं सुबह हो रही थी। पद्दालु का क्या हुआ? हमारे आदमी ही क्यों नहीं आये? राजू ने सोचा कि अगर शव को वहां छोड़ भी दिया गया तो कोई खतरा न था। घर जाकर, पहले पिता जी को और भाई को, जो कुछ हुआ है, वह बताना होगा। पुलिस के पास खबर भिजवानी है। राजू गांव की ओर चल पड़ा।

नाला पार करते ही, राजू ने सोचा कि यह अच्छा होगा अगर घर जाने से पहले यह मालूम किया जाये कि पद्दालु को क्या हो गया है।

उसके घर जाकर उसने दरवाजा खटखटाया। रामी ने दरवाजा खोला। उसे वहां देखकर, वह चकित रह गयी। उसने उसे हाथ से पकड़कर, अन्दर बुलाया। फिर उसने दरवाजा बंद कर दिया। राजू को यह सब देख आश्चर्य हो रहा था।

"क्यों? क्या हुआ है?" उसने आतुरतावश पूछा।

पुल्ली जोर-जोर से रोती ढह-सी गयी। मां को, एक हाथ से पकड़कर उसे सहलाते हुए रामी ने कहा, "उसे और लड़के को पकड़कर ले गये हैं।"

"कौन?"

रामी ने जो कुछ हुआ था, वह पूरा-पूरा बता दिया। वह सुनकर राजू की अक्ल ही जाती रही।

"कुछ भी हो, मैं जाकर पुलिस को सब कुछ बता दूंगी।" रामी ने कहा।

"रामी" उसको पुकारती पुल्ली उठी।

"नहीं, रामी।" राजू ने कहा।

"आपका नमक खाया है और जब आपके प्राणों पर ही आ रही है, तो हम कैसे चुप रहेंगे?" रामी ने कहा।

"अभी तक तो मेरे ऊपर कोई केस नहीं चलाया गया है। जब चलाया जायेगा, तब देख लेंगे। मगर किसी से कुछ न कहना, वे कसाई हैं, कहे के मुताबिक कर दिखायेंगे।" राजू ने कहा।

वेंकटेश, पुलिस इंसपेक्टर के साथ झोंपड़े में आया। कहीं कोई आहट न थी। इंसपेक्टर ने दरवाजा खोलकर टार्च से अन्दर देखा। वहां रंगा का शव था।

"वह फरार हो गया है।" वेंकटेश ने कहा। इंसपेक्टर ने अन्दर गौर से देखा, खेतों में ढूंढा, पर राजू का कहीं पता न था।

राजू पुल्ली और रामी को ढाढस देकर गांव की ओर चला। अभी अंधेरा था। वह अभी छोटी गली का मोड़ पार कर, अपने घर के पास आ रहा था कि घर के सामने पुलिस की जीप खड़ी देखी। अन्दर जाया जाये या नहीं, कुछ देर खड़े होकर राजू ने सोचा। इतने में कहीं से

मल्ली, कबूतर की तरह वहां आयी।

"चलो।" मल्ली ने कहा।

गली में आकर उसने बताया कि पुलिस वाले गिरफ्तारी का वारंट लेकर उसे पकड़ने आये हुए हैं। अगर दिखायी पड़ा, तो वे उसे पकड़कर ले जायेंगे।

"पर मैंने तो उसे मारा ही नहीं है।" राजू ने कहा।

"वे विश्वास करें तब न, तुम पर उनका शक पक्का है।" मल्ली ने कहा। वह उसका हाथ पकड़कर, गलियों में से ले गयी।

पुजारी, तभी स्नान करके तालाब के किनारे से आ रहा था। मल्ली ने घबराते हुए, उसके दोनों हाथ पकड़ लिये। उसे आश्चर्य हुआ। मन्दिर के आंगन में ले जाकर, दरवाजा बंद कर दिया। मन्दिर के पिछवाड़े में जाते हुए, उसने पुजारी को भी आने का इशारा किया। राजू गनेर के पौधों में से सामने आया। पुजारी न जान सका कि क्या हो गया था। मल्ली ने जो कुछ हुआ था, उसे बता दिया।

"आप पर किसी को कोई शक नहीं होगा। भाई को, आपको ही कहीं रखना होगा नहीं तो अन्याय हो जायेगा। उसे पकड़ ले जायेंगे और उस पर केस कर देंगे।" मल्ली का गला भर आया। आवाज में कंपकंपी आ गयी। पुजारी दुविधा में था।

"बस, कुछ ही दिन, जब तक यह न मालूम हो जाये कि उन्होंने पद्मालु और उसके लड़के को कहां छिपा रखा है।" मल्ली पुजारी के सामने गिड़गिड़ायी।

"मैं भला इन्हें कहां छुपाकर रख सकता हूं?" पुजारी ने पूछा।

"माता की मूर्ति बहुत बड़ी है, उसके पीछे अगर भाई को छिपा दिया गया तो कोई नहीं देख सकेगा।" मल्ली ने कहा। पुजारी भी तब तक एक निर्णय पर आ गया था।

"अच्छा, तो आओ।" उसने कहा।

"आपका किया..." मल्ली ने कृतज्ञता से उसे गले लगा लिया, हालांकि उसके कपड़े गीले थे।

"बेटी।" पुजारी ने कहा।

राजू को मन्दिर में रखकर, बाहर से ताला लगा दिया। मल्ली और पुजारी ने मिलमिलाकर मन्दिर के पीछे की दो तीन ईंटें हटा दी। ईंटें ढीली ही थीं, कुछ दिन पहले पुजारी ने स्वयं उनको वहां रखा था। कभी किसी चोर ने वहां सेंध लगायी थी। उस छेद में से राजू को रोज खाना पहुंचाया जा सकता था। विधि के इस खेल पर, पुजारी को हंसी आयी।

मल्ली जब पिछवाड़े के रास्ते से घर पहुंची, तो घर में हो-हल्ला मचा हुआ था। शेषम्मा रो रही थी। सुब्बय्या इस तरह चहलकदमी कर रहा था, जैसे पिंजड़े में बंद शेर हो। इंसपेक्टर कह रहा था, "सुब्बय्या जी, ऐसे लोग हैं, जिन्होंने राजू को, खेत वाले झोंपड़े में शव के पास बैठे देखा है।"

"मगर हमारा लड़का तो खेत ही नहीं गया था। रात भर घर में ही था।" सुब्बय्या ने गुस्से में कहा।

"तो बुलवाइये।" इंसपेक्टर ने हंसते हुए कहा।

"हम नहीं दिखायेंगे, हम घर की तलाशी नहीं होने देंगे।" पुत्रय्या ने जिद पकड़ते हुए कहा। मल्ली भी वहां चली आयी।

"देखने दो, क्यों भला उनका यह शक बना रहे कि हमने उसे घर में छिपा रखा है।" मल्ली ने कहा।

इंसपेक्टर इन बातों से जान गया कि राजू घर में न था। फिर भी सिपाहियों ने सारे कमरे देखे। इंसपेक्टर ने उठते हुए कहा, "सुब्बय्या जी, यदि वह स्वयं हमारे सामने आ गये, तो सुनवाई में उनका ही भला होगा। नहीं तो, भाग जाना उनके खिलाफ एक सबूत माना जायेगा। कल दोपहर को आपके लड़के का रामय्या जी के घर जाना और सबके सामने यह कहना कि वह रंगा को गाड़ कर रख देगा और कल उनका शव के पास बैठे देखा जाना, इन सबके कारण यही धारणा बनती है कि उन्होंने ही रंगा को मारा होगा।"

इंसपेक्टर उठकर चला गया। सुब्बय्या को यह सब बड़ा विचित्र लग रहा था। राजू जो खेत गया था, उसका क्या हुआ? रंगा का शव उस झोंपड़े में क्यों था? इन प्रश्नों का कोई साफ उत्तर उसे नहीं दिखायी दे रहा था। रात रंगा खेत गया होगा और वहां कोई लड़ाई हुई होगी और उसमें रंगा मर मरा गया होगा और राजू डर कर कहीं भाग गया होगा, यह सन्देह कहीं उसकी अंतरात्मा में था, पर उसका मन उसे मानता न लगता था।

सूरालु को कोई भी न संभाल सका, न आश्वस्त ही कर सका। धर्मराजू, लिंगराजू, वेंकन्ना शहर जाकर, पोस्ट मार्टम के बाद, रंगा का शव घर ले आये थे। दोपहर के तीन बज रहे थे। उस दिन घर आकर किसी ने पानी तक न पिया था। लक्ष्मी अपनी मां के पास बैठी तो थी, पर उसने उससे सांत्वना का एक शब्द भी न कहा। वह माता का हाथ पकड़ कर बैठी रही, बस। उसकी मां एक ऐसे पेड़ की तरह थी, जिस पर बिजली गिर पड़ी हो। रामय्या, पत्नी पर चिल्ला रहा था। पर वह गुस्से में था। रामय्या का दु:ख कभी भी आंसुओं में न बहता था। आंसू, उसके स्वभाव के विरुद्ध थे। उसके चिल्लाने में ही, कभी-कभी उसका दु:ख व्यक्त हो रहा था। जब शव को दहन के लिए ले जाया जा रहा था, तो दस आदमियों को सूरालु को संभालना पड़ा। वह क्या चिल्ला रही थी उसे ही नहीं मालूम था। वह राजू को, उसके परिवार को, सारे गांव को बुरा भला कह रही थी, कोस रही थी। अगर धर्मराजू और लिंगराजू ने उस दिन अपने ऊपर सारा जिम्मा न लिया होता, तो शायद दाह संस्कार ही न हो पाता।

रात के नौ बजे गये। श्मशान से सब वापस आ गये थे। श्मशान पहुंचने के बाद से रामय्या मौन हो गया था। उसने एक बात भी न की। अगर वह चिल्लाता या गुस्सा दिखाता तो धर्मराजू उसे समझ सकता था और डांट-डपटकर जा सकता था। रामय्या को मौन देखकर वह अब घबरा रहा था। उसको सन्देह होने लगा था कि कोई अग्नि पर्वत फूटने वाला था। रामय्या का मौन रहना उसके लिए एक नया अनुभव था। इसलिए उसे अपना कार्यक्रम जल्दी से जल्दी अमल में लाना था। जो पहले से निर्णीत चाल थी, उसमें राजू की गिरफ्तारी बड़ी मुख्य थी। राजू का पुलिस की नजर से भाग जाना, उसकी चाल की कुछ हद तक असफलता-सी

ही थी । समय के साथ सत्य जीतता है । इसलिए बिना समय दिये,चाल को चालू करना होगा ।

रामय्या बड़ी गली की चौपाल में आराम करने चला गया । धर्मराजू,वेंकन्ना कार में सवार होकर निकल पड़े । पद्दालु को धमकाकर, अपनी तरफ करना था। पद्दालु साधारणतया डरने-डराने वाला आदमी न था । इसलिए पुल्ली को आड़ में रखकर,उसे रास्ते पर लाना था ।

हरिजनवाड़े के पास उसने कार रुकवाई और किट्टय्या को पद्दालु की झोंपड़ी के पास भेजा । घर में पुल्ली अकेली थी । रामी का घर में न होना ही अच्छा था । पुल्ली को यह आश्वासन देकर कि वह उसे लड़का दिखलायेगा,उसे कार में सवार कर लिया ।

लिंगराजू को पिछले दिनों मंगम्मा के साथ एकांत में समय बिताने का मौका ही नहीं मिल रहा था । धर्मराजू अब खुले आम उसके घर आया करता था और उसकी चौकड़ी वहीं लग रही थी । लिंगराजू को अपने ऊपर अपने पिता पर, गांव पर, दुनिया पर बड़ा गुस्सा आ रहा था ।

दाह संस्कार के बाद लिंगराजू ने देखा कि उसका पिता,वेंकन्ना से कोई सलाह-मशविरा कर रहा था, और फिर दोनों मिलकर कहीं कार में चले गये थे । उसने सोचा कि मंगम्मा के साथ समय बिताने का इससे अच्छा मौका नहीं मिल सकता । पिता और वेंकन्ना किसी बड़े काम पर ही गये होंगे,रात को वापस नहीं आ सकेंगे,यह सोच कर दस बजे तक वह मंगम्मा के घर पहुंच गया ।

शाम,एक पत्तल में भोजन बांधकर मल्ली मंदिर के पास ले गयी । अंधेरे में मंदिर के पिछवाड़े से ईंट हटाकर उसने भोजन की पोटली अंदर सरका दी ।

भोजन करते हुए,राजू ने बहुत ही धीमे से कहा, ताकि आवाज मंदिर से बाहर कहीं न जाये ।

"आज रात ही मालूम करना है कि पद्दालु को कहां छिपाया गया है,रामी और गंगप्पा को बुलाया था कि नहीं ?"

"इमली के पेड़ों के पीछे है,केतकी के झाड़ों के पास जो कुछ करना है,वह बताओ,पर तुम यहां से न हटना ।" मल्ली ने उसे मनाते हुए कहा ।

"अगर मैं नहीं जाऊंगा तो कौन देखेगा यह काम ? गंगप्पा से यह काम होने का नहीं, तुम भाई को और पिताजी को यह न मालूम होने देना कि मैं कहां हूं,वह जल्दबाजी में सब कुछ बिगाड़ देंगे ।"

"अच्छा," मल्ली ने कहा । उसने लंबी सांस छोड़ी । उसमें निराशा ही नहीं भय भी था ।

रात के बारह बज रहे थे । मंगम्मा लिंगराजू को एक तरफ तो खूब उकसाती ललचाती, और दूसरी तरफ उसे दूर भी रखती । लिंगराजू के लिए स्वर्ग आधा फुट दूर था । जब वह उसके पास पहुंचता, तो वह और दूर चला जाता । लिंगराजू से रुपये ऐंठने का इससे अच्छा मौका मंगम्मा को न मिलता । धर्मराजू कभी-कभी खुल कर उसे पैसा न देता था, बस उसे दूर-दूर से दिखाकर उसे चिढ़ाता था । मंगम्मा चाहती थी कि लिंगराजू को खूब ललचाकर, उससे कम से कम सौ रुपये तो ऐंठे ही जायें,पर एक लिंगराजू था कि वचन देता रहा,पर उसने

घर जाकर पैसे लाने का नाम न लिया। लिंगराजू चाहता था कि पहले उसकी इच्छा पूरी की जाये, फिर देखा जायेगा। वह इतना गरमा रहा था जैसे उसे बुखार आ गया हो, वह अपने को काबू में न रख सका। वह उठा और मंगम्मा को उठाकर बिस्तर पर डाल दिया। तभी दरवाजे पर आवाज हुई। लिंगराजू ने यह सोचा कि पिता आ गया है, तुरंत ठंडा-सा पड़ गया। पास ही एक टोकरा था, जिसमें तिल धोये जाते थे, उसमें जा छुपा। मंगम्मा अपने बाल ठीक करती, दरवाजा खोलने गयी।

रामी ने दस पैसे मंगम्मा के हाथ में रखकर तेल मांगा। उसने कहा कि उसकी मां के पेट में दर्द हो गया था और पड़ोस की औरत ने बताया था कि तेल की मालिश करने से ठीक हो जायेगा। मंगम्मा ने तेल दे दिया। उसके बाद क्या हुआ यह मंगम्मा बहुत देर तक न जान सकी। वह दस पैसे का तेल उसकी आंखों में ही था। मंगी ने रामी को पकड़ने की कोशिश की, पर हाथ तेल से इस तरह चिकने हो रहे थे, कि उसकी पकड़ ढीली ही रही। वह चीख भी न सकी क्योंकि रामी ने उसके मुंह में न केवल तेल डाला था, बल्कि तिल भी ठूंस दिये थे। दोनों हाथ पीछे करके, कोल्हू के पास उसे खड़ा कर दिया। राजू ने घर के अंदर जाकर, किवाड़ बंद कर लिये। इधर-उधर देखा। उसे तिल धोने वाले टोकरे में कुछ आहट सुनायी दी। उसने लिंगराजू को इस तरह निकाला जैसे वह भी कोई धोबी के पास जाने वाले कपड़ों की गठरी हो। लिंगराजू के तो होश ही उड़ गये।

"पद्मालु को कहां छिपाया गया है, बताओ।" राजू ने बहुत ही धीमे से पूछा। लिंगराजू ने सिर हिलाकर बताया कि वह नहीं जानता।

"और उसके लड़के को ?"

फिर उसने उसी तरह सिर हिलाया। यह सोचा कि उससे पूछने-पाछने से कोई फायदा न था, राजू ने उसे खाट की रस्सी से बांध दिया और मुख में कपड़े ठूंसकर चला आया। रामी को इशारे से यह बताया कि अंदर वह कहीं न था और राजू अंधेरे में चला गया। रामी भी उसके पीछे चली गयी। मंगम्मा को अपमान के बारे बड़ा गुस्सा आ रहा था। जब उसे आंखों से दिखने लगा तो उसने अपना गुस्सा सारा खाट पर पड़े लिंगराजू पर दिखाया। उसकी मुश्कें खोलीं, बाहर जाने के लिए कहा और साफ-साफ कह दिया कि उसके घर में न उसके लिए जगह रही, न धर्मराजू के लिए, न उसकी चौकड़ी के लिए। लिंगराजू वैसे भी घबरा रहा था कि इस बीच मंगम्मा उस पर बिजली सी टूट पड़ी। इस उथल-पुथल और मार पकड़ में, बस उसके गले से बाहर रोना ही आया। यह सब यहां हो ही रहा था कि उसका पिता धर्मराजू कार से उतरा।

धर्मराजू बड़ा परेशान था। उसकी चाल सफल न हुई थी। इतना पैट्रोल खर्च करके, पुल्ली को सौ मील कार में ले जाना व्यर्थ ही रहा। बोल्लाराम में रंगा के पिता के खेत में, पंप के लिए बनाया गया एक शेड था। उसी में पद्मालु को बंद कर रखा था। धर्मराजू ने सोचा था कि अगर पुल्ली को पद्मालु के सामने लाया गया, तो पद्मालु का हठ कम होगा और वह उसका कहा सुनेगा। और तब मैं एक प्रतिज्ञा पत्र पर अंगूठा छाप दूंगा। प्रतिज्ञा पत्र में यह लिखवाना

था कि उसने राजू को रंगा को पीटते देखा था। पुल्ली खूब रोयी धोयी तो भी, वह गंदा काम करने के लिए राजी नहीं हुआ और पद्दालु ने साफ-साफ कह दिया कि वह अपनी जान दे देगा, पर अपने मालिक का हर्ज नहीं करेगा। पुल्ली को खबरदार कर दिया गया कि अगर उसने किसी से यह कहा कि पद्दालु और उसका लड़का कहां है तो दोनों की जान नहीं बचेगी। उसे कार में बिठाकर वे फिर वापस ले आये।

इस परेशानी में जब उसने देखा कि मंगम्मा, उसके लड़के लिंगराजू को धुन रही है, तो उसका गुस्सा बेकाबू हो गया। वह जोर से मंगम्मा को ही पीटने लगा। मंगी गिर गयी और जोर-जोर से रोने लगी।

"तुम्हारी वजह से ही मेरा घर बरबाद हो रहा है, जाओ मरो, उस चमारिन की इतनी हिम्मत की मेरी आंखों में तेल उड़ेलती गयी। मेरी भी कोई जिंदगी है! यह सब तुम्हारी वजह से ही हुआ है।"

धर्मराजू का गुस्सा ज्यादा देर तक न रहता था। स्वार्थ उसके लिए मुख्य था। उसने मंगी को मनाया, पुचकारा। वेंकन्ना ने खर्च के लिए जो पांच सौ रुपये दिये थे, उनमें से एक सौ रुपये उसके हाथ में रख दिये। इधर-उधर की बातें कहकर, जो कुछ हुआ था उसके बारे में उसने सब कुछ मालूम कर लिया।

यानी इसका मतलब यह हुआ कि राजू कहीं आसपास ही है। वे भी इस कोशिश में हैं, कि पद्दालु को कहां छिपाया गया है, मालूम किया जाये। यह राजू कहां छिपा हुआ है ? धर्मराजू सोचने लगा।

इमली के पेड़ों के नीचे, गंगप्पा, मल्ली, राजू और रामी, आगे क्या किया जाये, इस बारे में सोच रहे थे। राजू यदि बाहर आया तो खतरा था और अगर वह मंदिर में ही रहता है, तो कोई ऐसा न था, जो साहस करके कुछ करे। गंगप्पा साहस तो कर सकता था, पर उसमें इतनी होशियारी न थी कि काम अच्छी तरह कामयाबी के साथ कर सके और अगर पुन्नय्या को काम सौंपा गया तो गुस्से में सब काम खराब ही कर देगा और दो प्राण व्यर्थ चले जायेंगे। पद्दालु और उसके लड़के को उधर वाले जरूर मार देंगे। उन्होंने बहुत सोचा पर कोई रास्ता न दिखायी दिया और इस बीच सवेरा होने लगा था। मल्ली ने, राजू को छिपे रहने के लिए हठ किया।

राजू तालाब के किनारे पर आ रहा था कि परली तरफ पीपल के पेड़ के नीचे, उसे कुछ आदमी दिखायी दिये। वह मंदिर के पिछवाड़े में गया और दीवार फांदकर मंदिर के प्रांगण में चला गया। पुजारी सामने के मंडप में लेटा हुआ था। वह सो नहीं रहा था। वह राजू की ही प्रतीक्षा कर रहा था। उसने झट मंदिर का दरवाजा खोला और राजू के अंदर जाते ही, उसने फिर ताला लगा दिया। फिर जाकर मंडप में लेट गया। किसी ने बाहर का दरवाजा खट-खटाया। पुजारी ने दरवाजा खोला। धर्मराजू और पुलिस वालों को वहां देख, वह चकित रह गया। पर उसने अपने मुंह पर अपना आश्चर्य न प्रकट होने दिया। पुलिस वालों ने सारा प्रांगण खोज डाला।

"कोई भी नहीं है।" पुलिस वालों ने इंसपेक्टर से कहा।

"मंदिर के अंदर भी देखिये।" धर्मराजू ने कहा। पुजारी बुरी तरह घबरा गया।

"ताला खोलो।" इंसपेक्टर ने कहा।

अगर वह कुछ कहता-कहाता या करता-कराता, तो उनका संदेह और बढ़ सकता था। इसलिए पुजारी ने माता का ध्यान किया और मंदिर का किवाड़ खोल दिया। एक निर्दोषी के साथ, उसे भी पकड़ ले जायेंगे और क्या कर सकते हैं ये पुलिस वाले? मैंने अच्छा किया है या बुरा, या तो माता ही जानती है। अगर माता मुझे क्षमा कर दें तो काफी है।

इंसपेक्टर ने बैटरी की रोशनी में सारा मंदिर देखा। कहीं कोई आदमी न था। पुजारी को आश्चर्य हुआ। राजू जो अंदर था, उसका न्या हुआ? वह कहां है? धर्मराजू, पुलिस इंसपेक्टर और सिपाही चले गये। पुजारी ने, फिर आंखें बंद करके माता का ध्यान किया। राजू धीमे से, ऊपर से नीचे खिसका। माता की मूर्ति के पीछे, उसके ऊपर, एक पत्थर की बनी छतरी-सी थी। ऊपर चौड़ाई, आधे इंच से अधिक न होगी, अगर आदमी वहां चढ़ भी जाये, तो वहां छिपने के लिए काफी जगह न थी। पुजारी ने आश्चर्य के साथ अपनी ओर देखता पाया, तो राजू उसको मूर्ति के पीछे ले गया। मूर्ति के दोनों ओर दीवार में से दो पत्थर निकल रहे थे। उन पर रस्सी के फंदे-से लटक रहे थे। उनमें से एक फंदे में हाथ और दूसरे में पैर रखकर अगर ऊपर चढ़ गये, तो किसी को कुछ दिखायी देना मुश्किल था। राजू ने इस डर से कि कहीं ऐसी भी नौबत न आ जाये इसकी व्यवस्था कर ली थी। पर जब पुलिस आकर रोशनी करके सब ओर देखने लगी, तो राजू को लगा कि वह जगह भी उतनी सुरक्षित न थी।

"अगर मैं यहां रहा तो तुम्हारी जान पर आ बनेगी, मैं घर चला जाता हूं।" राजू ने कहा।

"नहीं भाई, इससे अच्छी जगह छिपने के लिए कहीं नहीं है। अब एक बार देख ही गये हैं, फिर वे इस तरफ नहीं आयेंगे।" पुजारी ने कहा।

रामी के घर आते ही, पुल्ली जोर से फूट पड़ी। कौन-सी नयी आफत आ पड़ी थी, रामी यह तुरंत न जान सकी। कहीं लड़के को तो कोई खतरा न था? फिर पुल्ली ने हिचकियां भरते हुए कहा, "उसके पास मुझे ले गये थे।"

"किसके पास?"

"तुम्हारे पिता के पास, वह पिंजरे में बंद शेर की तरह है।"

"वह कहां है? कहां है, कहां, बताती क्यों नहीं?" रामी ने आतुरता के साथ पूछा।

"उन्होंने कहा है कि अगर मैंने किसी को इस बारे में बताया, तो वे उसे मार देंगे। हमारा लड़का भी नहीं मिलेगा।" पुल्ली ने कहा।

"कोई बात नहीं, कोई डर नहीं, बताओ, बताओ भी, मालिक जल्दबाज नहीं हैं। वे सोचेंगे कि उसे कैसे छुड़ाया जा सकता है। अगर एक का ठिकाना मालूम हो गया तो कोई रास्ता निकल ही आयेगा, मेरे भी तो पिता हैं। अगर उन्हें कुछ हो गया, तो क्या मैं जिंदा रह सकूंगी? बता भी।" रामी ने उस पर दबाव डाला। न चाहते हुए भी, पुल्ली ने धीमे-धीमे बता ही दिया और रामी तुरंत वहां से दौड़ी।

मल्ली, गंगप्पा और रामी, मंदिर के पिछवाड़े में रोज की तरह बैठे हुए थे और राजू उनको

अंदर से बता रहा था कि क्या किया जाये। जैसे भी हो, पद्दालु के पास खबर पहुंचानी है। उस शेड के पास, हट्टे-कट्टे छः आदमी पहरा दे रहे हैं। अगर हमारा कोई आदमी उस तरफ गया तो पहले वे पद्दालु का खात्मा कर देंगे। इसलिए पुल्ली का जाना ही अच्छा है। वे सोचेंगे, कि वह अपने दुख के कारण ही वहां आयी है। वे इसका संदेह न करेंगे कि उसने पद्दालु के ठिकाने के बारे में राजू के आदमियों को बता दिया है। वह जाकर यह शोर करे कि उसे विश्वास नहीं है कि उसका लड़का जिंदा है। जब तक वह उसको अपनी आंखों से देख न लगी, वहां से जायेगी नहीं। तब देखें धर्मराजू क्या करता है ? इस हालत में, जब तक स्थिति और खराब न हो जाये, दूसरी हत्या करने के लिये नहीं सोचेगा। गंगप्पा और रामी तो चले गये, पर मल्ली वहीं बैठी रही।

लक्ष्मी ने, मंदिर जाने की जिद की। रामय्या उसे अकेली नहीं भेजना चाहता था। रंगा की मौत के बाद, सूरालु ने चारपाई पकड़ ली थी। रामय्या ने बहू को लक्ष्मी के साथ जाने के लिए कहा।

छेद में से राजू, मल्ली से अपने आदमियों का कुशल-समाचार पूछ रहा था। मल्ली घर की सब बातें बता रही थी। उधर पुजारी मंदिर का दरवाजा खोल कर आ रहा था। राजू, माता की मूर्ति के पीछे छिप गया। लक्ष्मी और उसकी भाभी मंदिर के अंदर आयीं। राजू ने लक्ष्मी का चेहरा एक बार देखना चाहा। परंतु यदि वेंकन्ना की पत्नी उसे देख लेती तो जान आफत में पड़ जाती। लक्ष्मी ने माता की मूर्ति के सामने बहुत देर तक साष्टांग किया। पुजारी पूजा कर रहा था, पूजा समाप्त होने तक वह उठेगी नहीं। पुजारी ने एक थाल में नारियल का टुकड़ा, फूल और माता का कुंकुम रखकर, लक्ष्मी को बुलाया, "बेटी" ! लक्ष्मी ने धीमे से सिर उठाकर माता की मूर्ति की ओर देखा। वह उठी। राजू ने उसका मुंह, माता की बाहों के बीच में से देखा। उसे, उसको देखते हुए ऐसा लगा जैसे किसी ने उसके मन में भाला भोंक दिया हो। आंखों में तरी तो क्या चमक भी न थी। मन भी पथरा-सा गया था। ममता, प्रेम, स्नेह, सभी कुछ उसमें सूख से गये थे। वह निर्जीव-सी लगती थी।

"बेटी, यदि माता का अनुग्रह रहा तो सब कुछ ठीक हो जायेगा। फिर अच्छे दिन आयेंगे।" पुजारी ने कहा। उसके हाथ में उसने थाल दे दिया।

"नहीं आयेंगे, जिन्हें हम अच्छा समझते थे, वे ही विरोधियों का खून करवा रहे हैं। फिर इस गांव में अच्छे दिन कहां से आयेंगे ?" लक्ष्मी ने कहा। वह थाल लेकर चली गयी। राजू ने चाहा कि वह लक्ष्मी के पास जाये और उसके दोनों हाथ पकड़कर कहे, "मैंने हत्या नहीं की है, मेरी बात का विश्वास करो।" पर तब तक पुजारी उनको बाहर ले गया था। उसे डर था कि अगर किसी को इसकी बू भी आ गयी कि राजू अंदर था, तो मुसीबत आ सकती थी।

राजू जल्दी छेद के पास गया। मल्ली को पुकारा। मल्ली को डर लगा कि कहीं ऐसा न हो कि यह पुकार कोई और सुन ले। उसने डर के कारण इधर-उधर देखा। मंदिर के प्रांगण में तो कोई न था, पर मंदिर की परली तरफ तालाब के किनारे, लोग बाग घूम-फिर रहे थे। छेद से, अपनी पीठ लगाकर जैसे रोज की तरह वह बैठी हो, जैसे वह अपने आप ही कुछ कह रही

हो, वह बोली, "धीमे बात करो, उधर आदमी है ।"

राजू ने आवाज धीमी करके कहा, "लक्ष्मी से मिलना है ।"

"लक्ष्मी बहिन ? उसकी तो और जगह शादी तय हो गयी है । लक्ष्मी तो शत्रुओं के घर है । कैसे मिलोगे और मिलने से फायदा भी क्या है ?"

"जाने दो, जहां भी शादी हो, वह सुख से रहे । पर मेरे लिए यही काफी है कि वह जान ले कि मैंने खून नहीं किया है ।"

"मैं जाकर बता दूंगी ।" मल्ली ने कहा ।

"नहीं, तुम उसे रात को मंदिर में ले आओ । मुझे माता के समक्ष यह कहना होगा, नहीं तो वह मेरा विश्वास नहीं करेगी ।"

मल्ली कुछ न बोली ।

"मल्ली, अगर तू लक्ष्मी को यहां न लायी, तो मैं यहीं, इस मंदिर में ही मर जाऊंगा ।" राजू ने कहा । मल्ली कुछ देर सोचती रही । उसे नहीं मालूम हो सका कि उसे वहां कैसे लाया जाये । फिर भी उसने कह दिया, "अच्छा ।" वह वहां से घर चली गयी ।

पद्दालु इस तरह चहलकदमी कर रहा था, जैसे पिंजरे में हो । उस शेड में एक खिड़की थी, जहां उसकी नजर नहीं पहुंचती थी । जब उसे कुछ न सूझा तो उसने उस पर चढ़कर देखा । वहां, पीपल के पेड़ के नीचे, पहरा देने वाले ताश खेल रहे थे । उसने लंबी सांस छोड़ी और नीचे उतर आया । उसे रात और दिन का फर्क ही नहीं मालूम हो रहा था । यह भी नहीं मालूम था कि उसके मालिक को क्या हो गया था ? यह भी नहीं मालूम था कि लड़का कहां है । रात को जब सब सो जाते थे, तो उसे उसके संदेह और चिंताएं सोने न देतीं और दिन में जब सब जागे होते हैं, तो उसके संदेह भी कुछ दबे से रहते । इसलिए सवेरे बासी भात खाते ही, उसको नींद आ जाती । पर आज तब भी न सो सका । बहुत चाहा कि पुल्ली का रोना भूल जाये, पर वह न भूल सका । वह कानों में गूंजता रहा । दोपहर बाद कहीं आंख लगी । परंतु पुल्ली का रोना, कहीं मन में गूंज रहा था । फिर भी, वह इतना थक-थका गया था कि उसे हल्की-हल्की नींद आ गयी । उस नींद में उसे एक सपना आया – मालिक नाला पार कर रहा था और नाला बढ़कर समुद्र सा हो गया था और समुद्र के पार, काली की मूर्ति थी । किसी ने लड़के की बलि देने के लिए, पास के पत्थर पर लिटा दिया था । मालिक तैरने की कोशिश कर रहा था और लहरें उसे पीछे धकेल रही थीं । वह आकाश में था और नीचे कूदने की कोशिश कर रहा था । बादल घिर आये और वे उसे छोड़ते नहीं थे । दो आदमियों ने पुल्ली को पकड़ लिया था । वह रो रही थी । वह इतना शोर कर रही थी कि उसके शोर के कारण समुद्र का शोर और भी बढ़ गया था ।

उचटी-उचटी नींद में, उसे केवल पुल्ली का रोना सुनायी पड़ रहा था, बाकी सब धीमे-धीमे चला गया था । पद्दालु कुछ देर यह निर्णय न कर सका कि वह रोना सच था या सपना ? उसने आंखें जो खोलीं तो उधर शोर सुनायी दिया । उस शोर में उसे पुल्ली की आवाज साफ-साफ सुनायी दी । वह तुरंत खिड़की पर जा चढ़ा । पुल्ली बाल खींच-खींच कर रो रही थी और गुंडे

उसे पकड़े हुए थे ।

"देखो अगर शोर किया तो हड्डी पसली एक कर देंगे । कह तो रहे हैं कि दोनों हैं, क्यों नहीं यकीन करती ?" एक गुंडे ने कहा ।

"कैसे यकीन करूं ? मुंशी के आदमियों का कैसे यकीन करूं ? जब तक मैं अपनी आंखों से नहीं देख लूंगी तब तक यकीन नहीं करूंगी ।"

"अगर चिल्लायी, तो गला घोंट देंगे, तुम नहीं जानती, हम कौन है ।" एक और गुंडे ने कहा ।

पद्दालु खिड़की में से चिल्लाया ।

"अरे, उसे छोड़ते हो कि नहीं, मुरदे कहीं के ।"

उनसे अपने को छुड़ाकर, पुल्ली शेड के पास गिर गयी ।

"अरे, अगर लड़का न दिखायी दिया तो मैं नहीं जाऊंगी । गांव में सब कह रहे हैं कि इन्होंने उसका अब तक काम तमाम कर दिया है । तू इस तरह बंद रहकर क्या करेगा और मैं जीकर क्या करूंगी ? अगर वह मुझे न दिखायी दिया, तो मैं भी यहीं जान दे दूंगी ।"

उसका रोना धोना सुनकर पद्दालु का भय और भी बढ़ गया । उसका मुंह लाल हो गया । उसके होठ हिले, "अगर उस पर कोई आंच आयी, तो मैं इन सबका खातमा कर दूंगा ।"

"अरे, इस औरत की तो अक्ल मारी ही गयी, तुम्हारी भी चली गयी क्या ? कह तो रहे हैं कि तुम्हारा लड़का ठीक है ।"

"नहीं, यह काफी नहीं है, तुरंत हमें उसे दिखाओ । अगर तुम नहीं दिखाओगे, तो मैं छत तोड़कर बाहर आ जाऊंगा, बाद में जो होगा सो होगा ।"

गुंडे दुविधा में पड़ गये । पद्दालु के हाव-भाव से लगता था कि जो कुछ वह कह रहा था, वह करके दिखायेगा और जब दिन-दहाड़े इतना शोर होगा, तो खेतों में काम करने वाले भागे आयेंगे, हो-हल्ला मच जायेगा ।

"अरे मीर, तू जल्दी जा और जाकर उनसे यह कह दो । पद्दालु तुम जरा रात तक सब्र करो, तब हम लड़के को लाकर दिखा देंगे । अगर तुमने हमारी बात न सुनी और तुम दोनों में से किसी ने भी शोर किया, तो समझ लो कि लड़के की जान गयी ।"

यह सुन, पद्दालु और पुल्ली का शोर कम हुआ । मीर मुंशी से कहने के लिए निकल पड़ा । पुल्ली शेड के पास ही लेट गयी और पहरे वाले फिर ताश खेलने लगे ।

रामय्या आराम कुर्सी पर लेटा सोच रहा था । न मालूम उसे क्यों रंगा की हत्या कुछ ऊंटपटांग सी लग रही थी । रात वह कहीं अकेला दिखायी देता, तो राजू उस पर हाथ उठा सकता था । क्या राजू ऐसा आदमी है, जो जानबूझ कर किसी की हत्या करना चाहेगा ? यही नहीं, रंगा का शव उनके झोंपड़े में क्यों था ? रंगा आधी रात के समय, क्यों खेत गया था ? धर्मराजू और वेंकन्ना कह रहे थे कि वह रात के समय खेत पर पहरा देने के लिए गया था । वह कांटों की झाड़ी के पास गश्त कर रहा था कि राजू उन झाड़ियों को पार करके आया और उसे अपनी तरफ खींचकर ले गया । उसके मुख में कपड़े ठूंसकर, झोंपड़े में ले गया था, जहां उसने

उसे मार दिया था । यह सब साथ के वेंकटेश और पोतराजू ने देखा भी था । इससे पहले कि वे भागकर किसी और से कहते, राजू ने उसका काम तमाम कर दिया था । अगर धर्मराजू इसमें शामिल न होता, तो कुछ हद तक रामय्या शायद यह कहानी मान भी लेता । जब दुश्मनी इतनी बढ़ जाती है, तो छोटी बात पर भी मार-पीट हो सकती थी । जब दुश्मनी बढ़ जाती है, तो वही चोट है, जो लगती है, जो नहीं लगती है, वह चोट ही नहीं है । रामय्या अपने अनुभव से जानता था कि धर्मराजू जो कुछ कहता था, उसमें थोड़ा-बहुत सच अवश्य हो सकता है, पर अधिक झूठ ही होता था । तो फिर राजू भाग क्यों गया ? उसके आदमी वहीं कहीं आसपास छिपे हुए होंगे । आखिर, पद्दालु का क्या हुआ ? अगर राजू का इस हत्या से कोई संबंध नहीं है, तो उसने पुलिस के सामने जाकर ऐसा क्यों नहीं कहा ?

पर छोटी गली में इस बीच कुछ शोर शराबा हुआ और उसके सोचने में दखल पड़ा । वह झट उठकर उस तरफ गया । मल्ली को, दोनों हाथ पकड़कर, जल्दी-जल्दी, छोटी गली के दरवाजे की ओर खींचकर ले जा रहा था ।

"क्या है यह ?" रामय्या चिल्लाया ।

वेंकन्ना ने मल्ली को छोड़कर कहा । "यह रिश्तेदारों को देखने आयी है ।"

"क्या कह रही है ।" रामय्या ने वेंकन्ना के दो चपत जमा दिये । वेंकन्ना चकित था । विवाह के बाद, कभी उसके पिता ने उस पर हाथ न उठाया था ।

"एक तो बड़े घर की संतानों पर हाथ उठाओ ? फिर इधर-उधर की बकवास भी करो ।" रामय्या ने कहा ।

"मैं चाची और लक्ष्मी बहन कैसी है, यही देखने आयी थी, क्या इस तरह आना भी गलती है ?" मल्ली ने कहा । उसने सिर उठाकर रामय्या की ओर देखा । उसकी आंखों में आंसू देखकर, रामय्या कुछ सहमा । वह जानता था कि मल्ली का मन कितना साफ था और वह लक्ष्मी को कितना चाहती है ।

पर रामय्या ने अपने लड़के को चपत लगाकर, अपनी ही मर्यादा को भंग कर लिया था । उसने मल्ली के सामने अपने ही लड़के को नीचा दिखाया था । मल्ली जब धीमे-धीमे जाने लगी, तो वह उसे रोक भी न सका ।

यह सब लक्ष्मी छज्जे से देख रही थी । जाती हुई मल्ली को उसने "मल्ली" कहकर पुकारा । मल्ली खड़ी हो गयी और लक्ष्मी उसकी ओर दौड़ी-दौड़ी आयी । उसने गले लगा लिया ।

"आ मल्ली ।" लक्ष्मी ने उसके कंधे पर हाथ रखा । उसने पिता की और भाई की ओर देखा और उसको अपने साथ अंदर ले गयी । रामय्या को उसकी नजर से ऐसा लगा जैसे वह कह रही हो । "ये सब आदमी ऐसे ही होते हैं ।"

मल्ली और लक्ष्मी बहुत देर तक छज्जे पर बैठी रहीं । दोनों अपने-अपने विचारों में डूबी हुई थीं । मन की बातें कोई भी नहीं बता रही थी । मल्ली चाहती थी कि लक्ष्मी से रंगा की हत्या के बारे में बात करे । लक्ष्मी भी चाहती थी कि उसका उसके घर में जो अपमान हुआ,

उसके लिए क्षमा मांगे। आखिर लक्ष्मी ने कहा, "तुम जानती हो न, मेरे लिए एक और संबंध तय कर दिया गया है।"

"भाई मुझसे शादी कर लेना चाहता है।" मल्ली ने कहा।

"तो अच्छा ही है।" लक्ष्मी ने कहा। उसे तुरंत याद आया कि राजू पर खून का मुकदमा था और वह फरार था। वह स्तब्ध-सी रह गयी, अपने लिए नहीं, बल्कि मल्ली के लिए।

"मैंने इन गड़बड़ियों के आने से पहले ही कह दिया कि शादी मत करो।" मल्ली ने कहा। लक्ष्मी का दिल धड़-धड़ करने लगा। उसके मन में, कहीं किसी तह में, यह बात दबी हुई थी कि राजू उससे दूर न था। लक्ष्मी जानती थी कि मल्ली राजू को कितना चाहती है। अगर मल्ली ने राजू से विवाह करने से इंकार कर दिया है, तो लक्ष्मी के लिए ही। यह लक्ष्मी जानती थी। लक्ष्मी की आंखों में तरी आ गई। मल्ली अपनी सहेलियों के लिए बिना दिखावे के, बहुत कुछ त्याग कर सकती थी। परंतु उसका त्याग अब निरर्थक था। उसके और राजू के बीच में बड़ी खायी आ गयी थी। उसके लिए दूसरा संबंध तय कर दिया गया था। रंगा की हत्या, उन दोनों के बीच पहाड़ सी थी।

"बहिन तुम से एक बात करनी है।" मल्ली ने कहा। पर लक्ष्मी चुप रही। "रात दस बजे, माता के मंदिर के पास आ।"

"रात को ? माता के मंदिर के पास ?"

"हां बहन, तुम्हारी जान के लिए मैं अपनी जान दे दूंगी। कुछ भी हो, आ जाना।"

मल्ली, कबूतर की तरह नीचे चली गयी। लक्ष्मी उसके पीछे नहीं गयी। सीढ़ियों वाले कमरे के दरवाजे के पास खड़ी हो गयी। मल्ली भी तुरंत बाहर नहीं चली गयी। दक्षिण की ओर बड़े चौपाल की ओर गयी। अंदर सूरालु लेटी हुई थी। वह इस तरह कमजोर थी, मानो सौ दिनों से कुछ खाया पिया ही न हो। मल्ली जाकर उसकी बगल में बैठ गयी। मल्ली को देखते ही, सिरहाने बैठी बहू का चेहरा सकुचा गया।

"चाची, तुम कितनी कमजोर हो गयी हो।" मल्ली ने कहा।

उस समय सूरालु, न मालूम क्यों यह न सोच सकी कि मल्ली उन दुश्मनों के घर की थी, जिन्होंने रंगा की हत्या करवा दी थी। मल्ली राजू को बहुत चाहती थी और राजू ने रंगा की हत्या की थी। मल्ली की आवाज में, कितनी दया और कितना ही प्रेम झलक रहा था। मल्ली के लिए कोई शत्रु नहीं था, इसलिए वह किसी को शत्रु नहीं मान सकती थी।

"वह दस रोज का लड़का, उसे मैंने अपने बिस्तरे पर लिटाकर बड़ा किया।" सूरालु ने कहा और वह फूट-सी पड़ी। मल्ली ने उसके कांपते शरीर को सहलाया। लक्ष्मी, धीमे से सीढ़ियां उतरकर आ गयी। वह अभी अपनी मां को इस तरह सहला नहीं पायी थी। उसके मन में भी कहीं दबा गुस्सा था, राजू पर, पिता पर, रंगा पर और गांव पर। मल्ली के मन में कोई भी ऐसी बात न थी। उसका कितना मीठा मन था, वह मरे हुए रंगा को और मारने वाले राजू को, एक साथ दया की दृष्टि से देख सकती थी। राजू चाहे कुछ भी करे, पर उस पर आंच नहीं आने देगी। उसके शत्रुओं के बारे में, उसके मन में कहीं भी कोई द्वेष नहीं है। सूरालु को धीमे

धीमे सहलाते हुए, मल्ली ने कहा, "चाची, लगता है, अब माता की कृपा गांव से हट गयी है। जाने कितने और मरेंगे और जाने कितने नाले की बाढ़ में जायेंगे।"

लंबी आह भरती मल्ली उठी। लक्ष्मी माता के पास आकर बैठ गयी उसी जगह, जहां से मल्ली उठी थी। जहां मल्ली ने सहलाया था, उसी जगह वह भी मां को सहलाने लगी। उसे कुछ ऐसी राहत मिली जो उससे पहले कभी न मिली थी। मन हल्का हो गया।

रामय्या कार में शहर के लिए रवाना हुआ। राजू के ट्रैक्टर के जला दिये जाने वाले मुकद्दमे में, राजू के वकील ने उसे गवाह के तौर पर बुलवाया था। धर्मराजू और वेंकन्ना यह कहकर कि उनको काम था, उसके साथ नहीं गये।

दिन-दहाड़े मंगी के घर, धर्मराजू और वेंकन्ना पहली बार मिल रहे थे। हालांकि सब जानते थे, फिर भी वे खुले तौर पर वहां नहीं आते थे। चौकड़ी हमेशा रात को ही लगा करती थी। रात को, चाहे कोई भी मंगी के घर चला जाये, किसी को कोई आपत्ति नहीं थी। अगर कोई दिन में जाता तो लोग नाक पर अंगुली रख लेते। गांव के नैतिक नियमों में यह पहला परंपरागत नियम था।

इस तरह मिलने के दो मुख्य कारण थे।

मीर ने आकर बताया था कि पद्दालु और पुल्ली बहुत शोर कर रहे थे, अगर रात को उनका लड़का उनको न दिखाया गया, तो वे चुप नहीं होंगे। अगर आसपास के लोग जमा हो गये, तो उनको वहां रोकना भी असंभव होगा और बाकी गुंडे भी वहां तभी तक पहरा देंगे, जब तक पद्दालु चुप रहेगा, जहां देखा कि पुलिस के आने की आशंका है, वे भी खिसक जायेंगे। यही नहीं धर्मराजू ने उनको उतना पैसा नहीं दिया था, जितना कि तय हुआ था। वैसे भी, वह मनहूस काम कर रहे थे। अगर वक्त पर रुपया न मिला, तो क्या भरोसा कि बाद में मिलेगा ? और यह ऐसी बात है, जो दूसरों से कही भी नहीं जा सकती।

धर्मराजू घबरा गया। यह सच था कि इस पहरे के लिए उसने जो पैसा वेंकन्ना से ऐंठा था, उसका आधा उसने अपनी ही जेब में डाल लिया था। फिर भी, जो कुछ पैसा गुंडों को देना था, उसी हिसाब से, लिंगराजू के हाथ भिजवा दिया था। अगर वेंकन्ना के सामने यह बात चल पड़ी कि गुंडों को कितना मिला और कितने पर उनको तय किया गया था, तो उसकी चोरी भी सब को मालूम हो जायेगी। लिंगराजू और मीर को एक जगह बुलाकर, ऐसे वक्त जब कि वेंकन्ना कहीं आसपास न हो, फुसलाकर मना लेना अच्छा है। इसलिए खबर मिलते ही, वह वहां जाने के लिए तैयार हो रहा था कि वेंकन्ना वहां आया। जैसे मालूम हुआ कि पद्दालु शोर कर रहा था, वह वहां चला आया।

"तुम क्यों यहां हो और वह भी इस वक्त ?" धर्मराजू ने कहा।

"अगर उसके शोर के कारण कहीं उसकी खबर बाहर लग गयी, तो पिता जी मेरी चमड़ी उधेड़कर रख देंगे। वे आज शहर गये हैं।" वेंकन्ना ने कहा।

वेंकन्ना को यह नहीं पता लगना चाहिए कि उसने, गुंडों को दिये जाने वाले रुपयों में से अपना कमीशन वसूल लिया था। यह भी नहीं कि वेंकन्ना न जानता हो कि वह अच्छी नीयत

का आदमी न था। पर जब तक उसे यह न मालूम हो कि इस बात में उसका अपना स्वार्थ कोई न था,तो वह पैसा न देगा। इसलिए धर्मराजू ने मन ही मन माता को लाख मनाया कि मीर यह बात मंगी के घर न उठाये।

मंगी के कानों की बालियां धर्मराजू को ऐसी लगीं,जैसे वे उसके मुंह पर थप्पड़ मार रही हों। मंगी के कानों में बढ़िया,सफेद पत्थरों वाली बालियां लटक रही थीं। मंगी उनके लिए बहुत दिनों से उसे तंग कर रही थी,वह भी कल कल करके टालता आया था। वह यह तो नहीं कहता था कि नहीं दूंगा,पर देता नहीं था। यह मंगी भी जानती थी,इसलिए उसने एक और तरीके से अपनी इच्छा पूरी कर ली थी। उसने लिंगराजू को उकसाया,पास बुलाया,ललचाया, पुचकारा,दुलारा,उसे दूर ही रखा, आखिर शर्त रखी कि जब तक वह सोने की सफेद पत्थर वाली बालियां नहीं ला देगा,वह दूर ही रहेगा। इसलिए धर्मराजू को इसका पता भी लग जाये, तो दोष उसको नहीं देना चाहिए। अतः ज्यों ही,वेंकन्ना ने धर्मराजू के कमरे में पैर रखा,उसने कहा,"देखिये,हमारे मुंशी साहब ने दिये हैं।" कहते हुए मंगी ने उन बालियों को वेंकन्ना को दिखाया,धर्मराजू को काटो तो खून नहीं। पिता की नजर जब उस पर पड़ी,तो लिंगराजू भी चुपचाप खिसक गया। मंगी ने देखा कि धर्मराजू के मुंह पर शिकनें पड़ रही थीं। उसे बालियां दिखाते हुए उसने कहा,"अरे,देख क्या रहे हैं ? क्या अच्छी नहीं हैं ? मालूम नहीं,भला मैं कैसे जानूं कि अच्छा माल है या खराब। फिर भी इनको खरीदने के लिए उस बावले लड़के को क्यों भेजा था ?" मंगी ने कहानी-सी गढ़ी।

धर्मराजू समझ गया कि जो पैसे मीर को दिये जाने के लिए लिंगराजू को दिये गये थे, उनमें से आधे क्या हुए थे।

जब से रामी के हाथों मार खायी थी,मंगी उसे हर तरह से चिढ़ा रही थी और धर्मराजू ने उसे खुश करने के लिए कितनी ही बातें कही थीं। और हालत तब ऐसी थी कि मंगी की अपेक्षा उसका घर उसके लिए अधिक मुख्य था। रंगा की हत्या के बाद,मंगी के घर से अच्छा कार्यालय उसे कहीं और नहीं दिखायी दिया था। मुख्य निर्णयों के बारे में शत्रुओं को तो मालूम होना ही नहीं चाहिए था। रामय्या को भी उनका पता नहीं लगना चाहिए था। इसलिए उसने मंगी से कई वायदे किये थे,कितने ही वचन दिये थे। उसने सब देवताओं के नाम पर कसमें खायीं, पर अपने लड़के के नाम पर नहीं। धर्मराजू समझ गया कि मंगी ने उसकी परिस्थिति का अच्छा फायदा उठाया है। अगर यह बात वेंकन्ना को मालूम हो गयी,तो उस पर भी आफत आ सकती थी,सब कुछ उल्टा हो जाता,इसलिए गुंडों को,जो पैसा मिलना था,उसने मीर के हाथ में रख दिया।

वेंकन्ना,धर्मराजू और मीर बहुत देर तक सलाह-मशविरा करते रहे कि क्या किया जाना चाहिए। राजू जब तक पकड़ा नहीं जाता और उस पर मुकदमा नहीं चलाया जाता,तब तक पद्दालु को नहीं छोड़ना चाहिए। चाहे वह अपने लड़के को कितना ही चाहता हो,चाहे पुल्ली कितना भी शोर करे,उसके मन में कभी न कभी,मालिक का अभिमान उभरेगा और उसकी मदद करने की कोशिश करेगा। अगर उस समय,उसने पुलिस के सामने सच कह दिया,तो

राजू निर्दोष साबित हो जायेगा। इतना ही नहीं, अगर पद्दालु की बात पर रामय्या ने यकीन कर लिया – ऐसा भी नहीं कि वे यकीन ही न करें — उस हालत में तो धर्मराजू को गांव छोड़कर कहीं चला जाना होगा। इसलिए पद्दालु को अपने हाथ में रखना ही होगा और वह तब तक नहीं मानेगा जब तक उसे विश्वास न हो जाये कि उसका लड़का जिंदा है।

"अगर पद्दालु को वहीं मार कर गाड़ दिया जाये तो ?" मीर ने कहा।

मीर के लिए एक की जान लेना बड़ी मामूली बात थी। अभी तक उसने किसी को नहीं मारा था, पर यह उसकी गलती न थी। उसने कई लोगों को इतनी बुरी तरह पीटा था कि अगर वे जी रहे थे, तो इसका मतलब यह था कि उनकी उम्र ही अधिक थी। पर उसे जेल जाना बिलकुल पसंद न था। इसलिए जो कुछ वह करता, अब तक चुपचाप ही करता आया था। एक दो बार वह जेल हो आया था। यह उसकी गलती न थी। उसके आदमियों ने डर के कारण उसका भेद पुलिस के सामने खोल दिया था। जेल से छूटते ही उसने उनसे बदला लेना चाहा, पर वे सब जाने कहां गायब हो गये थे, उनका पता तक किसी को न मालूम था। इसलिए उसने निर्णय किया कि साथी रखकर काम करना ही खतरनाक था। अत: खतरनाक काम, मजदूरी पर किया करता था। अगर उसने पद्दालु को मार दिया तो उसको पैसा मिलेगा, तब कोई और काम देखा जा सकता था। न मालूम फरार राजू कब मिले और कब तक उसके खिलाफ मुकदमा चलता रहे, इस बारे में कुछ भी निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता था। पर वेंकन्ना और धर्मराजू ने उसका सुझाव नहीं माना। एक हत्या हुए अभी एक सप्ताह भी न हुआ था, अगर इस बीच एक और हत्या हो गयी तो ख्वाहमख्वाह हो हल्ला मचेगा। यही नहीं, पुल्ली ने जाकर पहले ही पद्दालु को देख लिया था। अगर अब पद्दालु नहीं दिखायी दिया तो वह और भी हल्ला करेगी। यह सब सोच-साचकर, उन्होंने निश्चय किया कि चुपचाप लड़के को दिखा देना ही बेहतर है।

लक्ष्मी काफी देर तक छज्जे में बैठी रही। अंधेरे में चमेली की बेल कहीं चमक रही थी। मल्ली ने उसे मंदिर के पास बुलाया है, जरूर बुलाया है। मल्ली के बुलावे का जरूर राजू से कोई न कोई संबंध है, लक्ष्मी के मन में कहीं यह संदेह था। राजू का जब उसे ख्याल आता तो बाहर का अंधकार मानो उसके अंदर जा घुसता। उसके मन में झींगुर से बोलने लगते। नहीं, राजू का इससे कोई संबंध नहीं है। मल्ली सब कुछ जानती है, क्या वह राजू से मिलने के लिए बुलायेगी ? राजू अगर दीख ही गया तो क्या मैं जीवित रह सकूंगी ? क्या मल्ली जानती है कि राजू कहां है ? रात के समय, जब सारा गांव सो रहा होगा, कैसे घर छोड़कर जा सकती है ? जाने की जरूरत नहीं है, जाना नहीं चाहिए। पर मल्ली ने बुलाया है, अवश्य आने के लिए कहा है। जाये बगैर कैसे रहा जाये ? जाना है, जरूर जाना है। कुछ भी हो, जाना है।

झींगुरो की आवाज बढ़ रही थी। चावल की मील चल रही थी, उसकी हल्की आवाज आ रही थी। पर कहीं कुछ हल्की रोशनी सी हुई; किसी के जाने की आवाज हुई। उसने किसी को जाते देखा, फिर वही अंधेरा। लक्ष्मी छज्जे में खड़ी हो गयी। छोटी गली के साथ चारदीवारी थी, उससे सटी चौपाल। उसके बाद छोटी गली थी। उस समय वहां कोई जल्दी-जल्दी चला

जा रहा था, फिर वह अंधेरे में गायब हो गया। उसे गली में वह एक क्षण ही दिखायी दिया था, पर लक्ष्मी चाल-ढाल से जान सकती थी कि वह उसका भाई वेंकन्ना ही था। यद्यपि वह ठीक-ठीक नहीं दिखायी दिया था, पर वह सहज ही अनुमान कर सकती थी। लक्ष्मी का माथा ठनका। इस समय भाई कहां जा रहा था। मल्ली के बुलावे और भाई के जाने में जरूर कोई संबंध है। भाई के जाने का राजू से भी संबंध है। राजू पर कोई आफत आने वाली है, मंदिर के पास राजू का क्या काम है? मल्ली ने उसे मंदिर के पास क्यों बुलाया है? मल्ली को कैसे मालूम कि राजू पर कोई आफत आने वाली है? मल्ली को कैसे मालूम कि उसका भाई रात के समय, उस तरह घर छोड़कर जा रहा है? राजू, राजू, राजू — बस वही बाहर-अंदर था। सब जगह उसी का नाम गूंज रहा था। क्या राजू मंदिर के पास है? क्या भाई मंदिर के पास गया है? उस दिन-रात, राजू और रंगा भिड़ पड़े थे, रंगा मर गया था। अगर भाई व राजू जूझ पड़े तो?

लक्ष्मी जल्दी-जल्दी सीढ़ियों पर से उतरी। उसकी हर पैड़ी वह जानती थी, इसलिए जल्दी चलने पर भी उसके पैर लड़खड़ाये नहीं। वह बाहर चबूतरे पर आकर खड़ी हुई, पहरा देने वाला पोतगाडु वहां नहीं था। पिता जी शहर गये हुए थे। उनकी खाट खाली थी। उसने जाते-जाते दरवाजे भी बंद न किये। छोटी गली की चौपाल से वह चली गयी। उसने गली मैं पैर रखा ही था कि अंधेरे ने उसे घोंट-सा दिया। वह एक क्षण के लिए खड़ी हो गयी। किसी अज्ञात भय ने उसे उकसाया। उसे डर था कि वहां कहीं कुछ और आफत न आ जाये। अगर राजू दिखायी दिया, तो वह जिंदा न रह सकेगी, इस भय ने उसे और परेशान कर दिया था। वह उसे नहीं देख सकती थी, उससे बात नहीं कर सकती थी, वह उसे बुरा-भला भी नहीं कह सकती थी। मन कह रहा था कि पीछे हट जाओ, पर पैर आगे बढ़े जा रहे थे।

मंदिर के पीछे, जहां मेला लगा करता था, एक बड़ी इमली का पेड़ था और उस इमली के पास, घने अंधेरे में, गंगप्पा और रामी बैठे हुए थे। वे दोनों मंदिर पर पहरा दे रहे थे। गांव से जो गली आती थी, उस पर गंगप्पा पहरा दे रहा था और बाहर से जो सड़क आती थी, वहां रामी पहरा दे रही थी। दोनों की पीठ, आपस में छू रही थी। उस अंधेरे में, जाने कहां से गंगप्पा में हिम्मत आ गयी थी, रामी की पीठ से पीठ लगाकर बैठने की! रामी को, उसकी इस हिम्मत पर हंसी आ रही थी। वह कुछ आगे झुकी और गंगप्पा चूंकि उसकी पीठ पर बल दिये हुए था, उसकी पीठ पर जा गिरा। रामी चुपचाप हंसी। गंगप्पा को उसकी हंसी बड़ी प्यारी लगी। वह संभल कर बैठ गया और रामी को उसने अपनी गोद में ले लिया।

"अरे छोटे मालिक की इतनी हिम्मत?" रामी ने गोदी में बैठे हुए कहा। गंगप्पा का दिल, गले में धड़-धड़ करने लगा। वह गरमा गया, उस सरदी में भी उसके पसीने छूटने लगे।

"कोई आ रहा है।" रामी ने झट उठते हुए, धीमे से कहा।

गंगप्पा का जोश ठंडा पड़ गया। उसने तालाब के किनारे की ओर देखा। कोई गांव की ओर से, लड़खड़ाता चला आ रहा था। गंगप्पा ने उठने की कोशिश की, पर रामी ने उसे पकड़ लिया।

"लक्ष्मी मालकिन है ।" रामी ने धीमे से कहा । गंगप्पा जरा संभला ।

मंदिर के प्रांगण का दरवाजा खुला हुआ था, लक्ष्मी उसके अंदर दौड़ी । जैसे कोई उसका पीछा कर रहा हो । मल्ली ने उसको गले लगा लिया । लक्ष्मी के मन में तुरंत एक अपूर्व शांति आ गयी । उसने इधर उधर देखा, गनेर के फूलों में, भौंरे किसी जरूरी काम में उलझे से लगते थे ।

"कितना अच्छा है यहां ?" लक्ष्मी ने कहा ।

मल्ली ने उसका आलिंगन कर लिया । मंदिर का दरवाजा बंद कर दिया और चटखनी लगा दी ।

"आओ ।" उसने धीमे से कहा । एक-दूसरे का हाथ पकड़े हुए, वे मंदिर के अंदर गये ।

माता की मूर्ति के सामने, दिये की हल्की रोशनी ही थी । माता ने निर्लिप्त हो उनकी ओर देखा । पास में बैठा पुजारी खड़ा हुआ, उसने मंदिर के किवाड़ बंद कर दिये ।

राजू, माता की मूर्ति के पीछे से आया । लक्ष्मी चकित रह गयी, वह उसके मुंह पर से नजर न हटा सकी । राजू भी उसकी ओर देखता खड़ा रहा । दोनों ने इस तरह देखा, जैसे वे युग-युगों से इसी तरह जमा गये हों ।

"लक्ष्मी ।" राजू ने कहा । लक्ष्मी ने नजर एक ओर फेर ली । वह उसकी ओर देख न सकी । राजू के चेहरे पर, कितने ही दुःख, पीड़ायें, चिंतायें दिखने लगीं । मल्ली लक्ष्मी की पीठ सहलाती खड़ी हो गयी ।

"रंगा को मैंने नहीं मारा है । वह कैसे मरा, यह भी मैं नहीं जानता । जब मैंने झोंपड़े में जाकर देखा, तो वह वहां मरा हुआ पड़ा था ।" राजू ने कहा ।

लक्ष्मी ने राजू की ओर देखा । लक्ष्मी जानती थी कि राजू कभी झूठ नहीं बोलेगा । लक्ष्मी की अंतरात्मा कहती थी कि राजू ने रंगा को नहीं मारा है । लक्ष्मी को देख, राजू चिंतित हुआ ।

"लक्ष्मी ।" उसने इस तरह कहा जैसे वह उसे मना रहा हो ।

दोनों को ही पता न था कि वे कैसे एक दूसरे के आलिंगन में आ गये थे । वे दोनों यह भी भूल गये थे कि पास ही पुजारी और मल्ली खड़े थे । लक्ष्मी ने राजू की छाती पर, जाने कितने घड़े आंसू बहाये, इतने दिनों से जिस दुख को वह जब्त किये हुए थी, वह बाढ़ की तरह अब फूट पड़ा था । मन की पीड़ा को इतने दिनों बाद बाहर करने का मौका मिला । राजू उसे मनाता, इधर-उधर की बातें कर रहा था । इमली के पेड़ के पीछे उसका मुंह, सरकंडों के पास, ताल के किनारे, गुप्त रूप से किसी के बैठने की जगह, नया मकान, खेतों के बीच बनायी गयी कांटों की दीवार और जाने कितनी ही बातें, वह बेमतलब कर रहा था । उन बातों का कोई अर्थ न था । उनमें बस एक जोश था ।

जब दोनों आलिंगन में थे, तो सहसा उनको सामने की माता स्मरण हो आयी । दोनों शर्माये, ऐसा लगा जैसे कोई गलती कर बैठे हो । उन्होंने मन ही मन क्षमा याचना की, तब उनको माता की दृष्टि में करुणा दिखायी दी ।

राजू ने लक्ष्मी को पत्थर के फर्श पर बिठा दिया । जो कुछ हुआ था, उसने उसे विस्तार

के साथ बताया और वह क्या करने जा रहा था, वह भी बताया। लक्ष्मी को सारी परिस्थिति समझ में आ गयी। अगर वह रात ठीक तरह खत्म न हुई, तो कितनों की जान खतरे में थी, पद्दालु, पुल्ली, बुडतडु, राजू और उसके भाई — सभी की जान को खतरा था।

लक्ष्मी ने माता के समक्ष साष्टांग किया। "माता सब की रक्षा करो।" उसने मन में कई बार कहा। वह धीमे से उठी।

"अब मुझे जाना है।" राजू ने कहा।

"जरा ठहरो तो," लक्ष्मी ने पुजारी के दोनों हाथ पकड़ लिये।

"हम दोनों की माता के सामने शादी कर दो।" लक्ष्मी ने कहा।

पुजारी चकित रह गया। उसके मुख से निकला, "बेटी" ! मल्ली ने भारी मन से माता की ओर देखा, उसके दिल का कोई तार टूट गया था। और वह जानती थी कि वह टूट गया था। वह यह भी जानती थी कि वह एक दिन टूटेगा। इस पीड़ा में वह एक प्रकार की शांति भी मिली।

"अभी जल्दी क्या है, मैं वापस तो आ जाऊंगा।" राजू ने कहा।

"नहीं, नहीं यदि यह क्षण गुजर गया, तो न मालूम क्या-क्या हो।" लक्ष्मी ने कहा।

पुजारी के लिए यह बड़ी समस्या थी। गांव के दोनों चौधरी, उसे जिंदा ही गाड़ देंगे, अगर उनको इस बारे में मालूम हो गया। लक्ष्मी के लिए अलग से एक और संबंध तय कर दिया गया था। गांव में वैसे ही बड़ी सरगर्मी थी। खतरा केवल उसके लिए ही नहीं, राजू और लक्ष्मी के लिए भी था।

"बाबू, इसमें सोचने की क्या बात है, जैसे बहन कह रही है वैसा कर दो।" मल्ली ने कहा।

पुजारी ने राजू की ओर देखा। राजू को इस प्रकार की जल्दबाजी में की गयी शादी पसंद न थी।

"मेरी बात मानो लक्ष्मी, सवेरा होने तक सब ठीक-ठाक हो जायेगा। अगर माता की कृपा रही, तो सब अच्छा हो जायेगा। इस बीच, इस जल्दबाजी की क्या जरूरत है ?" राजू ने कहा।

"नहीं मालूम कि फिर ऐसा अवसर आये या नहीं, मैं चाहती हूं कि यह अभी ही हो जाये।" लक्ष्मी ने कहा।

"क्या तुम्हारी अक्ल मारी गयी है ?" राजू ने कहा।

"अगर अभी न हुई, तो मुझे ऐसा लगता है कि फिर कभी न हो पायेगी।"

"तुम जानती हो, हम किस तरह के काम पर जा रहे हैं। अगर कोई मुसीबत आ पड़ी तो हममें से कितने वापस आयेंगे, नहीं मालूम। मेरी बात सुनो न।"

"इसीलिए ही तो कहती हूं कि अभी ही हो जाना चाहिए। अगर तुम पर कोई आफत आयी, तो उसमें मेरा भी हिस्सा होना चाहिए। अगर हम माता के सामने एक हो गये, तब मुझे भी तुम्हारे साथ मरने का और जीने का अधिकार मिल जायेगा। बाबू, अगर विवाह तुम्हारे साथ हो गया तो मुझे बड़ी खुशी होगी।" लक्ष्मी ने कहा।

राजू चकरा सा गया। वह कोई भी आपत्ति न उठा पाया। पुजारी ने सोचा कि 'अब इसका बोध माता ही कराये कि क्या करना चाहिए और उसकी ओर देखा। उसकी दृष्टि में क्या था, वह न समझ पाया। उसने एक क्षण के लिए आंखें बंद कीं, फिर वह एक निर्णय पर आ गया।

"मंगलसूत्र कहां है ?" उसने पूछा।

"सूत्र, हल्दी की डली काफी है, अभी बनाये देती हूं।" मल्ली ने कहा। कन्या ही, उस विवाह की सर्वेसर्वा थी। पुजारी विवाह के मंत्र भी न जानता था, चूंकि यह सब माता की मूर्ति के समक्ष हो रहा था, इसलिए सब कमियां माफ थीं।

राजू ने लक्ष्मी के गले में हल्दी की डली, एक सूत्र में बांधी। पुजारी ने माता की पूजा की। माता के समक्ष नव दम्पत्ति ने नमन किया। पुजारी ने, माता की मूर्ति के चरणों के पास से फूल और अक्षत लेकर, उन पर डाले। उनके पीछे खड़ी-खड़ी मल्ली दोनों की ओर देख रही थी। पुजारी ने उसकी ओर देखा, उसकी आंखें नम थीं। उसकी नजर से लगता था जैसे बहुत दूर से उस नव दम्पत्ति को वह देख रही हो। पुजारी जानता था कि मल्ली राजू को बहुत चाहती थी। जब राजू उससे शादी करने के लिए मान गया तब उसने ही शादी करने से इंकार कर दिया था। अब उसकी आंखों में जो नमी थी, वह पीड़ा थी या संतोष या शांति, यह पुजारी नहीं जान पाता था। उसे एक क्षण ऐसा लगा जैसे वे आंखें माता की ही आंखें हों। पुजारी ने माता की ओर देखकर नमस्कार किया।

नव दम्पत्ति ने पुजारी के चरण छुए।

"तुम दोनों सदा सुखी और संतुष्ट रहो।" पुजारी ने उन्हें आशीर्वाद दिया।

"मल्ली।" कहती, लक्ष्मी ने स्नेह से उसको गले लगा लिया।

अपने को धीमे से छुड़ाकर, मल्ली ने राजू से कहा, "अब वक्त हो गया है।"

"मैं भी तुम्हारे साथ आऊंगी," लक्ष्मी ने कहा।

"तुम नहीं, तुम आओगी तो सारा काम बिगड़ जायेगा। हो सकता है कि तुम्हारा भाई भी आये। अगर तुम मेरी बगल में रही, तो शायद मेरी हिम्मत ही जवाब दे जाये। जाने क्या आफत आये, तुम घर चली जाओ।" राजू ने कहा।

"आज रात, मैं घर नहीं जा पाऊंगी। जब तक तुम वापस नहीं आ जाते, मैं यहीं रहूंगी।" लक्ष्मी ने कहा।

उन परिस्थितियों में, लक्ष्मी को यह विचार ही सबसे अच्छा लगा।

राजू और मल्ली अंधेरे में, इमली के पेड़ के पास आये। उन्हें देखते ही, गंगप्पा और रामी उठे और धीरे-धीरे निकल पड़े।

लक्ष्मी को मंदिर के गर्भ गृह में सो जाने को कहकर, पुजारी बाहर आ गया और उसने मंदिर के किवाड़ बंद कर दिये। वह मंडप में जाकर सो गया।

"अगर इस काम के लिए कार होती, तो क्या अच्छा रहता।" धर्मराजू ने कहा।

"पिता जी ले गये हैं न ?" वेंकन्ना ने कहा।

बैल गाड़ी के आगे पीछे, परदे लगे हुए थे । चारों ओर आम के बाग थे । वह जगह गांव से कोई पांच छः मील दूर थी । युद्ध के जमाने में, वहां सिपाहियों की एक छोटी सी टुकड़ी रहती थी । आधे मील के फासले पर ट्रंक रोड थी । बागों में, सिपाहियों के लिए बनाये गये दस पंद्रह शेड थे । तब से वे शेड वहीं थे । गर्मियों के दिनों में, कभी कभी, उनमें से कुछ में आमों को पकने के लिए छोड़ दिया जाता था । वे शेड तो ठीक थे, उनकी दीवारें थीं और छत भी । कभी-कभी उनकी मरम्मत भी कर दी जाती थी । बाकी सब खंडहर से थे । उन्हें उखाड़ फेंकना भी, फिजूल खर्च था, इसलिए यह काम भी समय को सौंप दिया गया था । सिवाय आम के मौसम के वहां कोई हलचल नहीं रहती थी । उन्हीं में से एक शेड में बुडतडु को रखा गया था ।

मीर और दो आदमी, लड़के के मुख में कपड़े ठूंसकर, उसे उठा लाये और गाड़ी में बिठा दिया । धर्मराजू, मीर और दो आदमी भी, गाड़ी में सवार हो गये । पेंटय्या ने पीछे परदा लगा दिया। गाड़ी चलने ही वाली थी कि पोतगाडु भागता-भागता आया । वेंकन्ना, जो गाड़ी में आगे बैठा था, नीचे कूदा । वह झट यह न जान सका था कि कौन आया था ।

"मालिक, मंदिर में किसी की आवाज सुनायी पड़ रही है ।" पोतगाडु ने कहा ।

"मंदिर में ?" वेंकन्ना ने पूछा ।

"जी, माता के मंदिर में । सब किवाड़ बंद हैं । मंदिर के पीछे इमली के पेड़ के पास, गंगप्पा और रामी बैठे हुए हैं । अंधेरे में उन्हें पहले पहचान न सका, पर जब उठकर वे तालाब की ओर चले, तब मैं उन्हें पहचान गया ।"

"वेंकन्ना, कहीं वह राजू मंदिर में ही तो नहीं है ?" धर्मराजू ने परदे के पीछे से कहा ।

"इंस्पेक्टर ने वहां देखा तो था ।" वेंकन्ना ने कहा ।

"फिर भी, तुम्हारा देख लेना अच्छा है । अरे पोतुगाडु, दस पांच आदमी जमा कर लाओ, वह बड़ा खूंखार आदमी है, यों ही काबू में नहीं आयेगा, खबरदार ।"

"बुडतडु को तुम कहां ले जाओगे ।" वेंकन्ना ने पूछा ।

"इस काम के लिए कितने आदमियों की जरूरत है ? मीर, वेंकटेश और पेंटय्या हैं ही और वहां पहुंचने पर, हमारे पहरे वाले आदमी हैं ही । जल्दी जाओ ।" धर्मराजू ने कहा । पेंटय्या और वेंकटेश गाड़ी हांकने के लिए आगे जा बैठे । गाड़ी चल पड़ी । वेंकन्ना और पोतगाडु गांव की ओर चले ।

गाड़ी को कुछ दूरी पर देखते ही पुल्ली "मेरे बेटे, मेरे लाड़ले" कहती हुई भागी । यह सब नाटक का अंग ही था । तीन गुंडों ने उसका पीछा किया और उसे पकड़ लिया । वह अपने को छुड़ाने के लिए जी-तोड़ कोशिश करने लगी । बाकी दो, गाड़ी के पास पहुंचे और उसका रास्ता रोक कर खड़े हो गये । यही मौका देख, राजू अंधेरे में, सामने के दरवाजे के पास आया और पत्थर से उसका ताला तोड़ दिया । धीमे से किवाड़ खोलकर उसने कहा ।

"पद्दालु ।"

"मालिक ?" पद्दालु ने कहा ।

"उश !" राजू ने चुप रहने का इशारा किया।

शेड में क्या आहट हुई थी, यह देखने गाड़ी के पास खड़े दो गुंडे दौड़े-दौड़े आये। शेड का दरवाजा खुला था। आश्चर्य से उन्होंने अंदर देखा। झट दोनों के सिरों पर, दो लोहे की छड़ें लगीं। वे नीचे गिर पड़े। राजू ने उन्हें अंदर घसीटकर, बाहर दरवाजे पर चटखनी लगा दी। शेड में क्या हो रहा था, गाड़ी के पास खड़े लोगों को मालूम नहीं हो सका। तीन गुंडे पुल्ली को खींचते, शेड की ओर आये। इतने में, पेंटय्या ने उतर कर, गाड़ी के पीछे का परदा हटाया। मीर उतरा। गंगप्पा ने, जो पास की झाड़ियों के पीछे था, उसको धर दबोचा। तीनों ही पास के गड्ढे में जा लुढ़के। तब धर्मराजू को मालूम हुआ कि मामला कहीं गड़बड़ा गया था। लड़के को गाड़ी में छोड़ कर वह नीचे कूदा। शेड के पास मुठभेड़ हो रही थी। वह बचने के लिए एक झुरमुट के पीछे जा छिपा। रामी ने मिर्चों की पोटली खोली और उसकी आंखों में उड़ेल दी। धर्मराजू नीचे गिर गया और छटपटाने लगा। मीर और पेंटय्या को बहुत मारने-पीटने पर भी गंगप्पा अपनी पकड़ नहीं छोड़ रहा था। रामी भागी-भागी आयी और उसने लाल मिर्च उन दोनों की आंखों में भी झोंक दीं। उसमें से थोड़ी मिर्चें गंगप्पा की नाक में गयी, वह जोर से छींका। छींकने के कारण उसकी पकड़ ढीली पड़ गयी और मीर, पेंटय्या यह मौका देख, आंखों पर हाथ रखकर वहां से भाग निकले। पर उनको यह मालूम न था कि वे किधर भाग रहे हैं। पेंटय्या उस भाग-दौड़ में गाड़ी के पहिये से जा टकराया और नीचे गिर गया, फिर वह उठ न पाया। मीर, लड़खड़ाकर, सड़क के पास गड्ढे में जा गिरा। गंगप्पा छींकता-छींकता, उठा। मल्ली गाड़ी में गयी और बुडतडु की रस्सियां खोल दीं। मुख में ठूंसे हुए कपड़े निकाल दिये। इस बीच पुल्ली और रामी भी आयीं। बुडतडु को जिंदा पाकर वह उछल पड़ीं।

"आ बेटा !" विलाप और संतोष का यह अजीब मिलन था। पुल्ली ने उसे गोद में उठा लिया।

इसके बाद, लड़ाई काफी देर नहीं चली। बाकी गुंडे मैदान छोड़कर भाग खड़े हुए। गंगप्पा गाड़ी हांकने के लिए आगे बैठा। रामी, मल्ली, पुल्ली और बुडतडु, गाड़ी में सवार हुए। गाड़ी चल पड़ी।

राजू ने पद्दालु से कहा, "पद्दालु, तुम सीधे कस्बे के पुलिस थाने में चले जाओ और जो कुछ हुआ है, उसे इंसपेक्टर को बता दो। तुम्हें डरने की कोई जरूरत नहीं है।"

"अच्छा, जैसा आप कहें। मैं जा रहा हूं। अगर मैं जेल चला गया, तो पुल्ली और बच्चे...।"

"अरे तू जेल गया तो तेरे साथ मैं भी आऊंगा। मगर ऐसा होगा नहीं। पुलिस वालों को सीधे यहां ले आना। इन सबको गिरफ्तार कराओ। इन लोगों की गवाही काफी है, हम लोगों के खिलाफ किये गये मुकदमे को रद्द करने के लिए।"

राजू और पद्दालु ने धर्मराजू, पेंटय्या, मीर और वेंकटेश के हाथ-पैर बांधकर, शेड में डाल दिया और दरवाजा बंद कर दिया। पद्दालु पगडंडी के रास्ते कस्बे चला गया। राजू गाड़ी पकड़ने के लिए जल्दी-जल्दी चलने लगा।

वेंकन्ना और दस पांच आदमियों को देख,पुजारी घबराया। वह उठकर मंदिर की ओर जा रहा था कि तीन-चार जनों ने आकर उसे पकड़ लिया। मंदिर के सामने के ध्वज स्तंभ से उसे बांध दिया। यह शोर सुन,लक्ष्मी ने किवाड़ खोले। वेंकन्ना उस अंधेरे में,पहले तो उसे पहचान न पाया। वह अपने आदमियों के साथ अंदर गया। लक्ष्मी ने माता के चरण जोर से पकड़ लिये। जब वेंकन्ना ने दीये की रोशनी में उसे देखा तो वह आगबबूला हो उठा।

"अरे कुल्टा, रात के समय, तू यहां क्या कर रही है? किसके लिए आयी है?" वह चिल्लाया।

"उस पति के लिए, जिसने मेरे गले में मंगल सूत्र बांधा है।" माता के चरण पकड़कर, लक्ष्मी ने बिना झिझक, साफ-साफ कह दिया। "हमारे विवाह की साक्षी माता ही है।"

"क्या लौंडी, चल घर। अगर तेरी चमड़ी न उधेड़ दूं, तो मैं भी रामय्या चौधरी का बेटा नहीं, उठो।" वेंकन्ना ने जबर्दस्ती उसे खींचकर उठाया।

"मुझे छोड़ दो. मैं नहीं जाऊंगी।" लक्ष्मी गिड़गिड़ायी। पर वेंकन्ना ने उसे न छोड़ा। उसके आदमियों ने सारा मंदिर छान मारा। पर राजू कहीं न था।

"कहां है तेरा वह किराये का पति?" वेंकन्ना ने पूछा। लक्ष्मी ने कोई उत्तर न दिया। वह उसकी ओर इस तरह देख रही थी, जैसे वह उसकी कुछ परवाह ही न करती हो। उसने गिड़गिड़ाना भी बंद कर दिया। वेंकन्ना उसे उठाकर घर की तरफ खींचकर ले जाने लगा।

वह लक्ष्मी को जल्दी-जल्दी खींचकर, घर ले गया और सीढ़ियों वाले कमरे में बंद कर दिया। लक्ष्मी का रोना चीखना और वेंकन्ना का चिल्लाना सुन, सूरालु वहां आयी।

"क्या है यह?" उसने पूछा।

"क्या है? जानती हो तुम्हारी इस लाड़ली ने क्या किया है? रात जाकर, उस लुच्चे से इसने गले में मंगल सूत्र बंधवाया है — माता के मंदिर में। वह वहां आ भी न सकेगा, मैं उसे भी वहीं पहुंचा कर आता हूं, जहां रंगा गया है।" यह कहता वेंकन्ना वहां से चला गया।

सूरालु पगला-सी गयी। क्रोध, भय, दुख सभी एक साथ उमड़ आये।

"क्या आफत ढायी है, क्या किया है तूने?" वह यह कहती नीचे गिर पड़ी।

"सास जी।" बहू ने, जो तब तक किवाड़ की आड़ में खड़ी थी, वहां आकर उसे उठाया। लक्ष्मी ने खिड़की के किवाड़ खोले।

"मां, मां दरवाजा खोलो। मुझे वहां जाना है। न मालूम भाई उनका क्या बिगाड़े। मां, अगर पिताजी को कुछ हो गया तो तू क्या सोचेगी। मैं भी, तेरी तरह स्त्री ही हूं। जब मर्द की जान पर आ पड़ी हो, तो स्त्री की क्या हालत होती है, क्या तू नहीं जानती? मां, दरवाजा खोलो! अगर तुमने दरवाजा न खोला, तो जान लेना कि तुमने ही मेरी जान ले ली है। मां, मां...!"

सूरालु यह सब न देख सकी। लड़की को समझाने-बुझाने की सूझ-बूझ भी उसमें न थी। वह नहीं जानती थी कि आखिर हुआ क्या था? यह सब शोर-शराबा किस लिए है? रंगा की मौत के बाद, वह पगला-सी गयी थी और वह अब रोती-रोती वहां बैठी थी।

"भाभी, तुम तो किवाड़ खोलो भाभी, भाभी।" लक्ष्मी जोर जोर से रोने लगी। भले ही

वेंकन्ना से बहुत डरती हो, पर दोनों ही लक्ष्मी को चाहते थे। उसका दिल पिघल उठा। हो, जो होना है, यह सोचकर उसने किवाड़ खोल दिये।

लक्ष्मी इस तरह भागी, जैसे पिंजरे में से किसी पक्षी को छोड़ दिया गया हो।

जब गाड़ी तालाब के किनारे आ रही थी, तो कुछ-कुछ सवेरा हो रहा था। राजू ने गंगप्पा से कहा, "रे, पुल्ली, रामी और बुडतडु को, उनके घर छोड़ आ।" मल्ली गाड़ी पर से उतरी। गाड़ी चली। राजू ने मंदिर के प्रांगण का दरवाजा खोला तो चकरा-सा गया। पुजारी ध्वज स्तम्भ से बंधा हुआ था। उसके मुख से कपड़े ठूंसे हुए थे। मंदिर का अंदर का कमरा खुला था। मल्ली दौड़ी-दौड़ी उसके पास गयी और बंधन खोल दिये। राजू ने मंदिर के प्रांगण में पैर रखा। तभी मल्ली ने पुजारी के मुख से कपड़े निकाले।

"बाबू, मत आओ।" इस बीच दस आदमी, राजू पर कूदे। राजू ने एक झटके में सब को दूर कर दिया। मल्ली ने मंदिर की चारदीवारी की ओर देखा। वेंकन्ना, हाथ में एक बड़ा पत्थर लेकर खड़ा था और वह उस पत्थर को, उस पर फेंकने ही वाला था। वह हवा की तरह राजू की ओर भागी और उसे एक तरफ हटा दिया। पत्थर, मल्ली के सिर पर जा लगा। मल्ली ढेर हो गयी। वेंकन्ना तालाब की ओर कूद पड़ा। मल्ली ने नीचे गिरते ही वेंकन्ना के और साथी भी वहां से नौ दो ग्यारह हो गये।

लक्ष्मी तूफान की तरह चली आयी। दरवाजे के पास ही, उसने मल्ली को खून में लथपथ पड़ा पाया।

"मल्ली, मल्ली।" कहती, वह उस पर जा गिरी। राजू तुरंत न जान सका कि आखिर हुआ क्या था। वह नीचे बैठ गया और मल्ली के सिर को अपनी गोद में रख लिया। पुजारी, माता की मूर्ति के पास रखे जलकलश ले आया और जल से उसके घाव धोने लगा। राजू बहुत दुखी था, बेबस था।

"मल्ली, मल्ली।" कहता, वह रोने लगा।

वेंकन्ना की अक्ल जाती रही। जो गाड़ी गयी थी, वह वापस आ गयी थी। उसमें से मल्ली उतरी। रामी और पुल्ली और बुडतडु, उसी में रह गये थे। धर्मराजू और बाकी सब क्या हुए? क्या उसकी चाल बेकार चली गयी है? क्या पद्दालु छूट गया है? यानी हमारी कहानी खत्म हो गयी है? उसी गुस्से में वह एक पत्थर लेकर, चारदीवारी पर खड़ा हो गया था और वह पत्थर अब मल्ली को लगा था।

शहर से कार आ रही थी। पिता को यह सब मालूम हो जायेगा, इस डर से, अभी कार तालाब के किनारे पर मुड़ी ही थी कि वह वहां से भाग निकला।

कार मंदिर के पास से जा रही थी कि पुजारी सड़क को रोक कर खड़ा हो गया। रामय्या ने यह देखा। पहले तो वह घबराया, फिर अपने को संभालकर पिछवाड़े के दरवाजे के पास गया। रामय्या ने आश्चर्य से उसकी ओर देखा।

"रामय्या बाबू, अब आप ही को हमारी रक्षा करनी होगी। बेटी की हालत अब तब की है। अगर कार में उसे शहर के हस्पताल में न पहुंचाया गया, तो लड़की हमारी नहीं रहेगी।"

उसने कहा।

"कौन ?" रामय्या ने पूछा।

"मल्लम्मा ?"

"मल्ली ?"

रामय्या कार से उतरा। सब लोग मंदिर के दरवाजे के पास आ जमा हुए। रामय्या चौधरी को देखकर उन्होंने रास्ता दिया। रामय्या चौधरी अंदर गया।

राजू की गोदी में मल्ली थी और मल्ली के ऊपर पड़ी-पड़ी उसकी लड़की रो रही थी। रामय्या को कुछ समझ न आया। वह पास गया। राजू ने उसको देखकर कहा, "मामा, मल्ली हम लोगों की शत्रुता पर बलि हो गयी है।"

राजू ने जैसे ही उसे "मामा" कहकर पुकारा उसके मन में कहीं ठेस लगी। लक्ष्मी उठकर बैठ गयी। उसने पिता की ओर देखा, उसे इसका भी डर न था कि पिता को अगर सब कुछ मालूम हो गया तो वह क्या करेगा ?

"हम सब ने मिलकर, देवी-सी लड़की को मार दिया है। आपने, मैंने, भाई ने, सबने।" रोती हिचकती, लक्ष्मी ने कहा।

रामय्या धीमे धीमे आया और उसने मल्ली के मुंह को देखा। वह शांति से सोती लग रही थी। पुजारी ने उसके मुंह पर पानी छिड़का।

"अरे, देख क्या रहे हो ? बेटी को कार पर चढ़ाओ।" उसकी आवाज में कंपकंपी थी। मल्ली जरा हिली, उसने आंखें खोली, "नहीं, नहीं। ये प्राण शहर तक नहीं रहेंगे।" उसने घुटी घुटी आवाज में कहा।

"मल्ली।" राजू ने कहा।

"हम तुम्हें मरने न देंगे, हम तुम्हें जिंदा रखेंगे।" लक्ष्मी ने कहा।

धीमे से मुस्कराती, मल्ली ने सिर हिलाया।

"बहन, तो मैं क्या तुम सब को छोड़कर जाना चाहती हूं ? भाई, मुझे माता के पास ले चलो।" मल्ली ने धीमे से कहा।

राजू, उसे दोनों ने हाथों से उठाकर, माता की मूर्ति के पास ले गया।

भीड़ में से किसी ने कहा, "मंदिर अपवित्र हो जायेगा।"

"अपवित्र ? माता के लिए क्या अपवित्रता है, अपवित्र होते हैं मनुष्य।" पुजारी ने कहा। रामय्या भी अंदर चला आया।

नीचे लिटाते ही मल्ली कराही — "अम्बा !" इस कराह में दर्द था।

"क्यों, क्या बात है मल्ली ?" लक्ष्मी ने पूछा।

"बहन, दिल पर कोई भार-सा मालूम होता है। जरा जाकेट की गांठ तो खोल दो।" मल्ली ने कहा। लक्ष्मी ने आंचल के अंदर से गांठ खोली, गांठ खुलते ही एक पुराना लिफाफा नीचे गिरा।

"यह क्या है ?" लक्ष्मी ने पूछा। मल्ली ने उसे झट ले लिया। ये वे ही पत्र थे, जिन्हें

मल्ली राजू के नाम लिखा करती थी। यह सोच कि उसका रहस्य सबको मालूम हो गया था, वह कुछ लजायी, सकुचायी। फिर शर्म से, मुस्कराहट पैदा हुई। पत्रों को हाथ में पकड़कर उसने कहा, "अंतिम पत्र आज लिखना था। अब नहीं लिख सकती, ये सब मैंने भाई के नाम लिखे थे, ऊंटपटांग पत्र।"

राजू ने, कांपते हाथों से उन्हें ले लिया। उसके हाथ में पहले वह पत्र आया, जिसे मल्ली ने उस दिन लिखा था जब गौ बियायी थी।

"मल्ली, मल्ली।" कहते-कहते उसने उन पत्रों को अपने आंसुओं से गीला कर दिया।

गंगप्पा भागा-भागा आया। मल्ली की स्थिति देख, उसने अपना सिर खंभे से मारने की कोशिश की। पांच-दस के रोकने पर भी, वह न माना। मल्ली ने उसे धीमे से बुलाया।

"अगर तुमने इस तरह की हरकतें कीं, तो मेरी बात कैसे सुनोगे ? बिना रोये बात सुनो। आज से लक्ष्मी बहन ही तुम्हारी बहन है। भैय्या, रोओ मत, अगर तुम रोये, तो मैं कैसे शांति के साथ मर सकूंगी ?"

"अरे, तुम्हें तो सुख-शांति से जीना चाहिए था। अब तुम शांति से हम सब को छोड़कर जाना चाहती हो !" गंगप्पा ने कांपती हुई आवाज में कहा। मल्ली ने मानो उत्तर में, उसका सिर सहलाया। फि[illegible]ने सब की ओर देखा। रामय्या कुछ दूर, पीछे खड़ा था।

"चा[illegible]ल्ली ने उसे बुलाया, रामय्या पास आया। उसने उसका हाथ अपने हाथ में लिया।

"चाचा कल रात माता के सामने, भाई की और लक्ष्मी बहन की शादी हो गयी है। माता की कसम, तुम लक्ष्मी बहन को कुछ न कहना। वेंकन्ना भाई, जल्दी में कुछ कर बैठा उसे भी कुछ न कहना। माता का मुंह देखकर, मेरे हाथ में हाथ रखो।"

रामय्या को यह सब बड़ा विचित्र लग रहा था। फिर भी उसने माता की ओर देखकर, उसके हाथ में हाथ रखा। मल्ली ने माता की ओर देखा और उसकी नजर फिर उस तरफ से हटी नहीं।

सुब्बय्या, पुन्नय्या, शेषम्मा आदि सब भागे-भागे आये।

पुजारी ने चुपचाप मल्ली की ओर इशारा किया।

"मल्ली।" कहते कहते सब फूट-से पड़े, बिलखने लगे।

पुजारी ने मन ही मन सोचा, "माता, माता में जा मिली। हमारे बीच माता जन्म लेती रहती है। हम अपने द्वेष और शत्रुता पर उसको बलि कर देते हैं, चूंकि हम बेअक्ल हैं। क्या कभी यह गांव, माता के निवास के अनुकूल बन सकेगा ? माता को पहचानने की बुद्धि कभी क्या लोगों में आयेगी ?"

भारत मुद्रणालय, पंचशील गार्डन, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032 द्वारा मुद्रित